राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 19
सामरी की
ज्वाला
सुपर कमांडो
ध्रुव
एक
आकर्षक स्टीकर
मुफ्त

जीवन के कई रूप होते हैं। मनुष्य, पशु, पेड़-पौधे-

और वे आकृतियां, जिनको हम राक्षस, प्रेत और पिशाचों का नाम देते हैं।

कंकाल...

...त्रिकाल...

...और शाकाल से तुम लोग नहीं बच सकते।

ध्रुव! मुझे बचाओ! मुझे डर लग रहा है।

घबराओ मत, नताशा! मैं तुमको कुछ नहीं होने दूंगा।
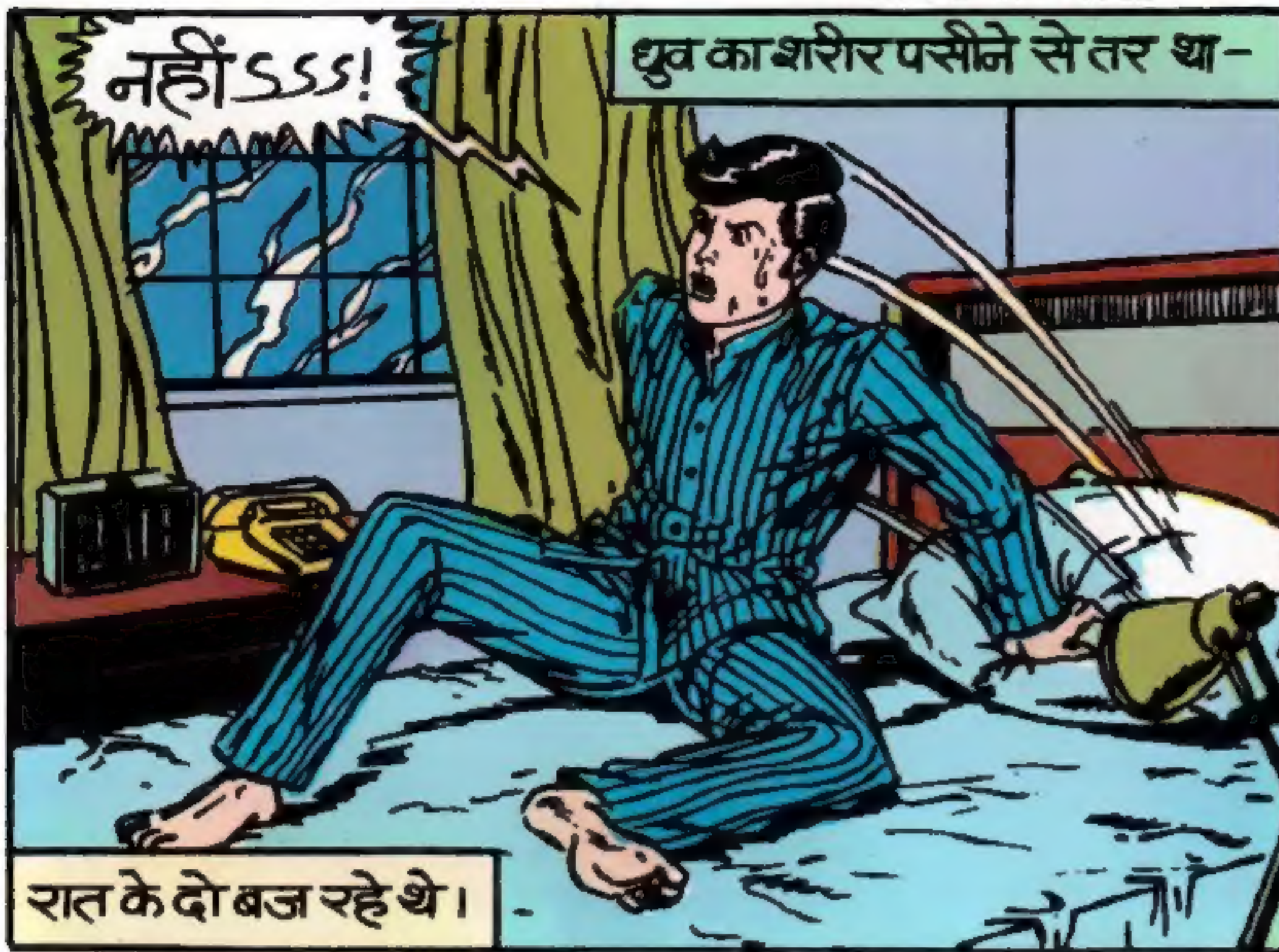
पर इससे तो मैं छूट भी नहीं पा रहा हूं!

ध्रुव की फैली आंखों के सामने त्रिकाल और शाकाल ने नताशा को घेर लिया–
ध्रुव..बचाओ!

मेरे हाथ-पैरों को क्या हो रहा है?
मैं इनको हिला क्यों नहीं पा रहा हूं!

क्या मुझे लकवा मार रहा है?
मेरा दम क्यों घुट रहा है?

आऽऽऽ! आक्!

आक्!

नहींऽऽऽ!
ध्रुव का शरीर पसीने से तर था–
रात के दो बज रहे थे।

ओह!
फिर वही सपना!
लगातार तीसरी बार!
इसका क्या मतलब हो सकता है?
क्या यह सपना मुझे किसी खतरे की सूचना दे रहा है।

नताशा का फ्लैट–
टिर्र टिर्र

हैलो!
नताशा! तुम ठीक तो हो न?
ध्रुव!
हां! पर क्या बात है?
तुमको ऐसा क्यों लगा?
बस, वैसे ही!
गुडनाइट, नताशा!

रात के दो बजे ध्रुव का फोन!
शायद वह मुझसे कुछ कहना चाहता था!
पर बेचारा शर्म के मारे नहीं कह पाया।

हाय! हमारी भारतीय संस्कृति में यही तो एक खराबी है!
हा हा हा! बहुत चाहती है ध्रुव को!
घबरा मत!
तू और ध्रुव साथ-साथ मरेंगे।

अब मैं इनसे प्रार्थना...।

अरे!

धमाकों की आवाजों ने उस स्त्री का ध्यान भंग कर दिया।

तड़ तड़

और ध्रुव का ध्यान भी।

आतंकवादी!

तड़ तड़ तड़

पापा ने मुझे खबर दी थी कि कुछ कट्टर आतंकवादी राजनगर में हंगामा करने के लिए आ चुके हैं।

आतंकवादियों का निशाना बेकुसूर भीड़ थी-
और ध्रुव का निशाना आतंकवादी-

गोलियां दुबारा चलीं-
-पर भीड़ तक नहीं पहुंच सकीं-
टनाक
टक
ठक

अगले ही पल- आतंकवादियों के हाथों से ए. के. 47 राइफलें अलग हो गईं-
ठक ठड़ाक

सुपर कमांडो ध्रुव!...
भाग यहां से।
भागता हूं!
पर भागते भागते...

इसको स्वर्गीय सुपर कमांडो ध्रुव तो बनाता चलूं।
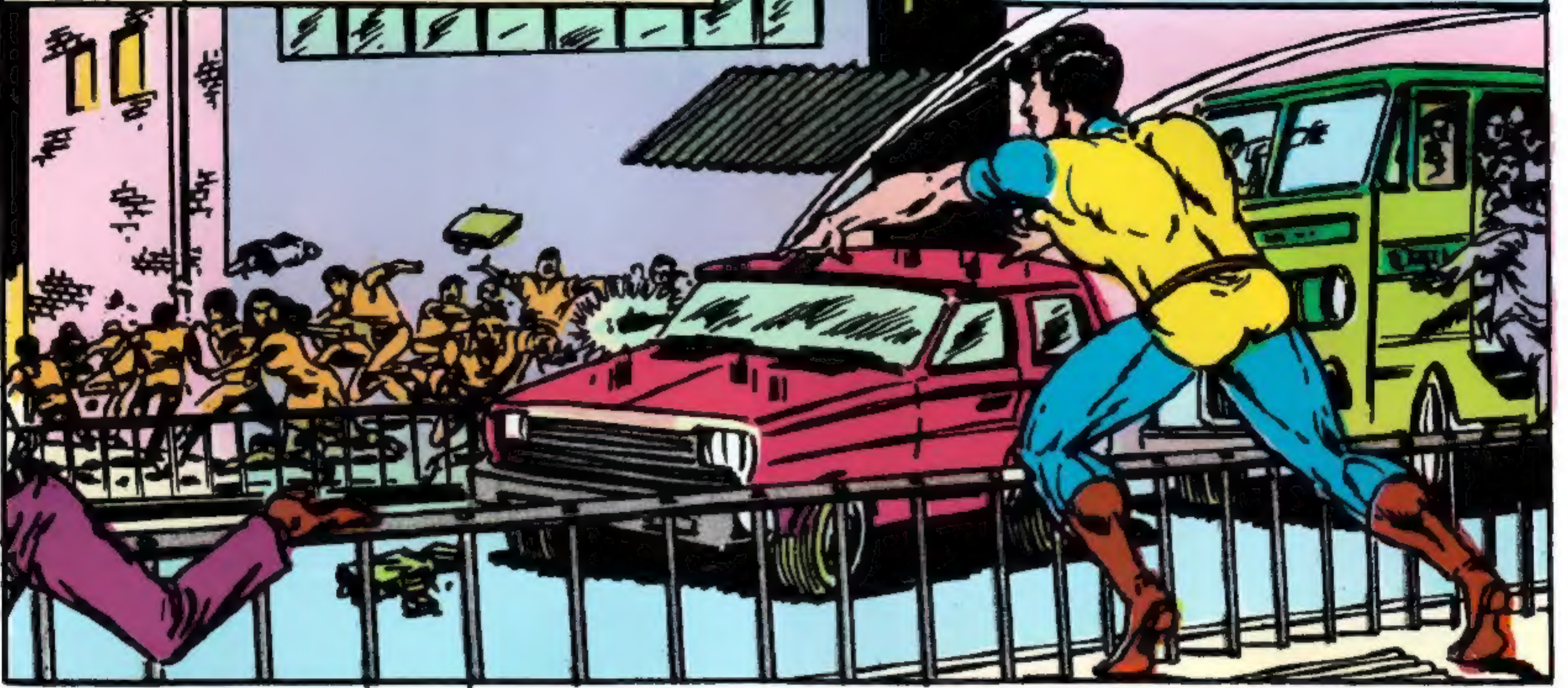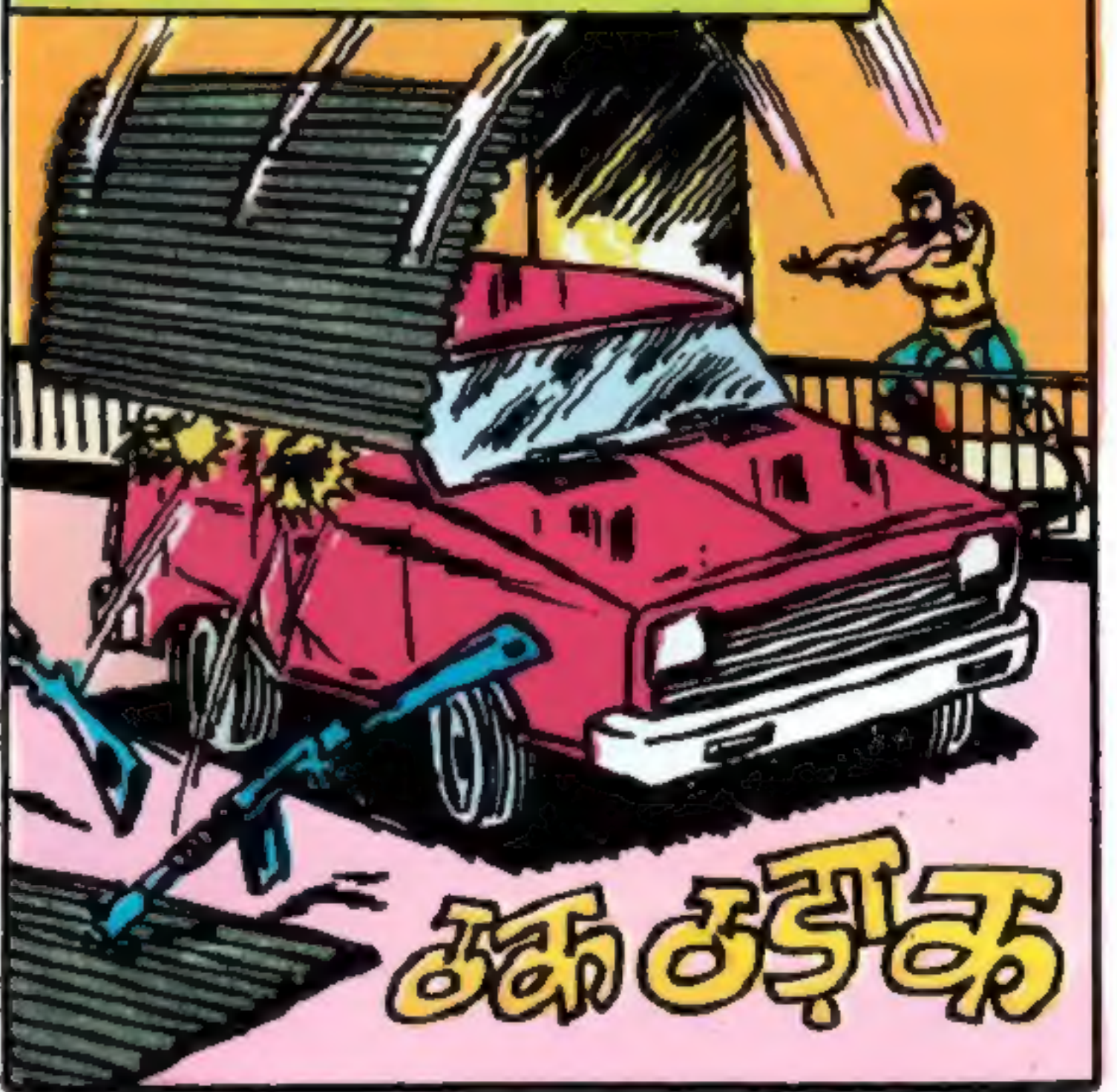
ध्रुव को आतंकवादियों का इरादा भाँपने में थोड़ी देर हो गई-
गाड़ी उसके शरीर से कुछ ही फुट की दूरी पर थी-

कि तभी...
स्सांय
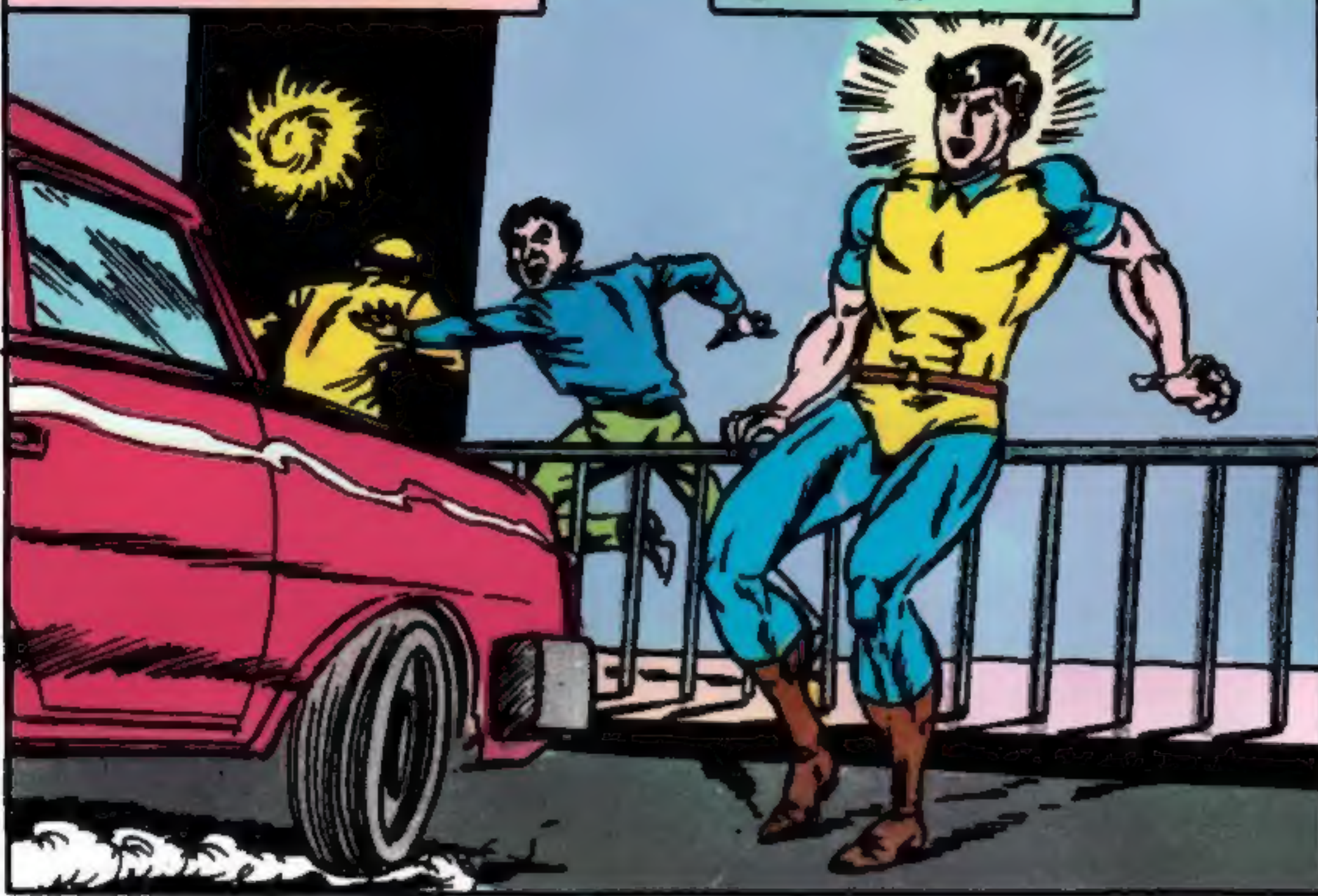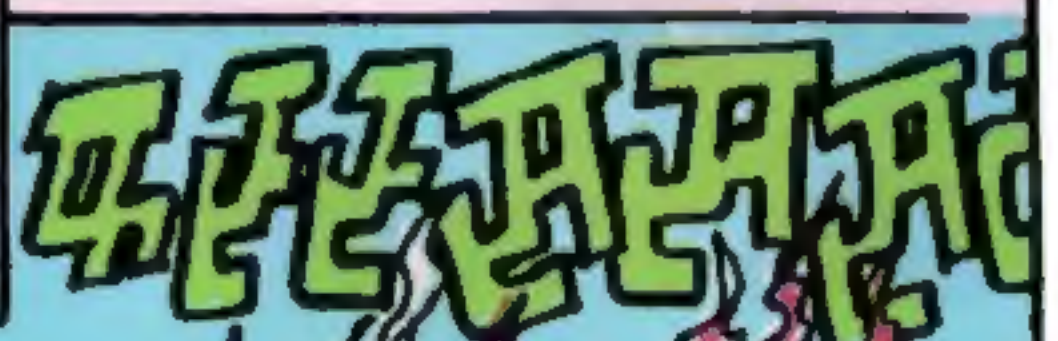
...आश्चर्य हो गया-
पलक झपकते गाड़ी के टायर गल कर सड़क पर चिपक गए-
और गाड़ी पिघले कोलतार में धंस गई-

एक लपट और चमकी-
और कार आग के शोलों में घिर गई-

अब ध्रुव अपने को बचाने के सिवाय, और कुछ नहीं कर सकता था-
धड़ाम

आग की लपट उस गली से आई है।
पर ऐसी प्रलयंकारी लपट कौन फेंक सकता है?

गली में मुड़ते ही, वह "कौन" ध्रुव के सामने थी-
और ध्रुव उसको जानता था।
नताशा!

महापराक्रमी कुमार ध्रुव को राजकुमारी सबरीना प्रणाम करती है।
नहीं, यह नताशा नहीं है।
इसकी आंखें लाल हैं, जबकि नताशा की आंखें नीली हैं।
वैसे बाकी शक्ल हूबहू मिलती है।
तुम कौन हो, सबरीना? यह अद्भुत शक्ति तुम्हारे पास कैसे आई!

हम लोगों को यह शक्ति "सामरी की ज्वाला" से प्राप्त होती है।
पर इस वक्त हम लोगों पर भयंकर संकट आया हुआ है!
जिससे हम लोगों को सिर्फ आप ही छुटकारा दिला सकते हैं।
मैं?
पर कैसे?

मैं बताती हूं।
सबरीना की आंखों से एक ठंडी लपट ने निकलकर ध्रुव के सिर को घेर लिया...
...और ध्रुव के दिमाग में एक दृश्य उभरने लगा-

मेरे दिमाग में एक ज्वालामुखी की तस्वीर उभर रही है।

पर..पर यह तो ज्वालामुखी है जो मुझे सपने में लगातार तीन बार दिख चुका है।
दृश्य बदलने लगा-

अब मुझे भीषण ज्वाला दिख रही है, जैसे...
अरे! यह दृश्य गायब कैसे हो रहा है?
दृश्य गायब इसलिए हो रहा था, क्योंकि सबरीना का ध्यान किसी और चीज ने खींच लिया था-
और अगले ही पल एक खतरनाक आकृति घटना स्थल पर प्रकट हुई-
कालूगा!
पर इसका दिमाग तो उसी दुष्ट के कब्जे में था!
यह जरूर मुझ पर हमला करने आया है!
ताकि मैं ध्रुव को...
तपते भाले की पैनी नोक सबरीना के सीने की तरफ लपकी।
ठड़ाक
पर ध्रुव के लिए एहसान उतारने का वक्त आ गया था।

सबरीना के सीने की तरफ बढ़ता भाला, कंधे को छेदता हुआ निकल गया।
खचाक

अब ध्रुव उस प्राणी का पहला शिकार बन गया।

यह कालूगा तो पुराने युग के सैनिक की तरह लग रहा है।
पर इसके पास भी सबरीना जैसी ही शक्तियां हैं।
यानि यह भी उसी जगह से आया है, जहां से सबरीना आई है।
शायद सबरीना इसी संकट का जिक्र कर रही थी।

आग की तेज लपट, ध्रुव को लगभग झुलसाती हुई निकली।
ओह! इसने तो जीते जी मेरी चिता बनाने की ठान ली है।

अगर मैं किसी तरह से इसको बेहोश कर सकूं...

...तो बात... अरे!
पत्थर, कालूगा के शरीर तक पहुंचने से पहले ही मोम की तरह गल गया।

और एक ज्वाला ने ध्रुव को जमीन पर गिरने के लिए मजबूर कर दिया।
यह भाला।
यह कालुगा पर जरूर असर करेगा।
पर क्या मैं इसको अपने हाथों से पकड़ सकता हूं?
नहीं। यह खतरा मोल लेना ठीक नहीं है।
अगर मैं ठीक सोच रहा हूं, तो सबरिना की पोशाक का यह कपड़ा मुझे झुलसने से बचा सकता है।
और मैं इसके भाले का स्वाद इसी को चखा सकता हूं।
निशाना सटीक था।
सवार घोड़े से नीचे आ गिरा।
लेकिन इस हमले ने कालुगा को और पागल कर दिया।
आऊ!
अब तो मैं फिर से भाले तक पहुंच भी नहीं सकता।

और जो मेरी मदद कर सकती है, वह बेहोश पड़ी है।
कड़ाक
क्या अब मुझे..?
अरे वाह!
मेरी मदद करने वाला तो मेरे सामने खड़ा है।
पर क्या यह मेरी बात समझेगा?
हिनहिनहिन?
ध्रुव के गले से स्पष्ट हिनहिनाहट निकली।
और शांत खड़ा घोड़ा हरकत में आ गया।
समझ गया!
धड़ाक
कालूगा के पास इस वार का कोई काट नहीं था।
आह!
घोड़े के खुर हथौड़े की तरह उसकी खोपड़ी पर बरस रहे थे।
वह अपने होश खो रहा था।
तड़ाक
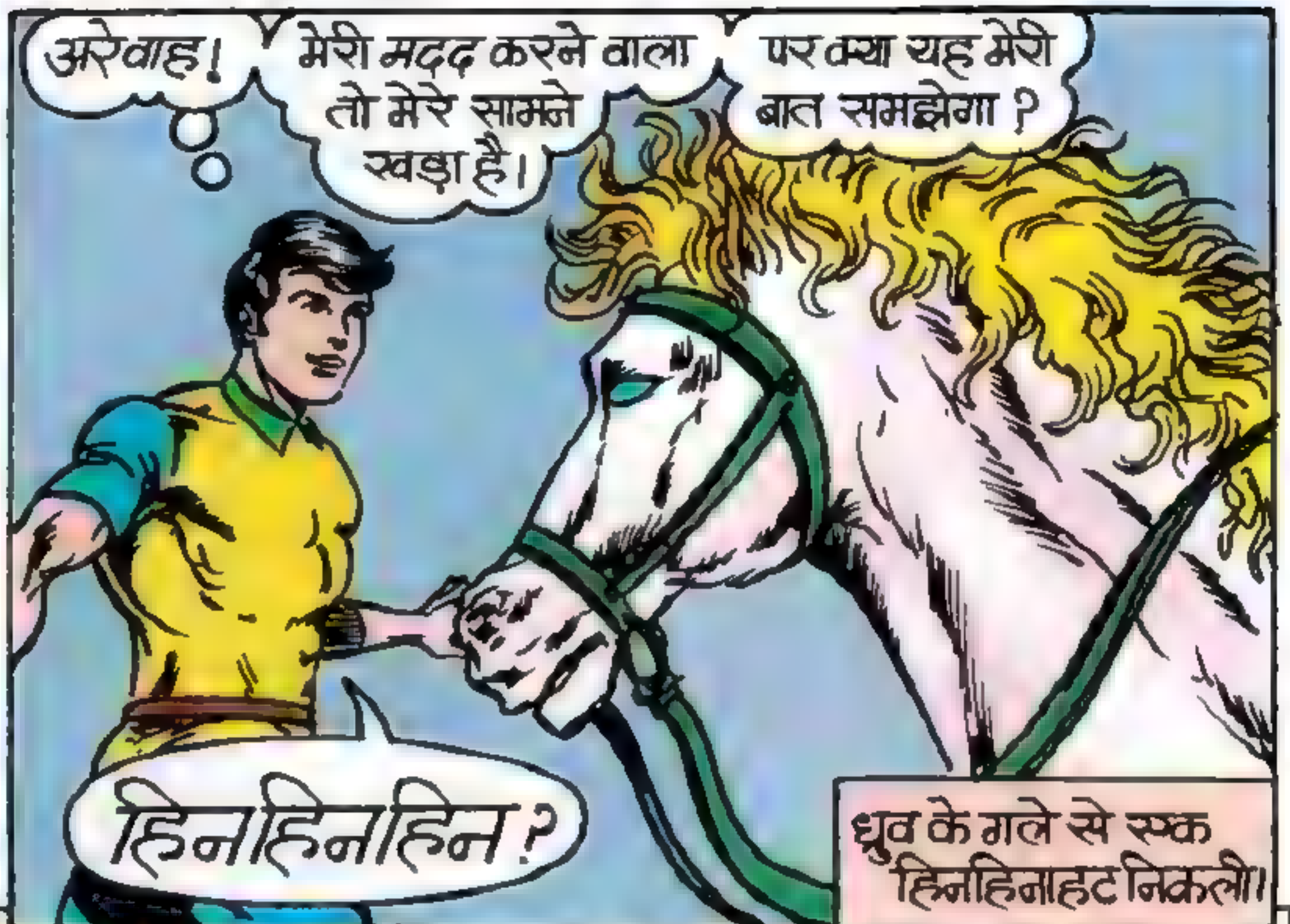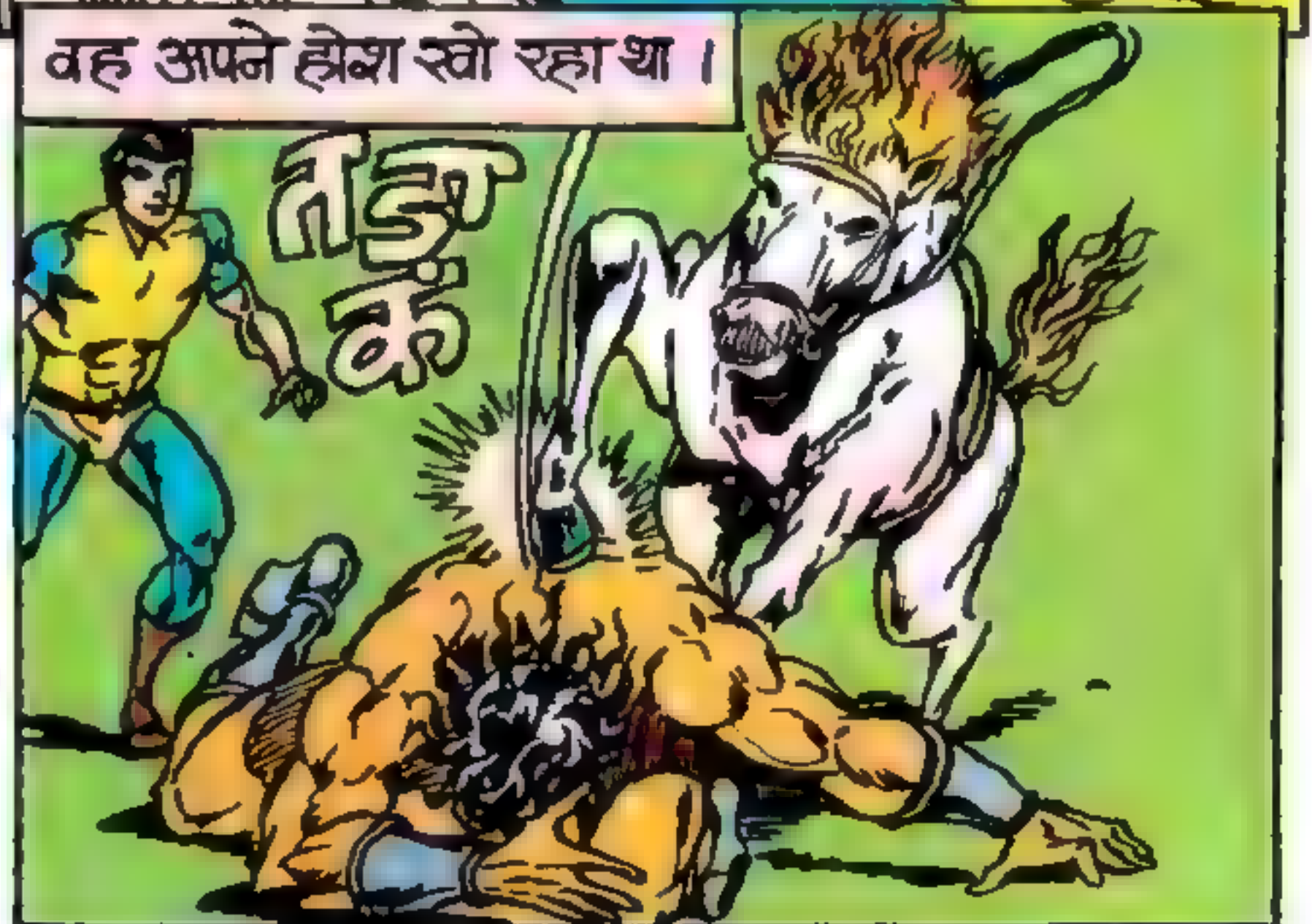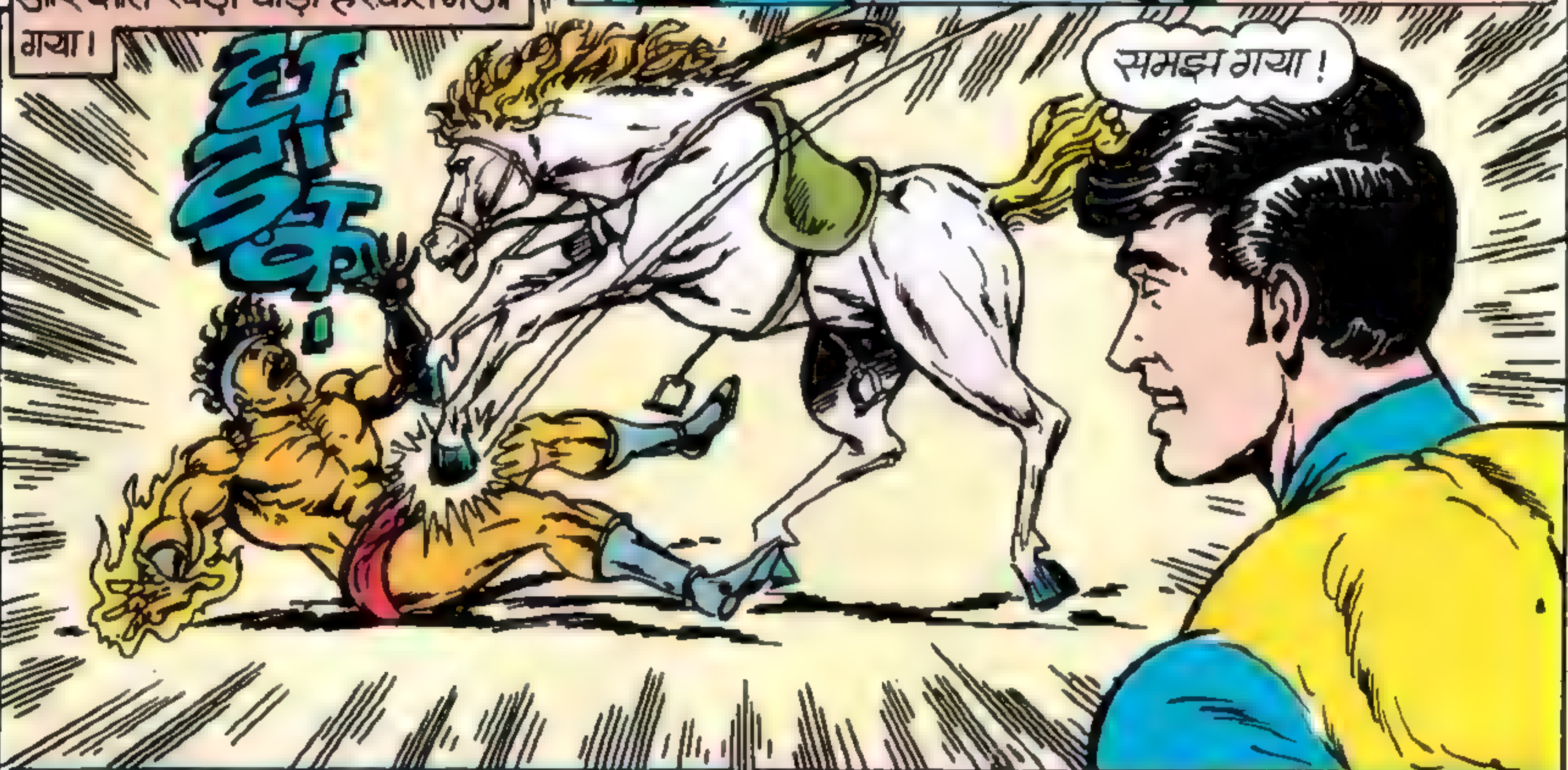
और सबरीना होश में आ रही थी।
वाह! ध्रुव तो सचमुच महापराक्रमी है।
कालगा को इसने कुछ ही पलों में धूल चटा दी।
परंतु अगर यह बेहोश हो गया तो फिर यह इसी स्थान पर रह जाएगा।
और हमारे नियम इसकी अनुमति नहीं देते हैं।
अब मुझे ही इसको लेकर वापस जाना होगा; अब रुकने का समय नहीं है।
क्योंकि अब मुझ पर भी बेहोशी छा रही है।
उम्मीद है कि ध्रुव मेरी बात समझ गए हैं।
सामरी!
हमको अपनी ज्वाला में समेट ले।
और ध्रुव की आश्चर्यचकित आंखों के सामने, दोनों प्राणी घोड़े सहित लपट में गायब हो गए।
आश्चर्य है! अभी वह लड़की मुझसे मदद मांग रही थी।
और फिर अपने ही दुश्मन के साथ गायब हो गई।
पर वह मुझसे मदद क्यों मांग रही थी?
इनकी शक्तियों के सामने तो मेरी शक्तियां धूल भी नहीं हैं।
तुम गलत सोच रहे हो, सुपर कमांडो ध्रुव!
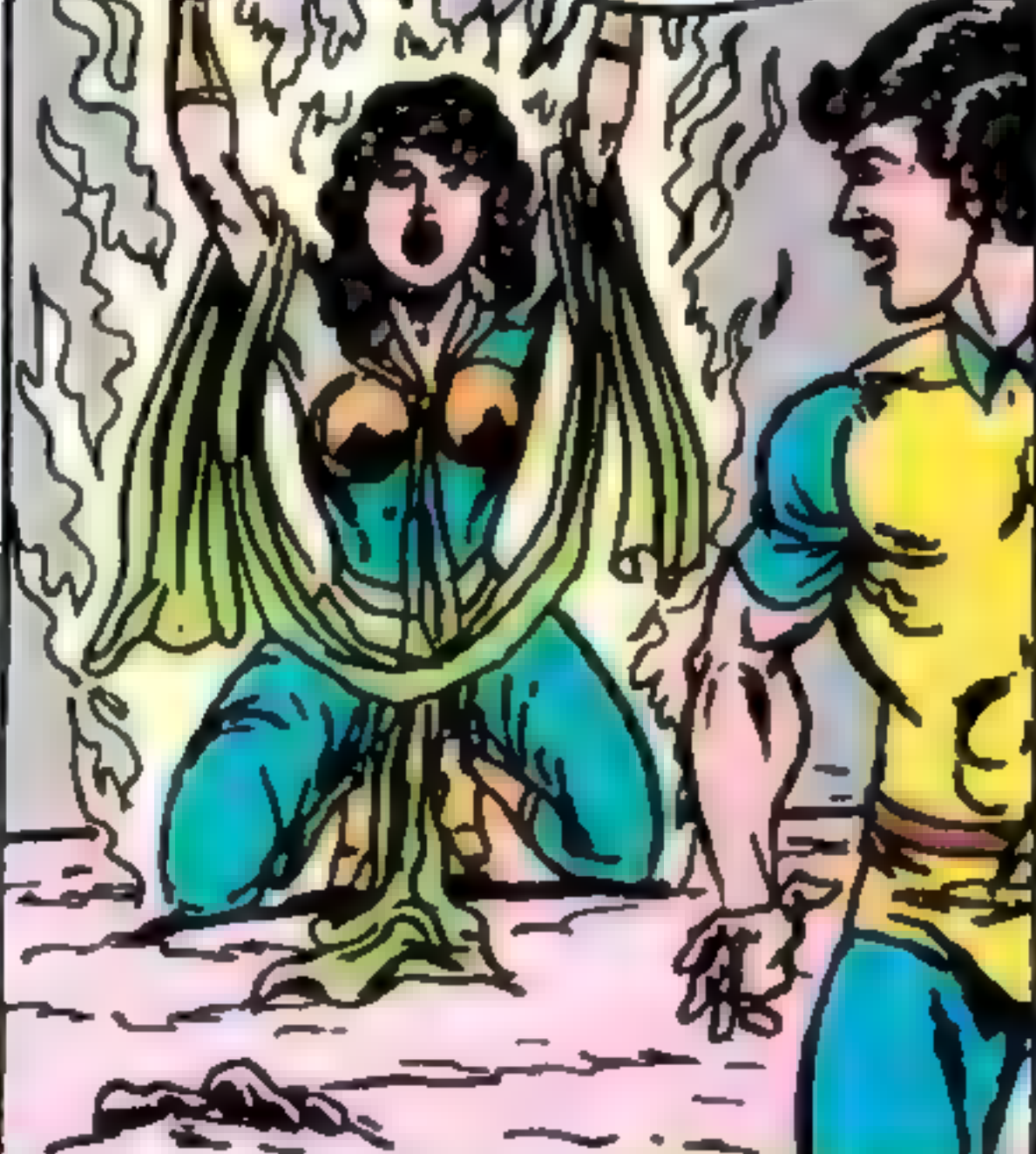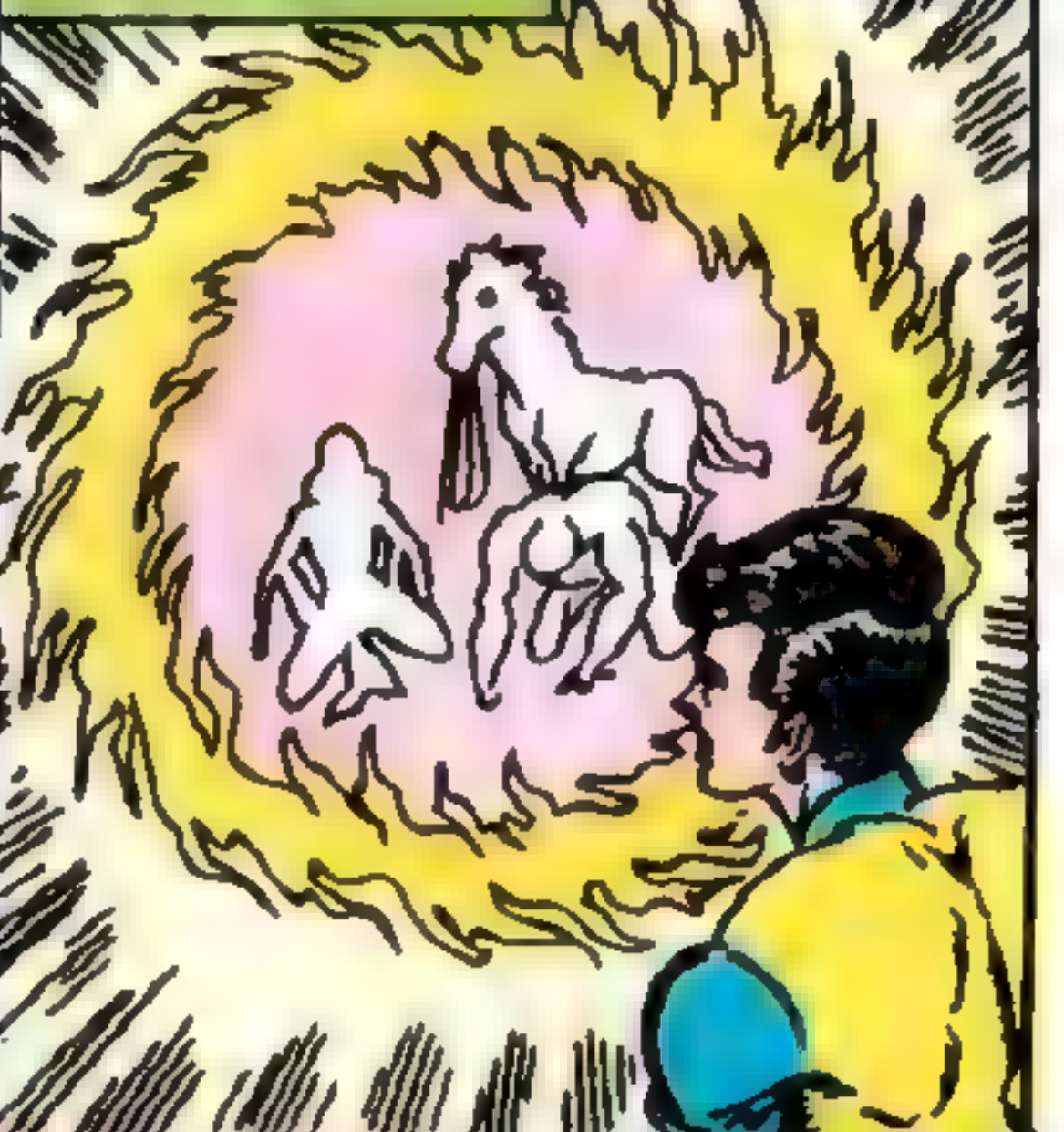
जबकि जवाब सीधा सा था-

हूबहू मेरी शक्ल की लड़की?

हां। उसे तो मैं रोज ही देखती हूं, ध्रुव।

INDIAN TIMES

कहां नताशा?

EDITOR संपादक

शीशे में!

कंघी करते समय।

अच्छा मैं चलता...!
नताशा!
एक मिनट, ध्रुव!
मैं अभी आई।

EDITOR

बैडलक, ध्रुव!
अब तो डिनर एकदम कैंसिल।
कल मुझको दक्षिणी प्रशांत महासागर की सैर पर जाना है।
क्यों?
कोई खास बात है?

एक वीरान द्वीप के ज्वालामुखी से धुआं निकल रहा है।
गिनीस बुक के अनुसार यह संसार का सबसे बड़ा ज्वालामुखी है।
वैसे तो ऐसे 'एसाइनमेंट' पर कोई और जाता है।...

पर इस बार न जाने क्यों मेरा एडीटर मुझे...।
सुन रहे हो या नहीं?
ज्वालामुखी?
फिर ज्वालामुखी। लगता है कि सपना सच होने जा रहा है।

मैं नताशा को अकेले नहीं जाने दे सकता।
सुनो, नताशा, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।
शौक से चलो!
पर क्यों?
ऐसे मामूली खतरों से तो मैं रोज ही निपटती रहती हूं।

बहस नहीं। जो कहता हूं, सुनो। और मानो।
ओ॰ के॰ बॉस।
कल सुबह पांच बजे चलना है।
मैं आ जाऊंगा।
और किसी गुप्त स्थान पर-
यह तो बुरी तरह घायल हो गई हैं।
खून बहुत बह गया है।
इनका जल्दी होश में आ पाना मुश्किल है।
यह आप कह रहे हैं, धन्वंतरी?☆
हां!
पर इनके बगैर तो हम शासक हीन हो जाएंगे।
सिर्फ वही राजदंड उठाकर सामरी को हुक्म दे सकता है, जिसकी रगों में राजसी खून हो!
सामरी!
महायोद्धा सामरी।
जिसके हाथ में शक्ति थी- अमर ज्वाला की!
सामरी की ज्वाला की!
देवता सब ठीक करेंगे!
अभी तो हमारी सारी आशाएं सामरी पर टिकी हैं!
सिर्फ वही उस दुष्ट के षड्यंत्र को विफल कर सकता है।
पर इस वक्त सामरी है कहां?

☆ 'धन्वतरी' यानि वैद्य

अब तू मेरा रास्ता रोकेगा, गर्जक ?

यानि ज्वालोक के सर्वश्रेष्ठ योद्धा के दिमाग को भी उस दुष्ट ने वश में कर लिया है?

यही समझ, सामरी!

अब ज्वाला पर मुझे अधिकार दे दे।

तो गर्जक के मुंह से तू बोल रहा है, नर्क के शैतान?

सामरी तेरे मंसूबों को कभी कामयाब नहीं होने देगा।

कुछ भी हो, पर इस वक्त मेरा एक ही ध्येय है।
गर्जक को बेहोश करने का।
क्योंकि उसके बाद...
आह!
बगैर ज्वाला के गर्जक को शिकस्त देना आसान नहीं था।
एक तरफ अगर सामरी के पास युद्धकला का वर्षों का अनुभव था-
तड़ाक
धाड़
तो दूसरी तरफ गर्जक के पास जवानी की शक्ति का जोश था।
और इस वक्त उसके दिमाग में जो पागलपन सवार था-
उसने उसकी ताकत को कई गुना बढ़ा दिया था।
भड़ाम
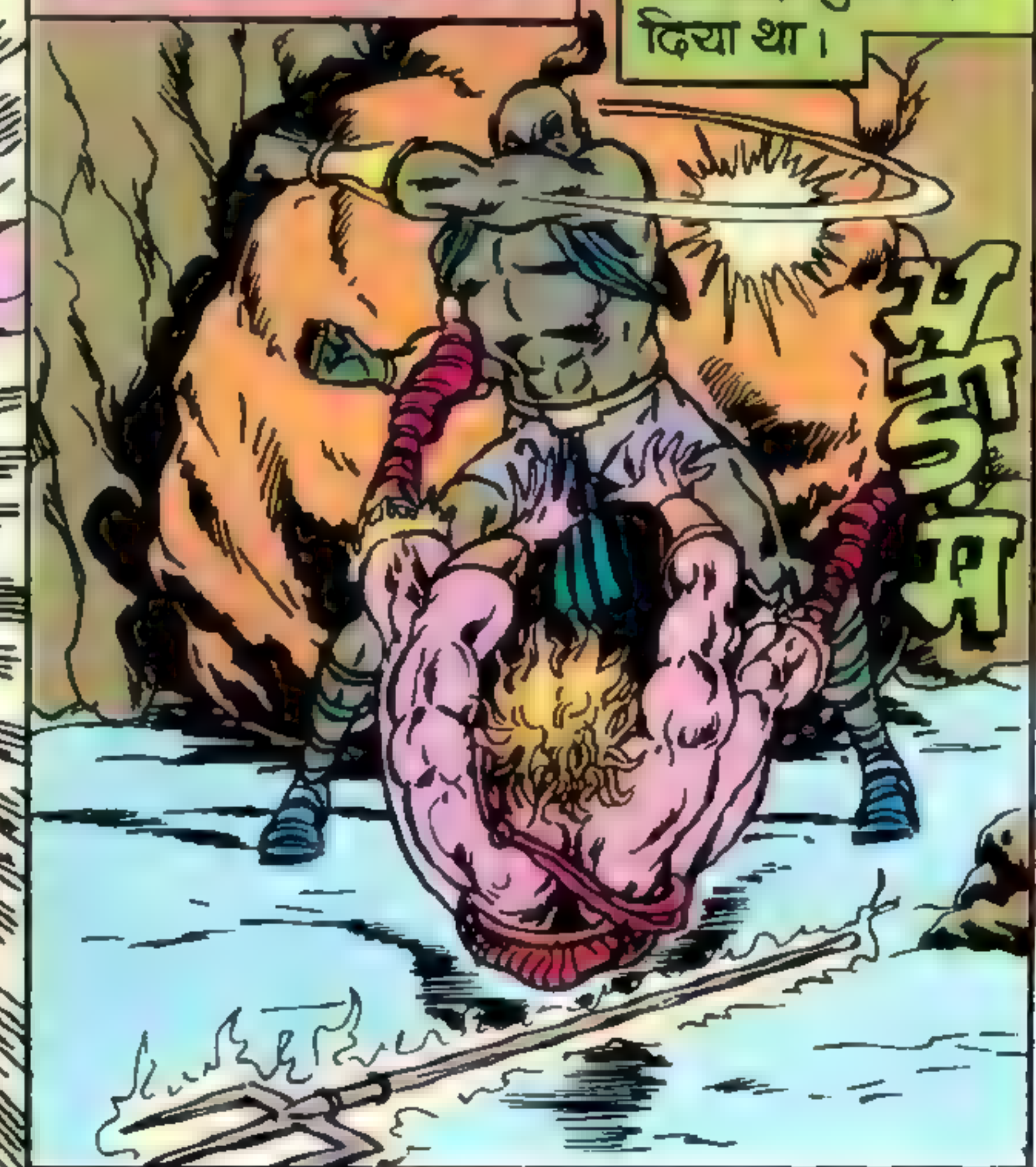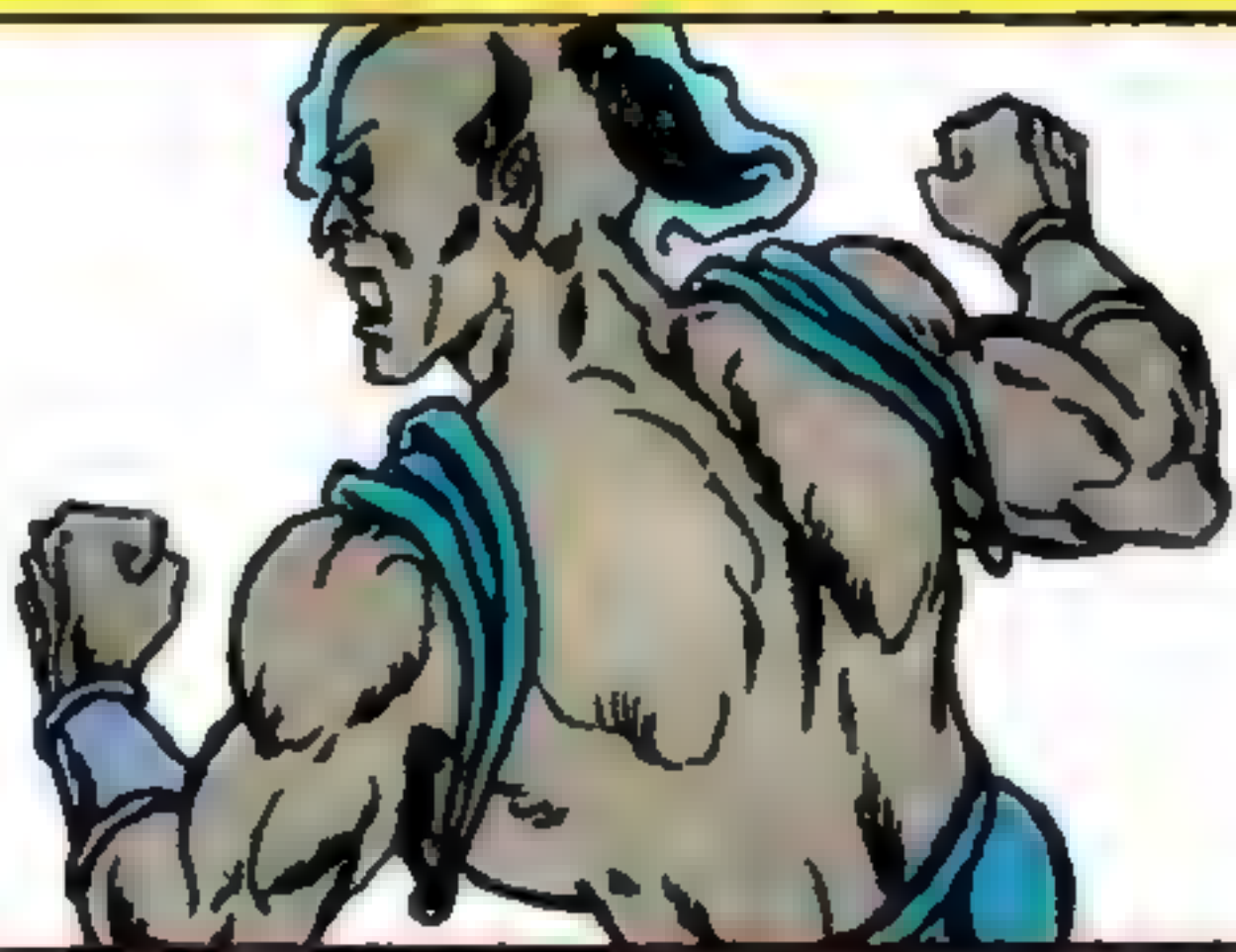
अब मामला आर-पार वाला था।
और सामरी के पास, ज्वाला का प्रयोग करने के सिवाय
-और कोई चारा नहीं था।
पर गर्जक के दिमाग पर सवार शैतानी ताकत, ज्वाला की गति से कहीं अधिक तेज थी।
स्एएएएएए
एक तेज कड़कड़ाहट के साथ विशालकाय चट्टान, टुकड़ों में बिखर गई।
कड़ड़ड़ड़ड़ड़ाम
एक गुफा का द्वार खुल गया था।
हाहा हाहा
ही ही ही ही
और शैतानी ताकत का काम हो चुका था।
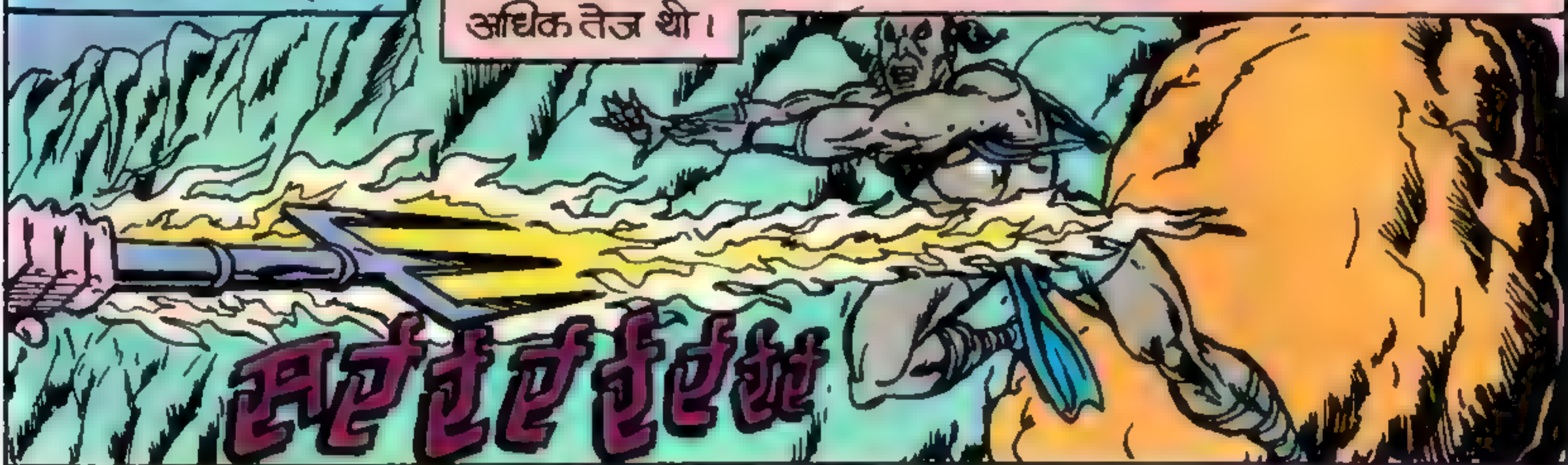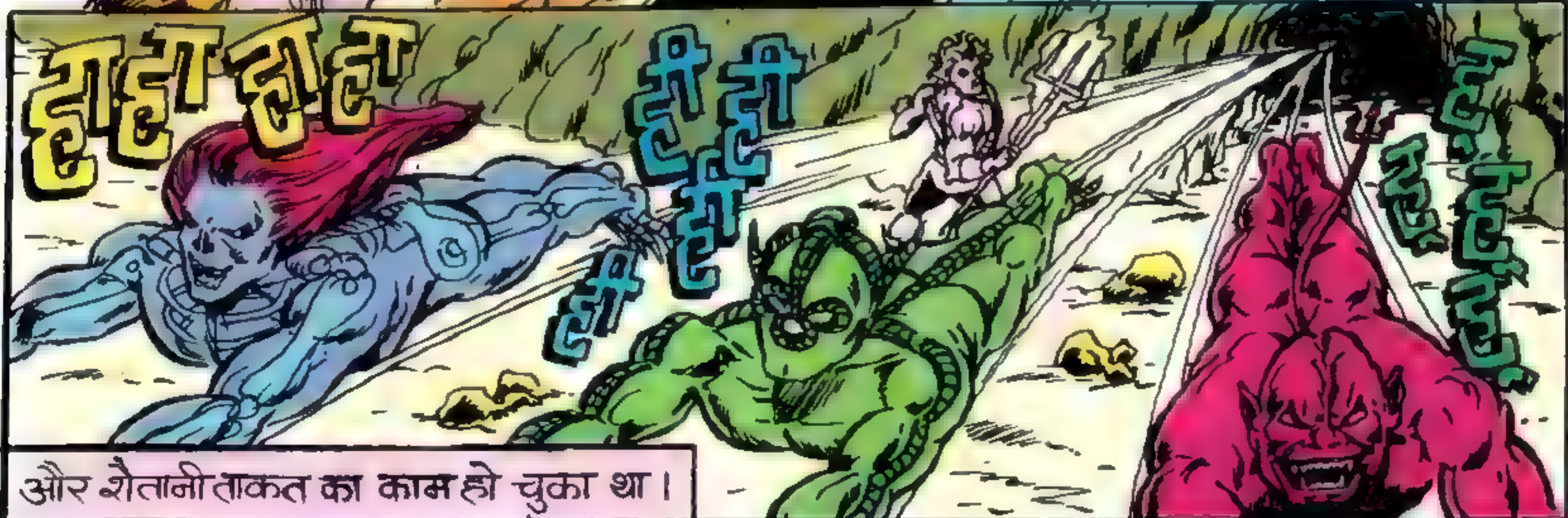
अब उसको गर्जक के शरीर से कोई काम नहीं था।
सामरी को पल भर में सारा खेल समझ में आ गया।
मुझे यहां बुलाने का मकसद, इस चट्टान को हटवा कर अपने शैतानों को आजाद कराना था!
जो इस गुफा में जाने कब से कैद थे।
और इस चट्टान को सिर्फ मेरी ज्वाला ही हटा सकती थी।
पर मैं इनको भागने नहीं दूंगा!
जो गलती मैंने की है, उसे मैं ही सुधारूंगा।
दूसरी तरफ—
ध्रुव और नताशा को लेकर हैलीकॉप्टर, ज्वालामुखी तक पहुंच चुका था।
मैं अपने कैमरे में रील चेक... अरे!
यह क्या है, ध्रुव?
हैलीकॉप्टर के सामने एक धुंध का टुकड़ा तैर रहा था।
जो धीरे-धीरे एक ऐसी आकृति का रूप ले रहा था।
जिसको ध्रुव पहचानता था।
चंडकाल!
तुम स्वर्णनगरी से बचकर निकल आए?
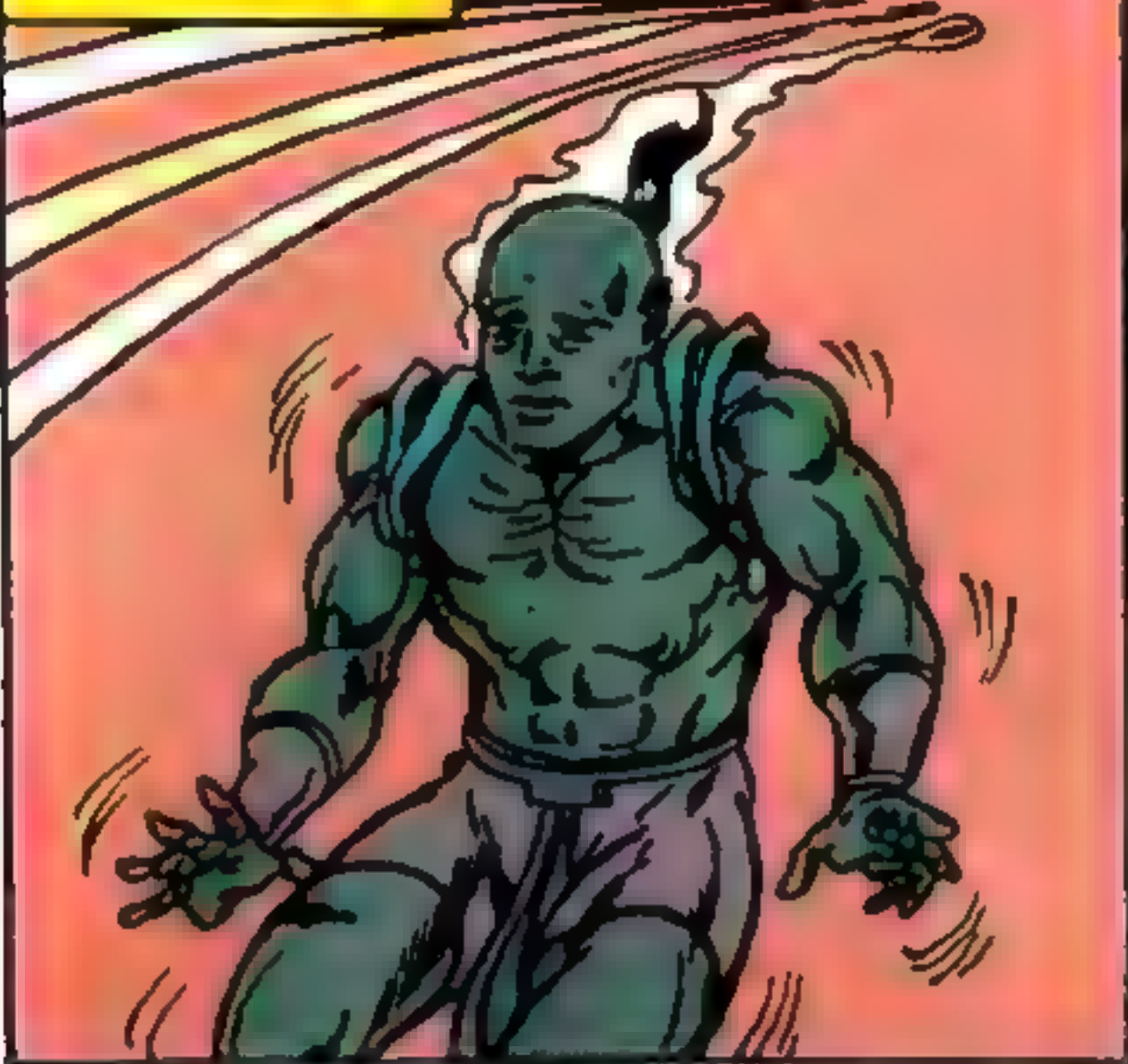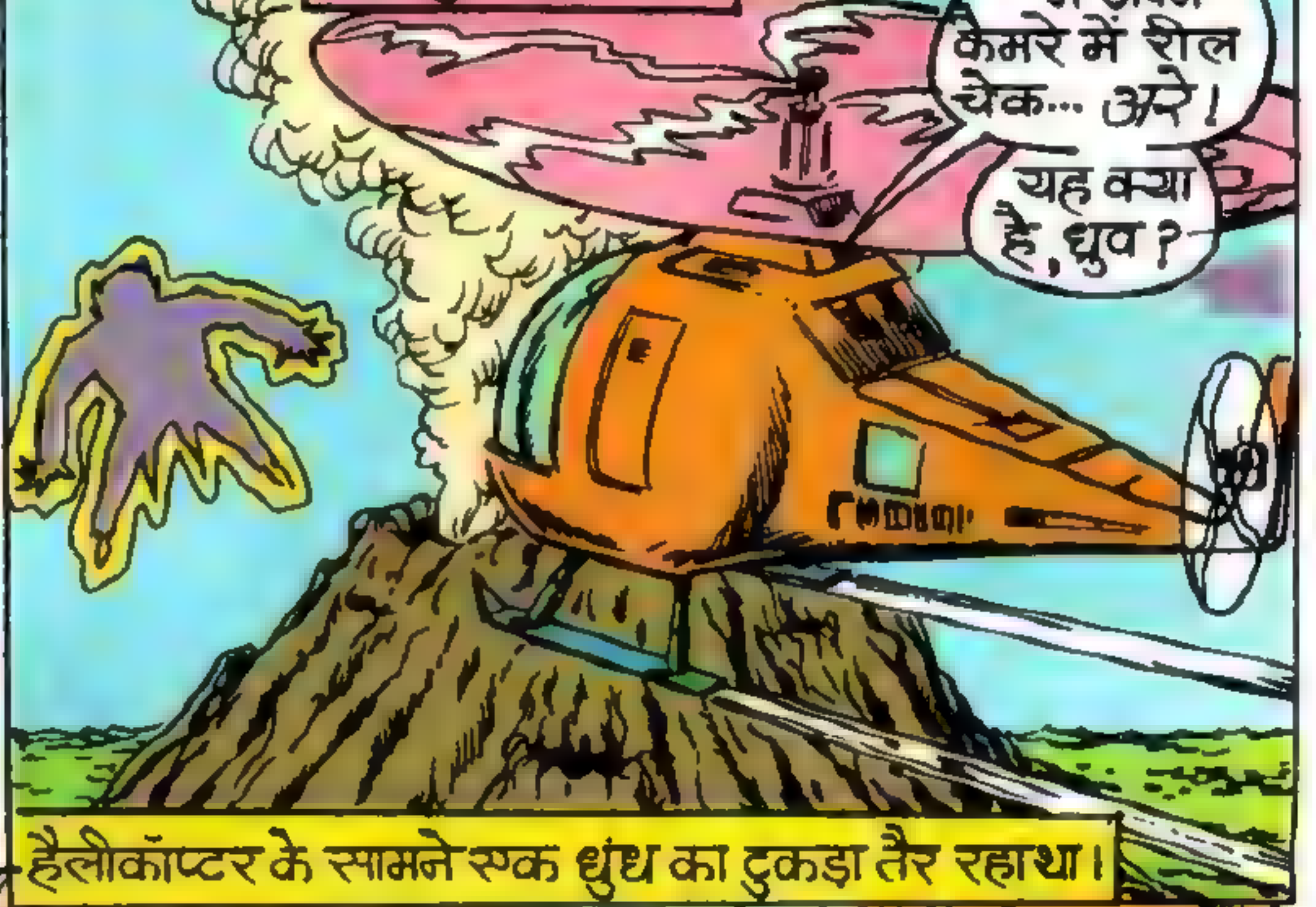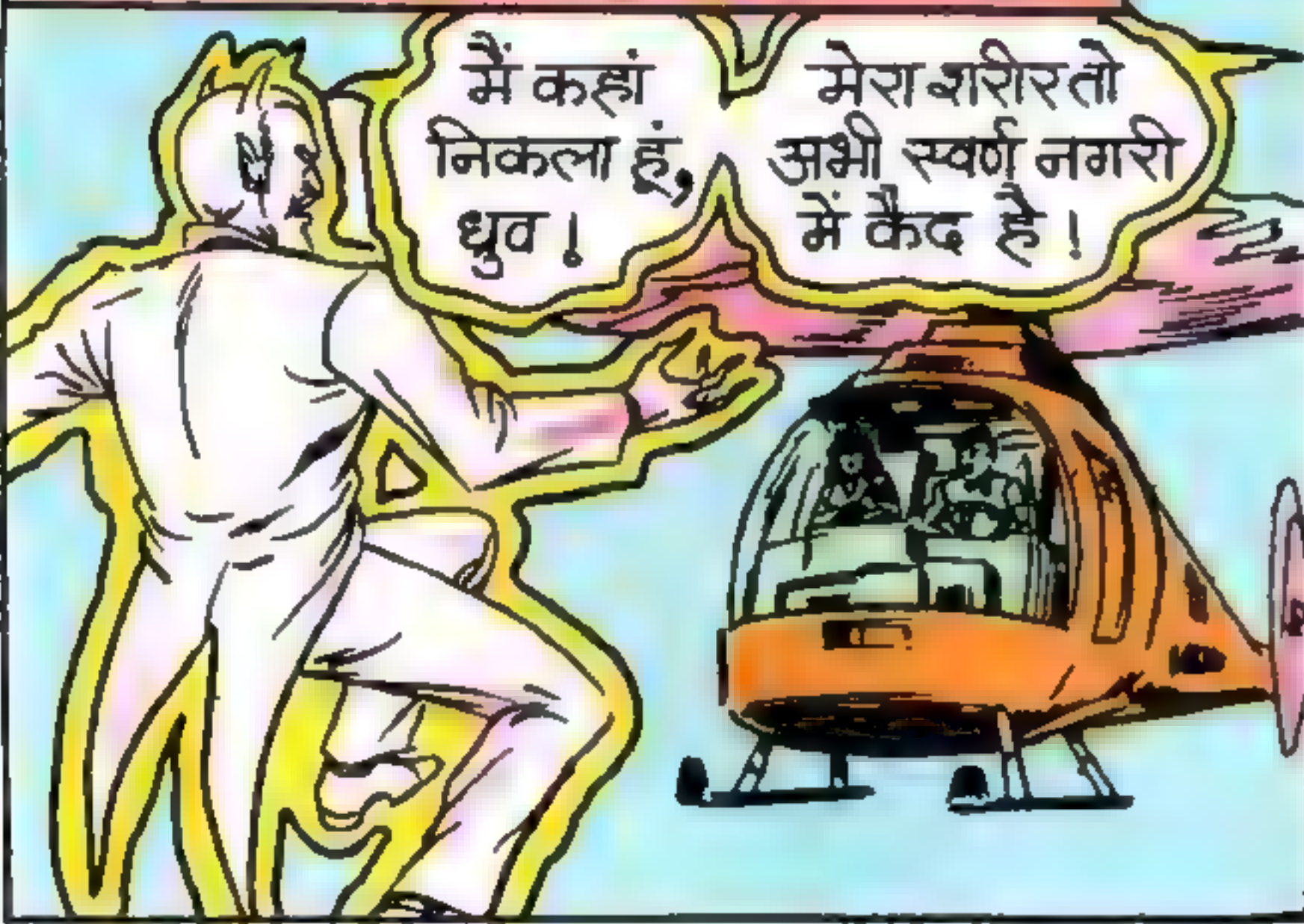
जवाब में ध्रुव के दिमाग में एक आवाज गूंजी।
मैं कहां निकला हूं, ध्रुव।
मेरा शरीर तो अभी स्वर्ण नगरी में कैद है।

दरअसल स्वर्ण नगरी वालों ने मेरे शरीर के साथ-साथ मेरे दिमाग को भी कैद कर रखा था।
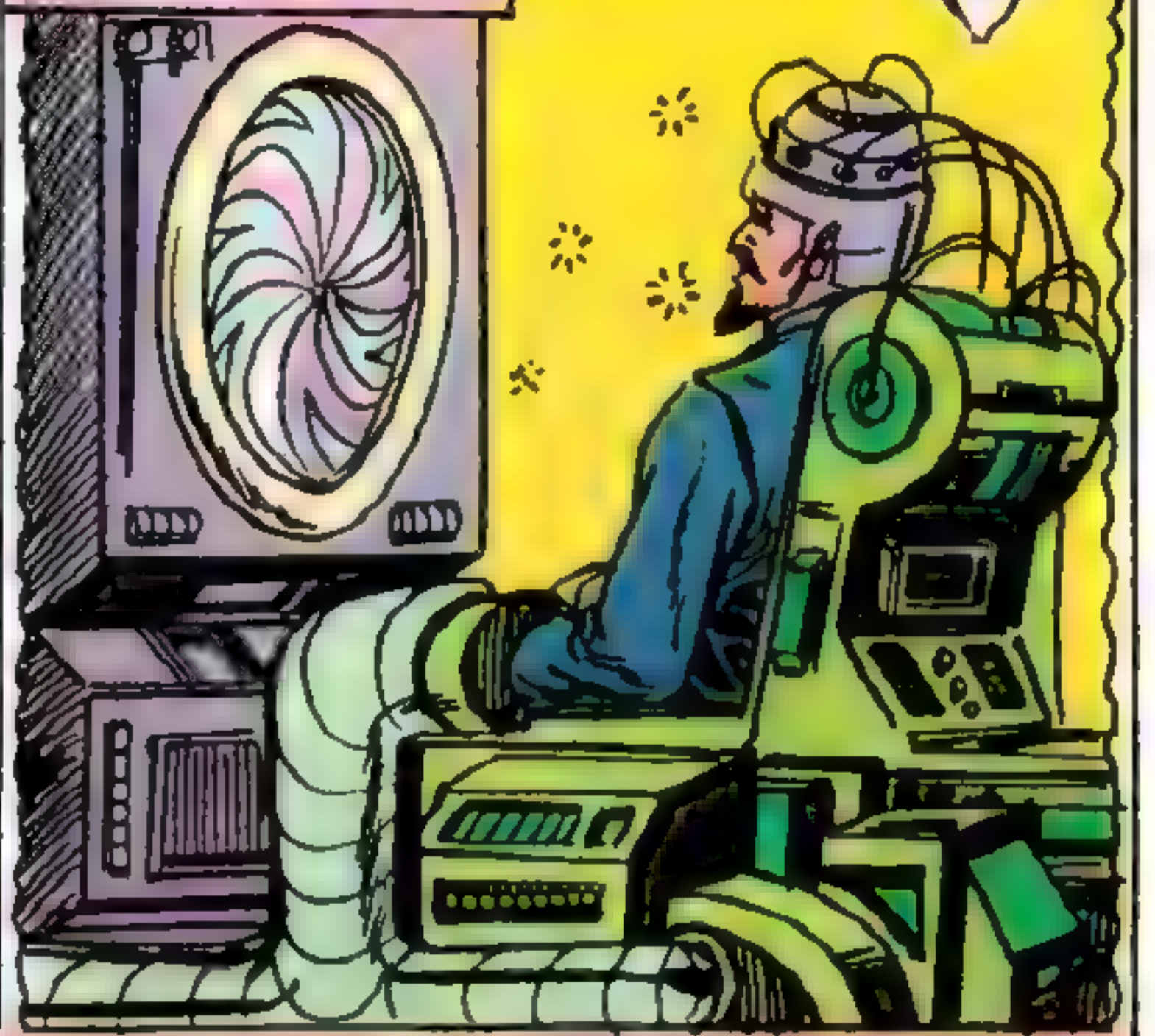
कुछ नुकसान तो नहीं हुआ। पर पूरे स्वर्णनगरी की उर्जा मशीनें कुछ सेकंडों के लिए ठप्प हो गईं।
और मेरा दिमाग आजाद हो गया।
अरे! यह मैं कहां हूं?
मैं शायद स्वर्णनगरी में कैद हूं। यहां से तो मैं धुआं बनकर भी नहीं निकल सकता। पूरा कमरा सीलबंद है।
पर एक दिन, इसी ज्वालामुखी के अंदर उबल रहे लावे के कारण स्वर्ण नगरी में एक हल्का सा भूकम्प आया।
पर ये दीवारें मेरी मानस तरंगों को नहीं रोक सकतीं।
मुझे अपना पूरा ध्यान केंद्रित करना होगा।
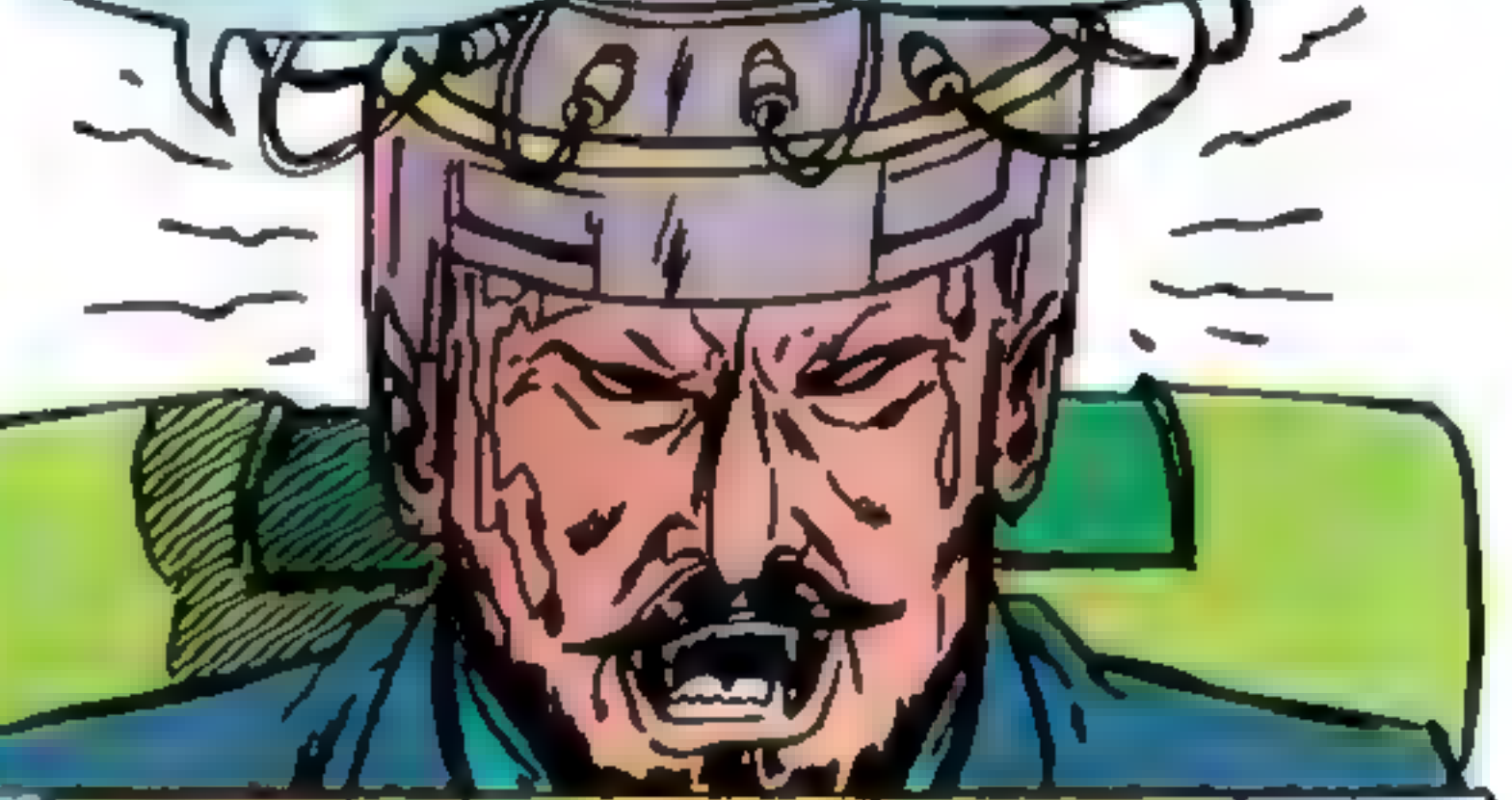
एक जबरदस्त प्रयास के साथ मेरा मानस रूप उस कमरे...

...और स्वर्ण नगरी से बाहर आ गया।

पर इस रूप में, मैं खुद एक तिनका तक नहीं उठा सकता था।
उसके लिए मुझे अपनी शैतानी सेना की जरूरत थी।
जो इस ज्वालामुखी की एक गुफा में कैद थी।
यहां आकर मुझे सामरी की रहस्यमय ज्वाला का पता चला
जिसमें नहा कर मेरी शक्तियां असीमित हो जाएंगी।
पर उसके लिए मुझे पहले सामरी के मस्तिष्क को कब्जे में लेना पड़ेगा।
और फिर... ओह!
बातों-बातों में पता ही नहीं चला कि तुम्हारी मौत का वक्त हो गया है।
कंकाल, त्रिकाल, शाकाल!
आओ!
ओऽऽऽह!
ओह!
वही सपने वाले तीनों शैतान!
अब जब मेरी शैतानी सेना तुम्हारी लाश पर जश्न मनाएगी, तभी मेरे दिल की आग बुझेगी।
और हां! वे सपने तुमको मैंने ही दिखाए थे।
अखबार के एडीटर ने मेरे वश में आने पर ही इस लड़की को यहां भेजा था।

☆ महामानव के विषय में जानने के लिए पढ़ें कॉमिक- महामानव।

फिर एक लड़के ने चमत्कारी ढंग से उस डायनासौर को हरा दिया था।

मैंने उस लड़के... हां, अब मुझे उसका नाम याद आ गया।... ध्रुव!

मैंने ध्रुव को अपने जन्म की पूरी कहानी सुनाई थी।

पर एक नादान इंसान ने मेरा अपहरण करके मुझे गुलाम बनाने की कोशिश की थी।

और फिर मैंने उसको अपना संदेश लेकर दुनिया वालों के पास भेजा था–

कि वे दुनिया को मेरे हवाले कर दें।

और मेरे क्रोध ने पूरी दुनिया में कहर मचा दिया था।

दुनिया वालों ने मेरे सामने घुटने टेक दिए। और ध्रुव को संदेश लेकर मेरे पास वापस भेजा।
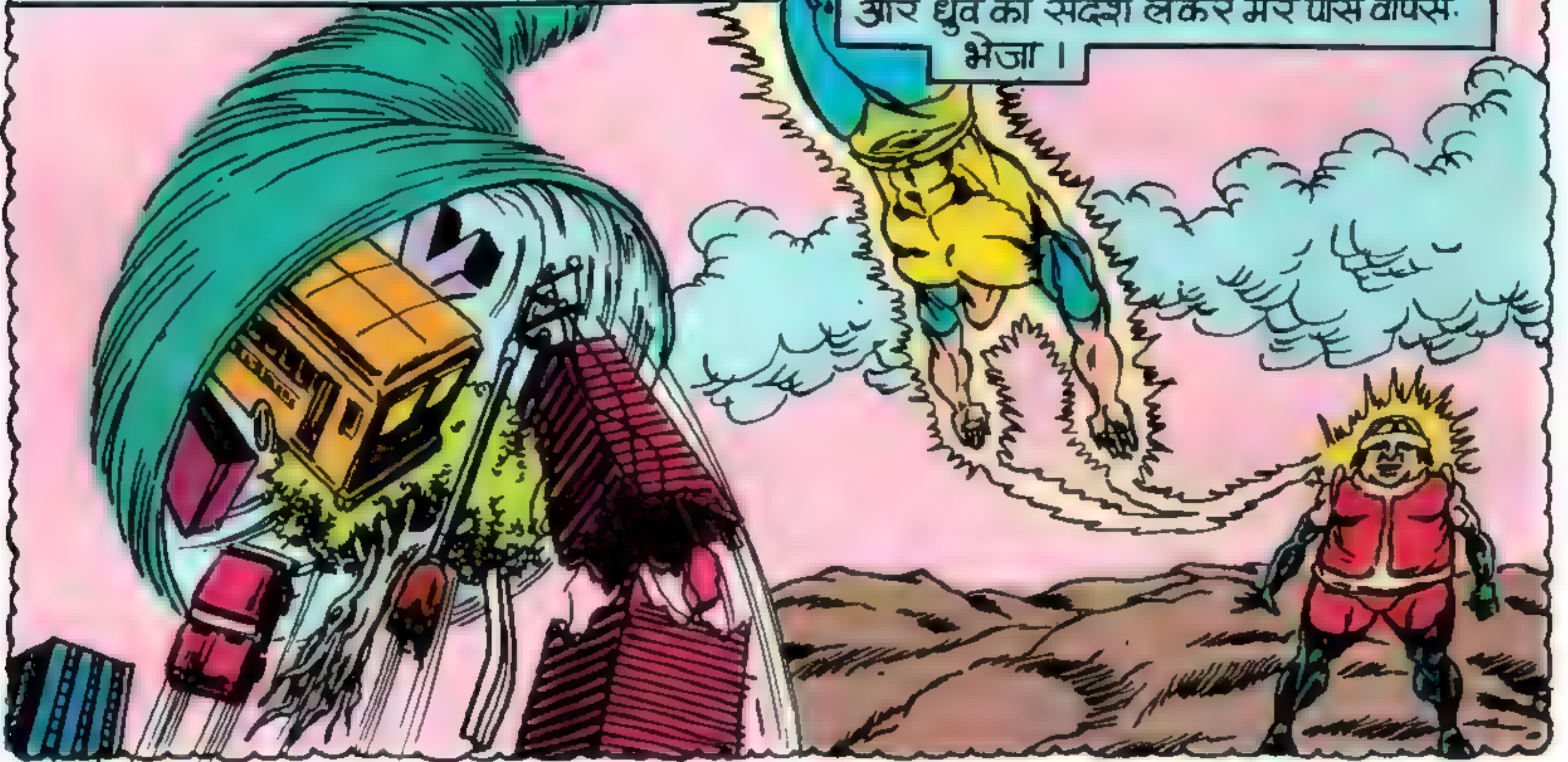
पर ध्रुव मेरी *गर्मी* बर्दाश्त न कर पाने वाली कमजोरी भांप गया था।

पर इससे पहले कि वह कोई चाल चल पाता—

मैंने उसे *मानसिक* बंधनों में कैद कर दिया।

फिर एक तरफ से कुछ मिसाइलें मेरी तरफ आने लगीं।
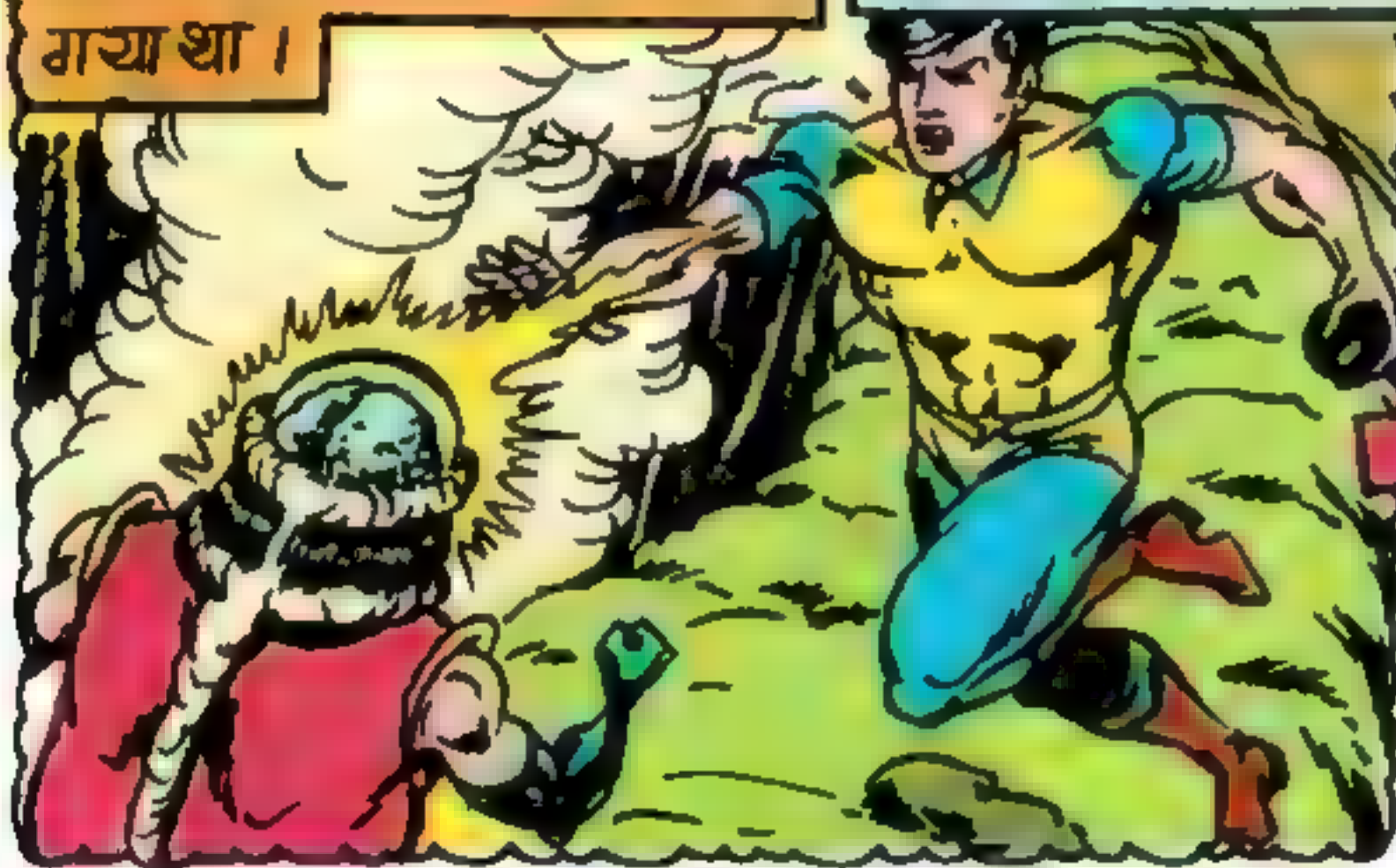
मैंने उनको वापस मानवों की बस्तियों की तरफ मोड़ दिया।

मजा आने ही वाला था—

पर फिर न जाने क्या हुआ?
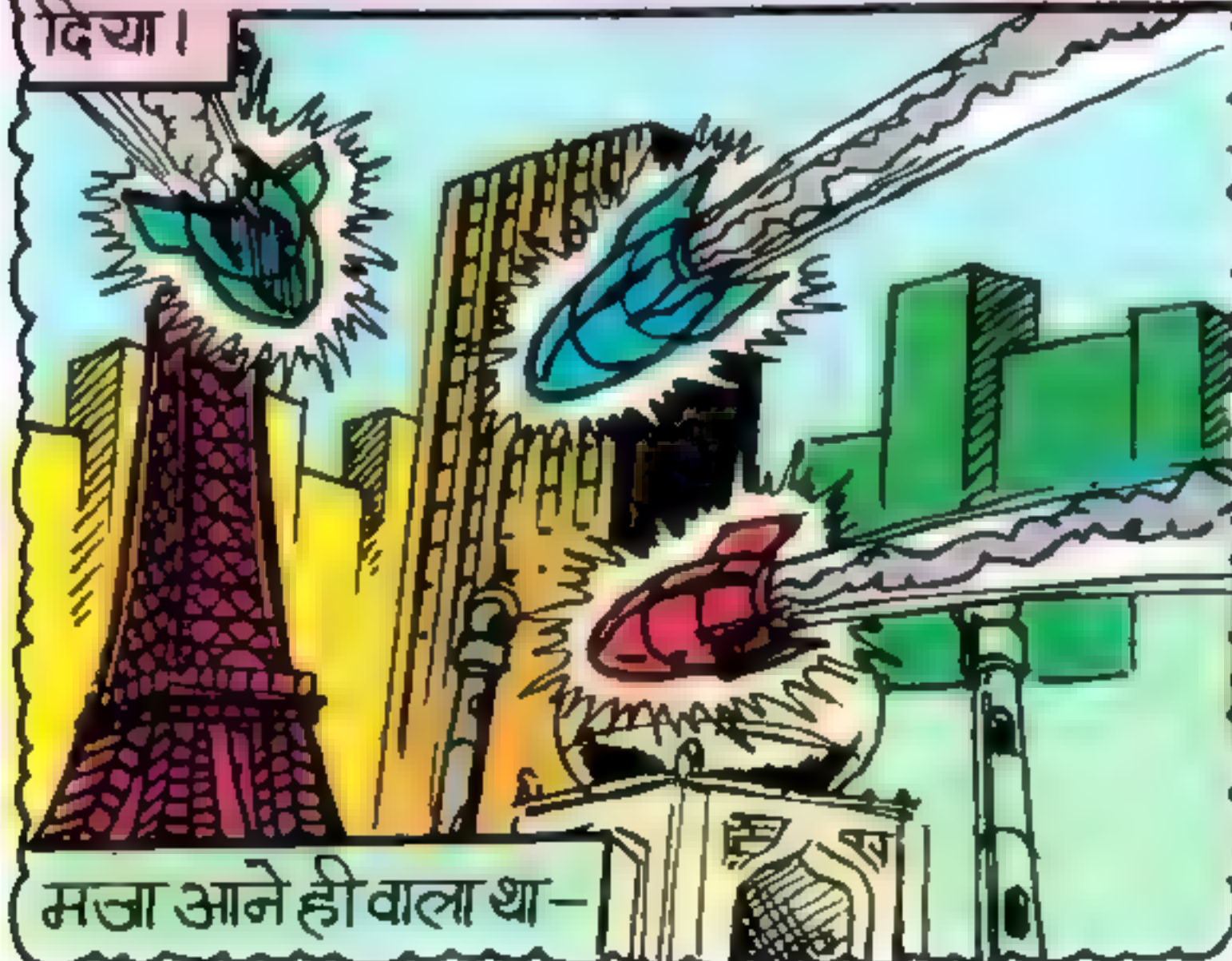
ज्वालामुखी का लावा ऊपर बढ़ने लगा।

गर्मी भी बढ़ने लगी। और मुझ पर बेहोशी छाने लगी।

मुझे सिर्फ इतना याद है कि बेहोश होने से पहले मैंने अपने आपको मानसिक उर्जा के कवच में सुरक्षित कर लिया था।
शायद ज्वालामुखी में गिरने के बाद मैं लावे के साथ अंदर ही अंदर बहता हुआ, यहां पर आकर अटक गया था।
पर अब मैं आजाद हो गया हूं।
और अब मैं अपनी आत्मग्लानि को दूर करूंगा।
मुझे... महामानव को एक मामूली सा दिमाग रखने वाला बच्चा मात दे जाए।
शर्म से डूब मरने वाली बात है।
मैं अभी अपनी मानसिक किरणों के जाल को फैलाकर पता लगाता हूं कि ध्रुव कहां पर है।
ध्रुव जहां पर भी था-
-इस वक्त गहरी मुसीबत में था।
नताशा बेहोश हो गई है।
और मेरे पास भी कुछ सेकंडों का समय है।
एक भी चूक की कीमत हम दोनों की जानें होंगी।
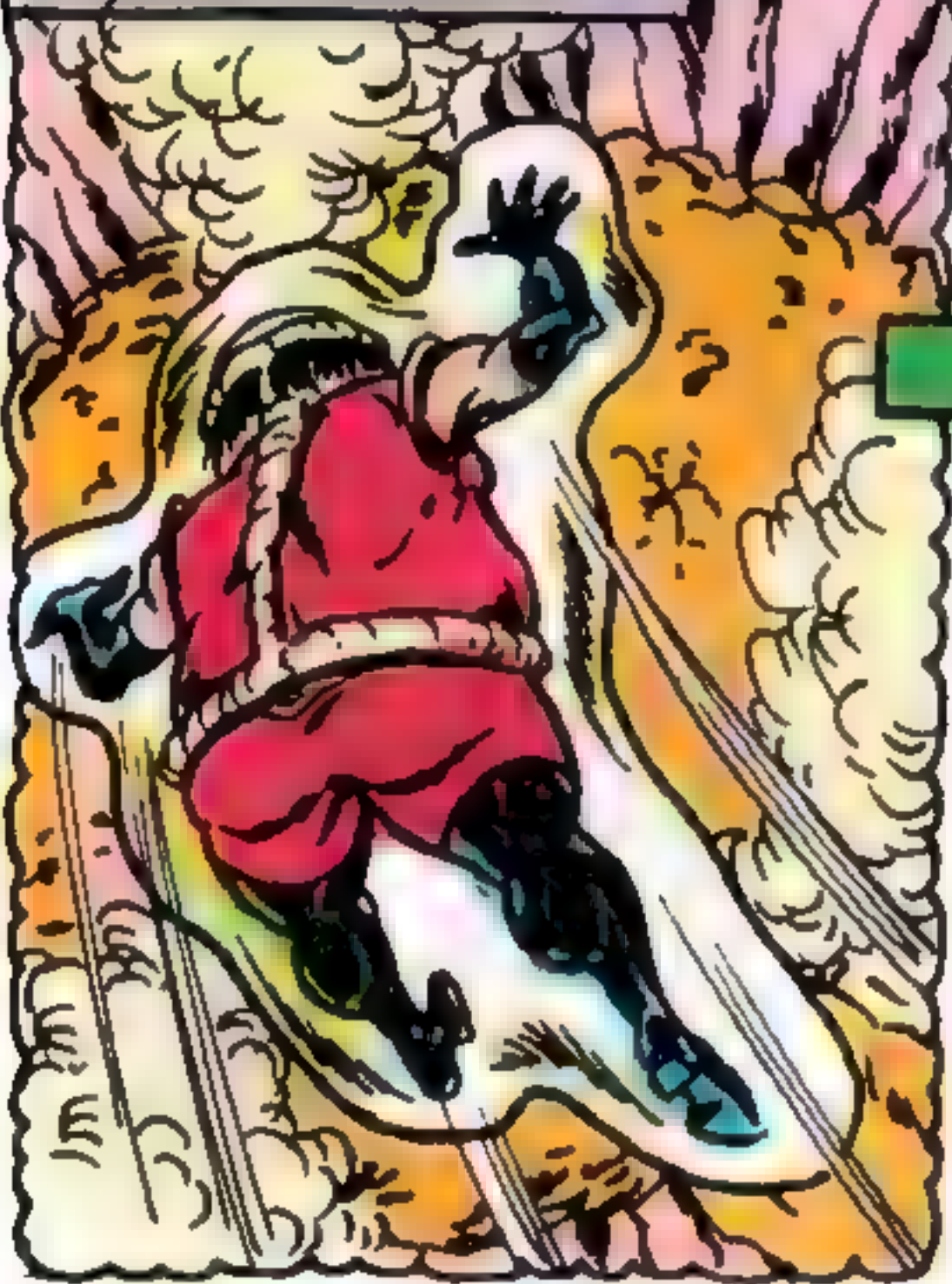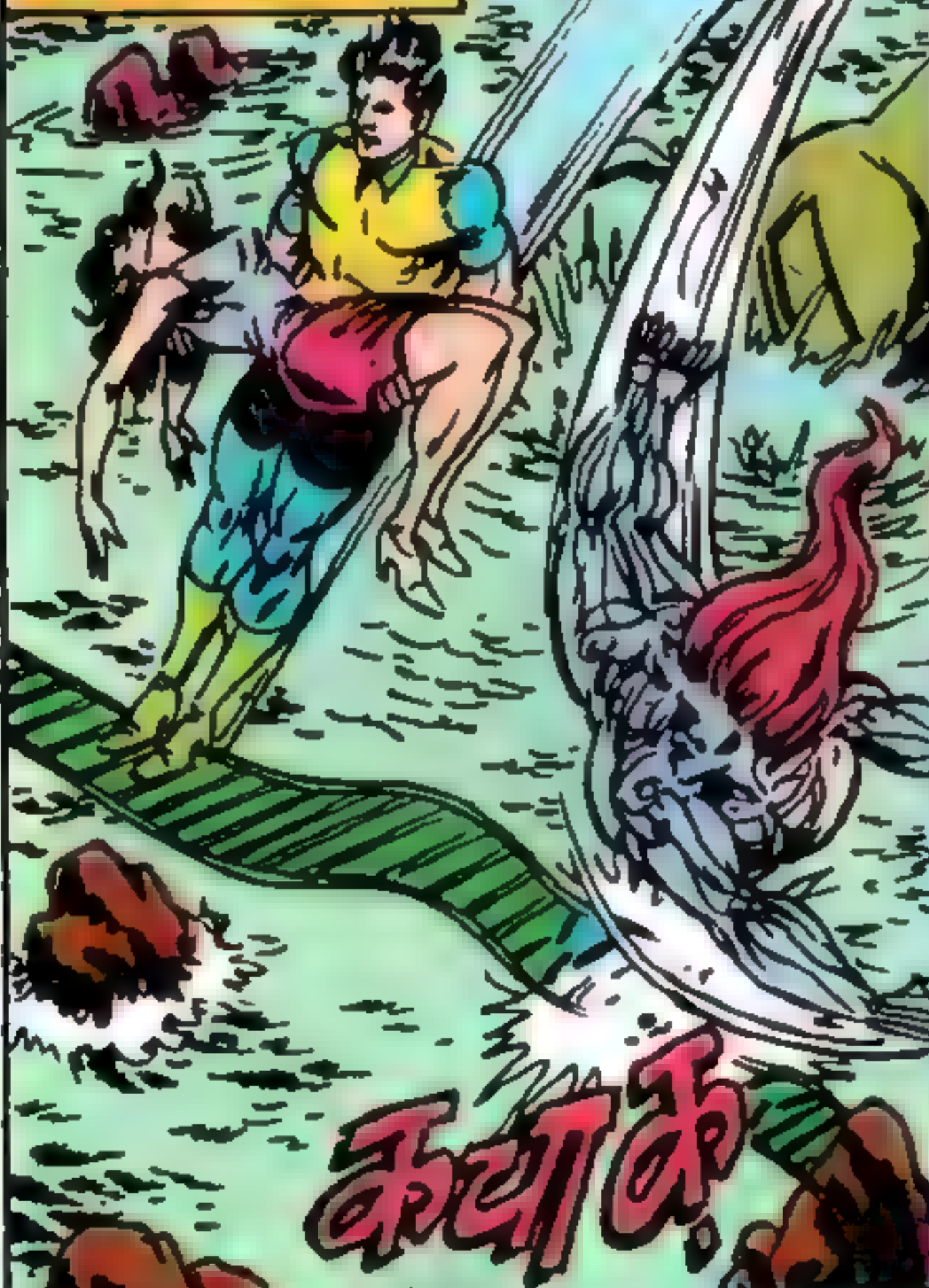
हमें इसको यहां पर लाना होगा।

असलियत जाननी बहुत जरूरी है।

यह हैरानी की ही बात थी कि वे लोग ध्रुव की शक्ल नहीं देख पाए थे।

रस्सी की सीढ़ी का दूसरा सिरा चट्टान में अटका।
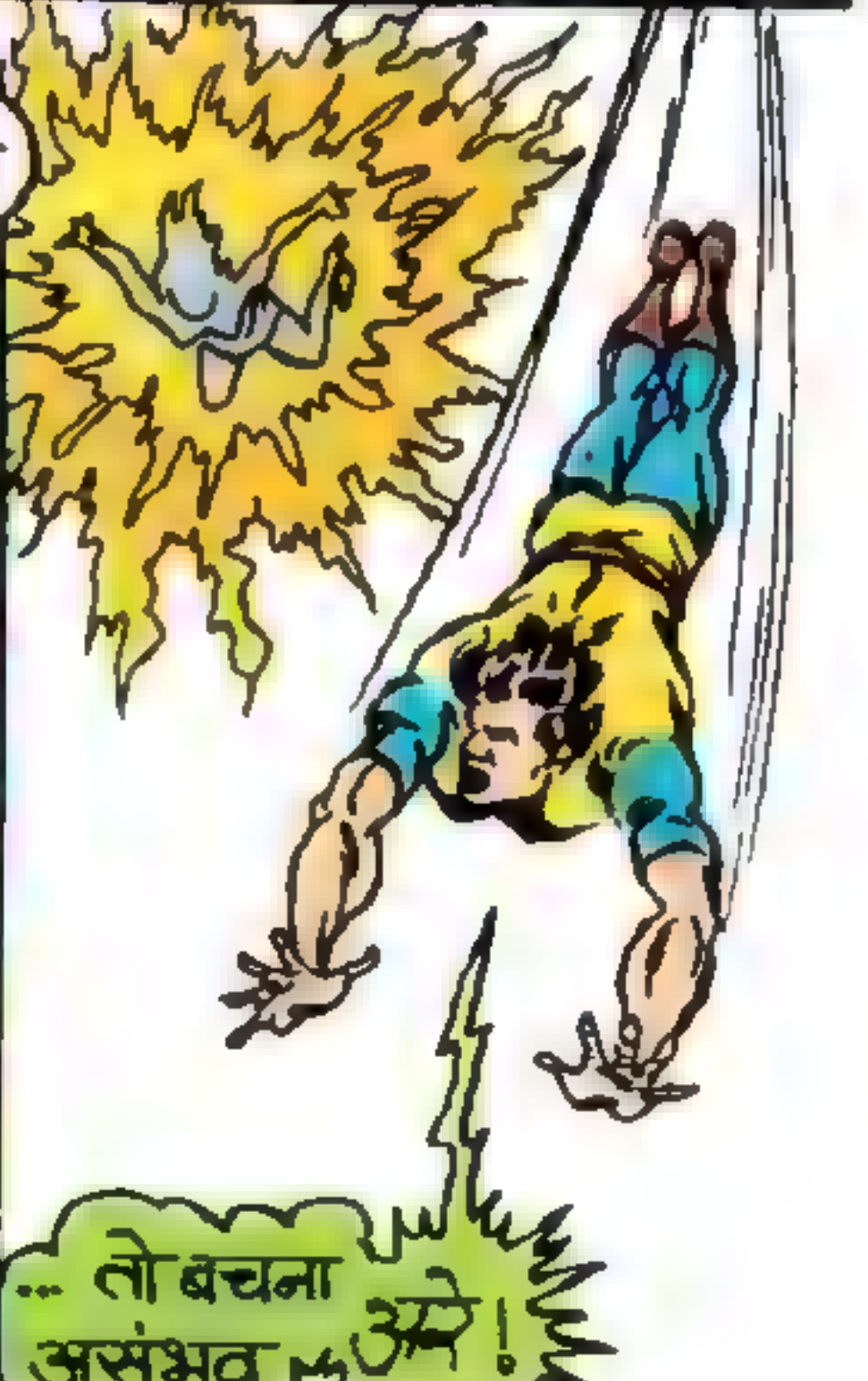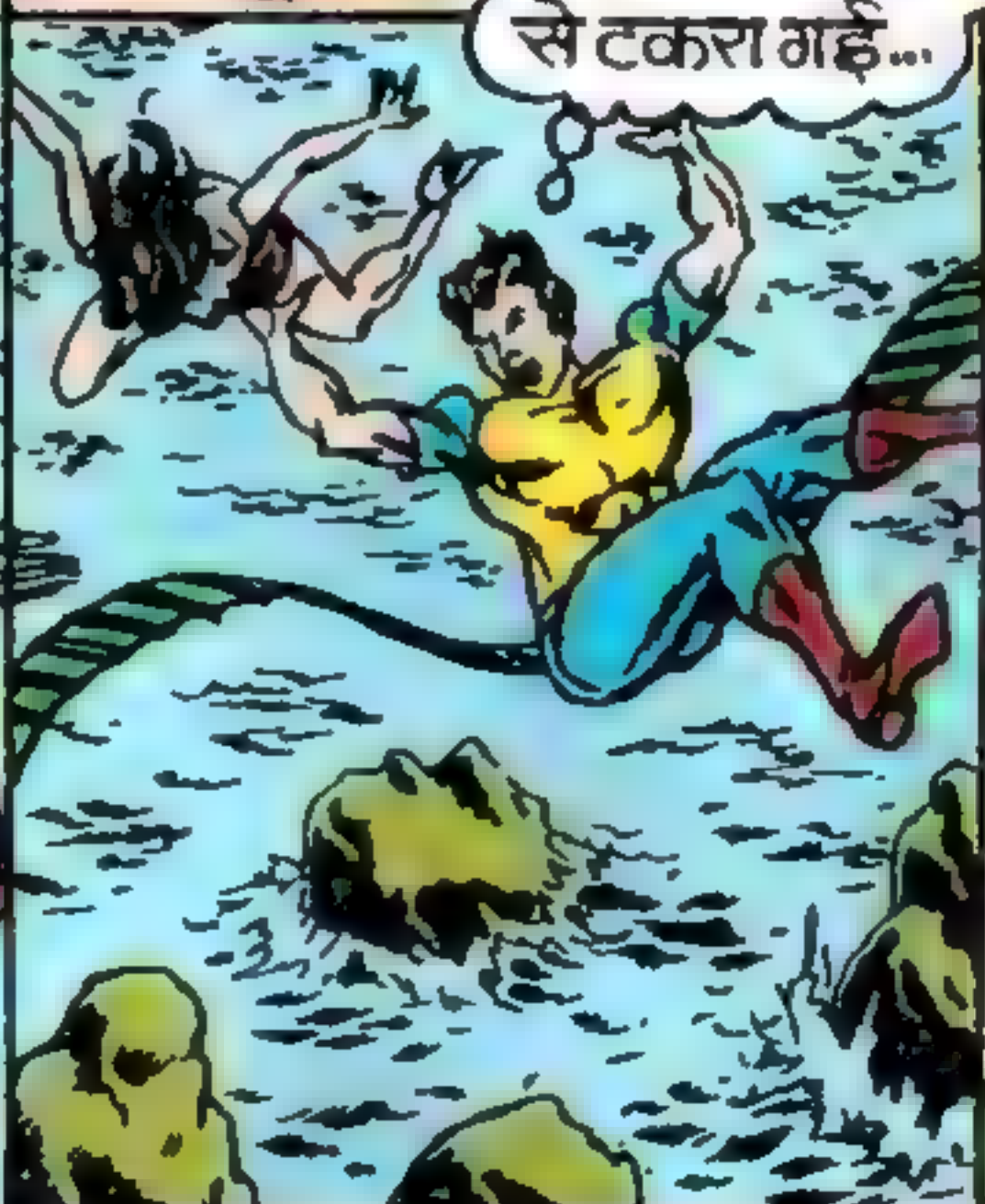
और-
नताशा गायब!
चट्टानों से भरी, पानी की सतह अब कुछ ही दूरी पर थी।
पर सोचने का समय नहीं था।
बचने का रास्ता था- सधी हुई कलाबाजी के साथ एक सधी हुई डाइव।
छपाक!
ताकि शरीर चट्टानों के बीच से होता हुआ...
...तीर की तरह पानी को चीर कर अंदर जा घुसे।
और पानी में सांस लेना, ध्रुव के लिए, हवा में सांस लेने जैसा ही था।
परन्तु-
ओह! मेरा दम घुट रहा है।
यहां के पानी में कुछ अजीब से रसायन घुले हुए हैं।
तभी आसपास कोई समुद्री जीव जंतु नजर नहीं आ रहा है।
ध्रुव को सतह पर आना ही पड़ा।
हाह!
और लगभग तुरंत ही अंदर डुबकी लगा देनी पड़ी।
सतह पर तीन शैतानी आकृतियां उसका इंतजार कर रही थीं।
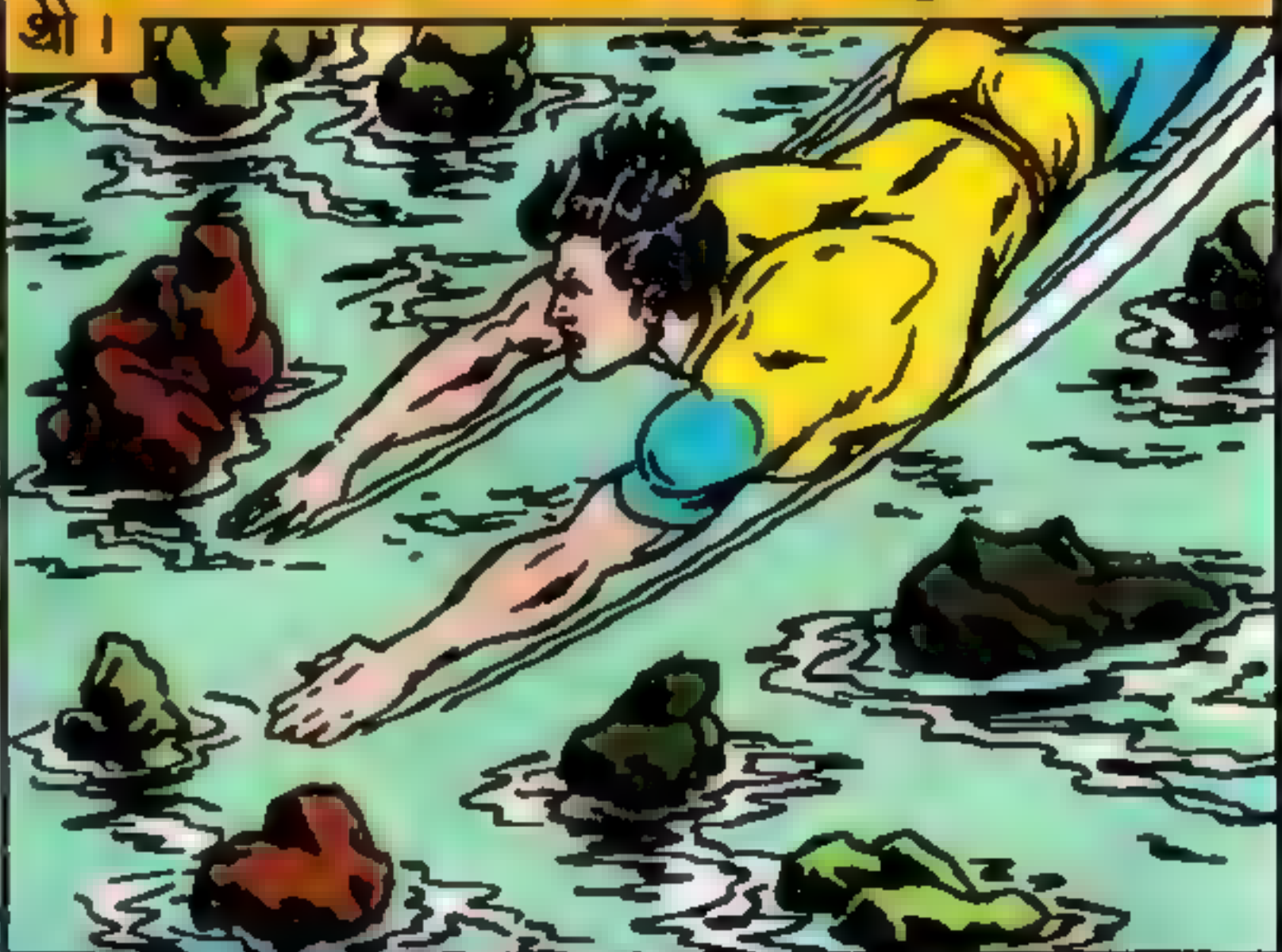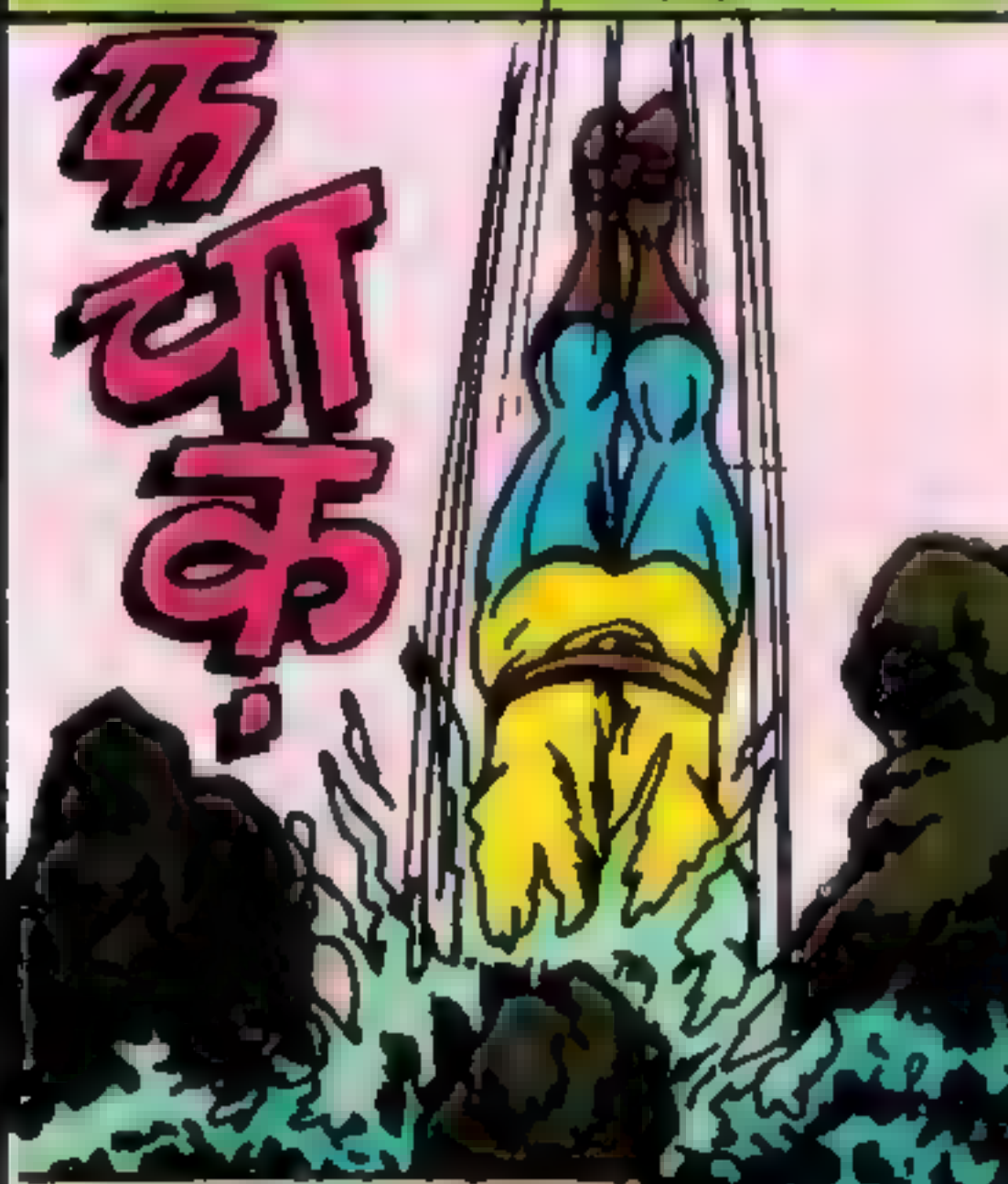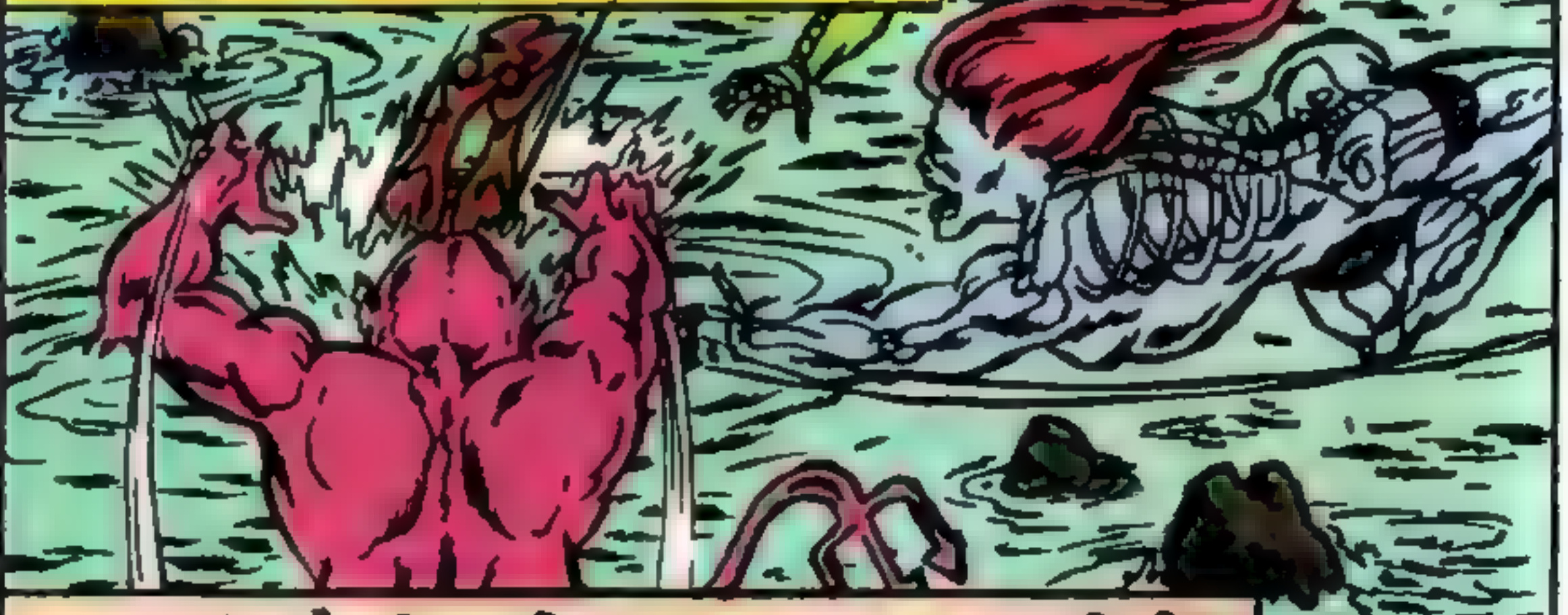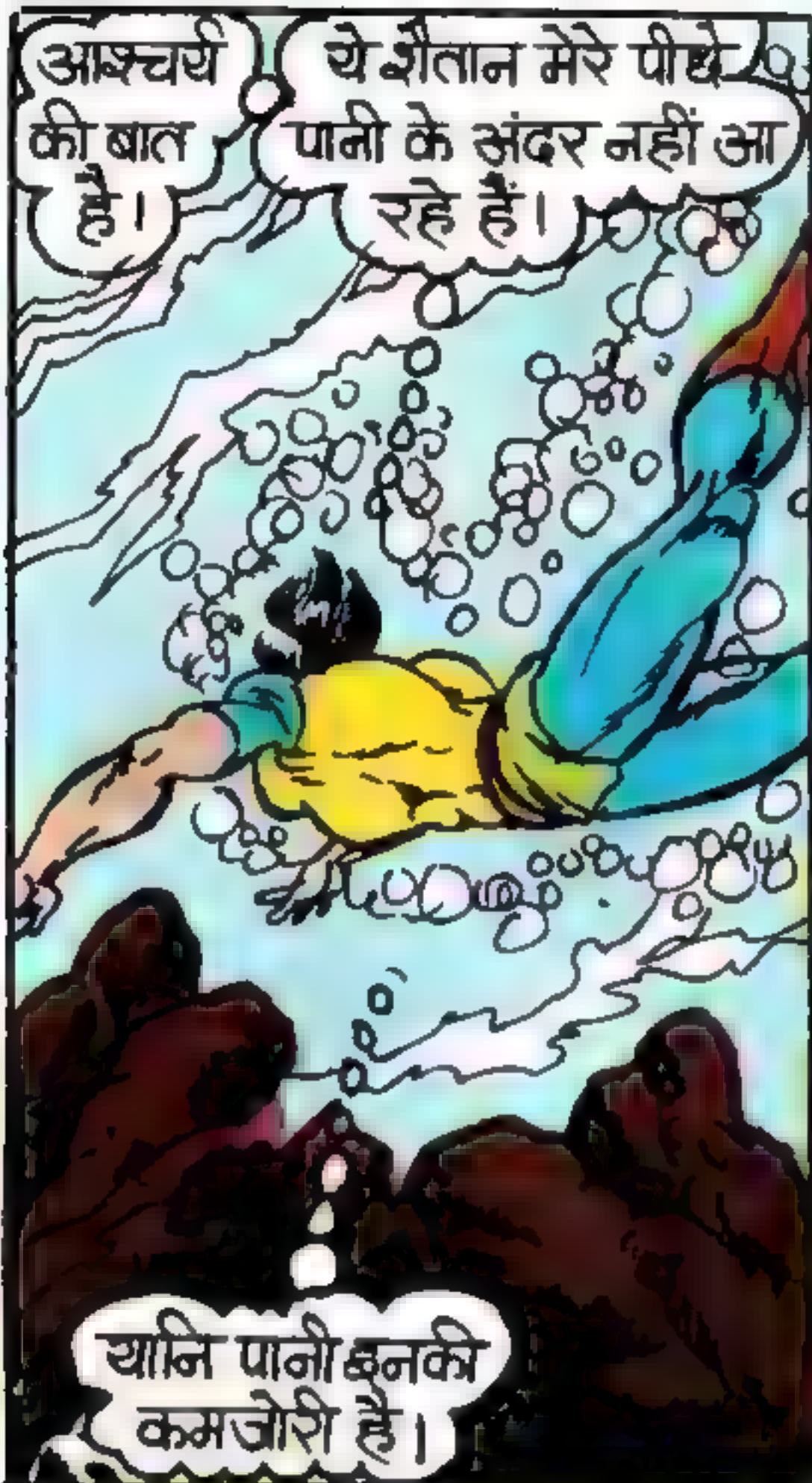
आश्चर्य की बात है।
ये शैतान मेरे पीछे पानी के अंदर नहीं आ रहे हैं।
यानि पानी इनकी कमजोरी है।
पर मेरा दम फिर से घुट रहा है मुझे बाहर... निकलना ही पड़ेगा।
पर बाहर निकलते ही... ये भयानक राक्षस... फिर हमला कर देंगे।
और मेरे पास बचने का कोई रास्ता नहीं होगा।
पर चंडकाल की शैतानी सेना ने अंजाने में ही ध्रुव की मदद कर दी थी।
क्योंकि इस दौरान महामानव की मानसिक तरंगें, उस इलाके की छानबीन कर आगे निकल चुकी थीं।
ओफ! मैंने पूरी पृथ्वी को छान डाला।
पर उस लड़के का कहीं पता नहीं चला।
आखिर वह गया कहां?
खैर! सबसे पहले बाहर निकलना चाहिए।
वर्ना गर्मी फिर से मुझे बेहोश कर देगी।
महामानव बाहर निकला।
और शैतानों की तलाश में घूम रहा सामरी जड़वत सा रह गया।
उसी गुफा से एक और प्राणी निकल रहा था-
यह क्या है? ऐसा प्राणी तो पहले मैंने कभी नहीं देखा।
शक्ल से तो यह उन शैतानों का ही साथी लग रहा है।
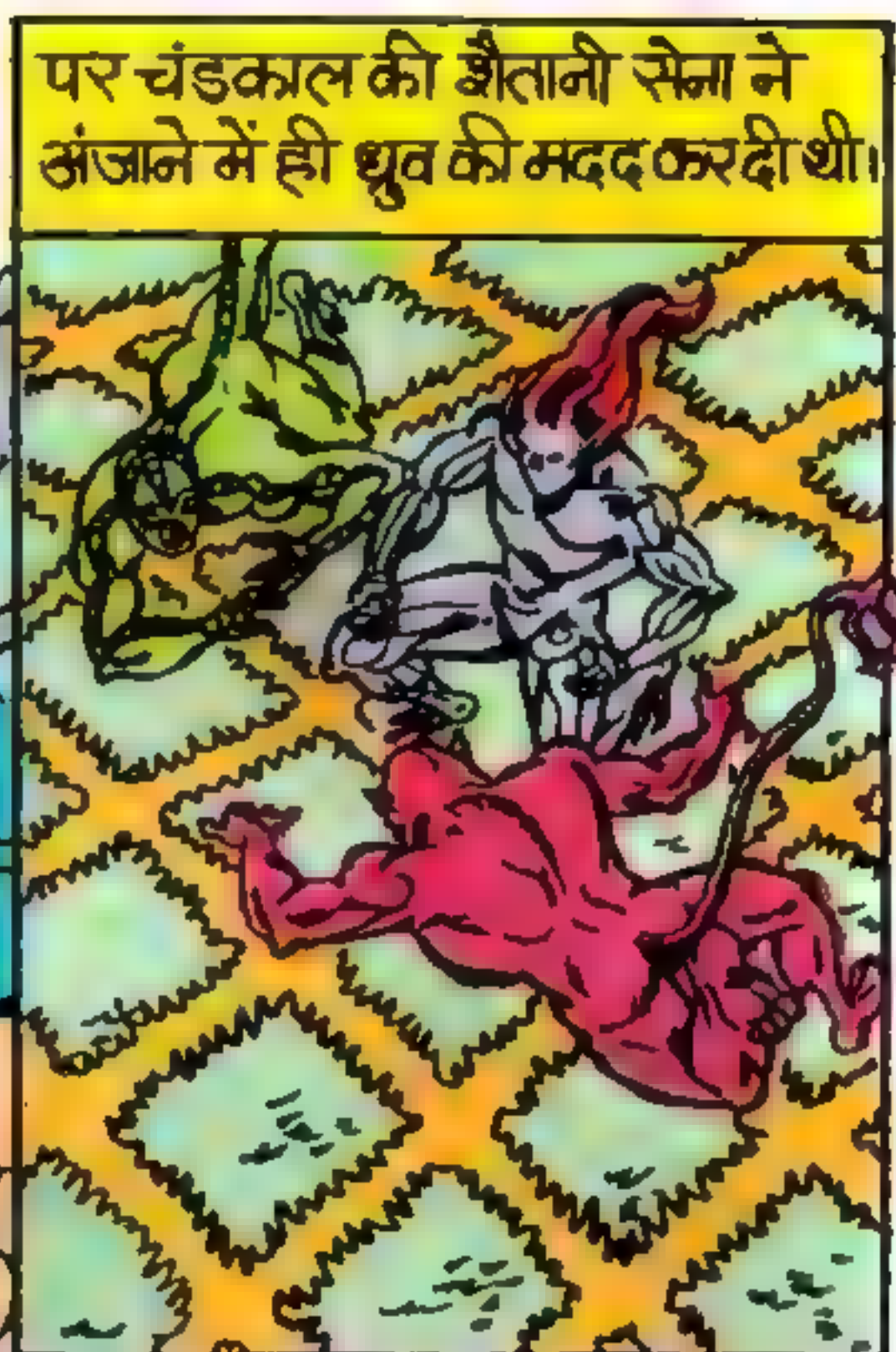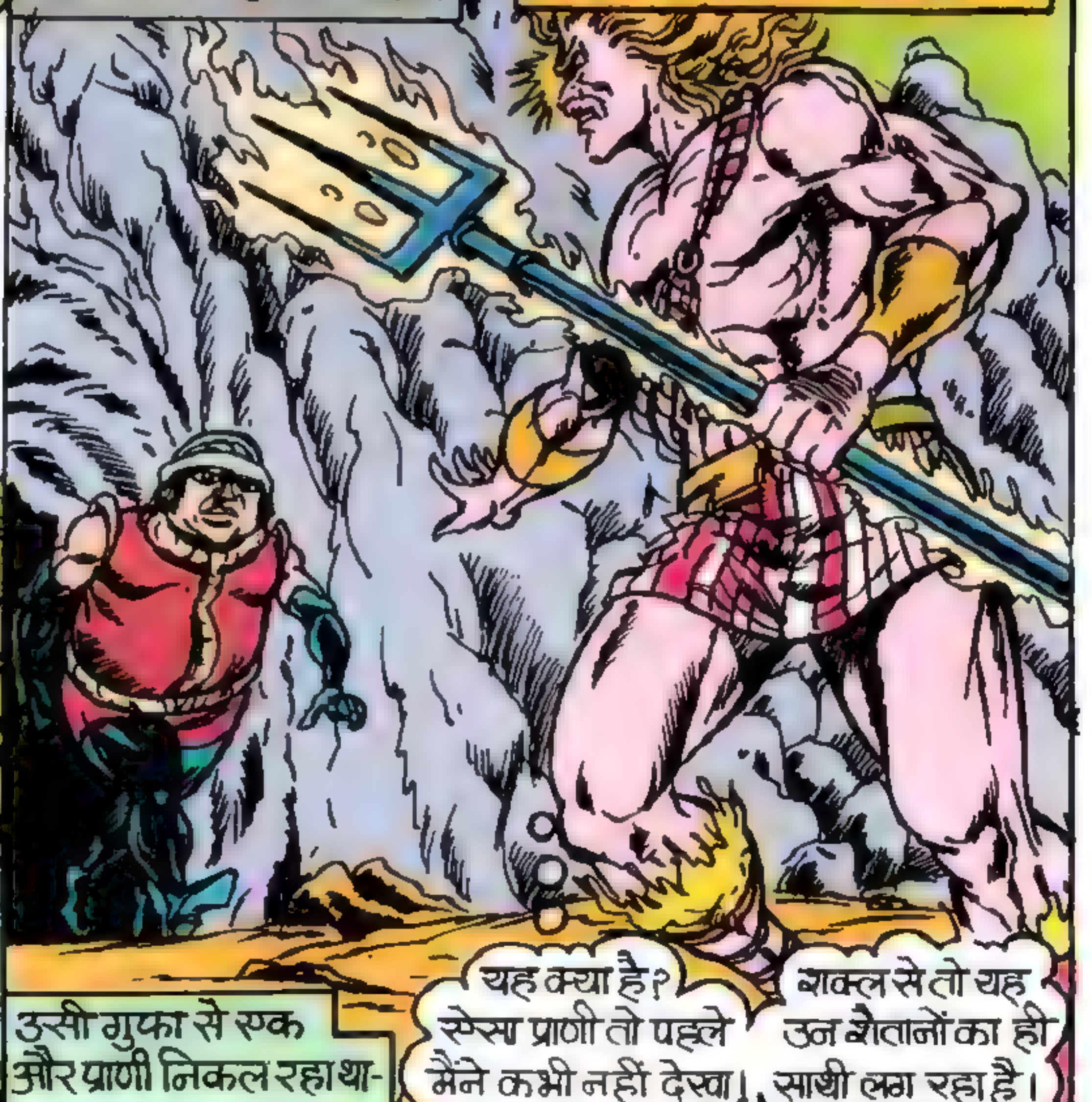
पर अब यह मुझसे बचकर नहीं जा पाएगा।

सामरी का त्रिशूल दहक उठा।
महामानव की तो एक कमजोरी थी- गर्मी।
और उसको हमले की उम्मीद भी नहीं थी।
स्वांय
उसने अपने आप को मानसिक ऊर्जा के कवच से ढकना चाहा।
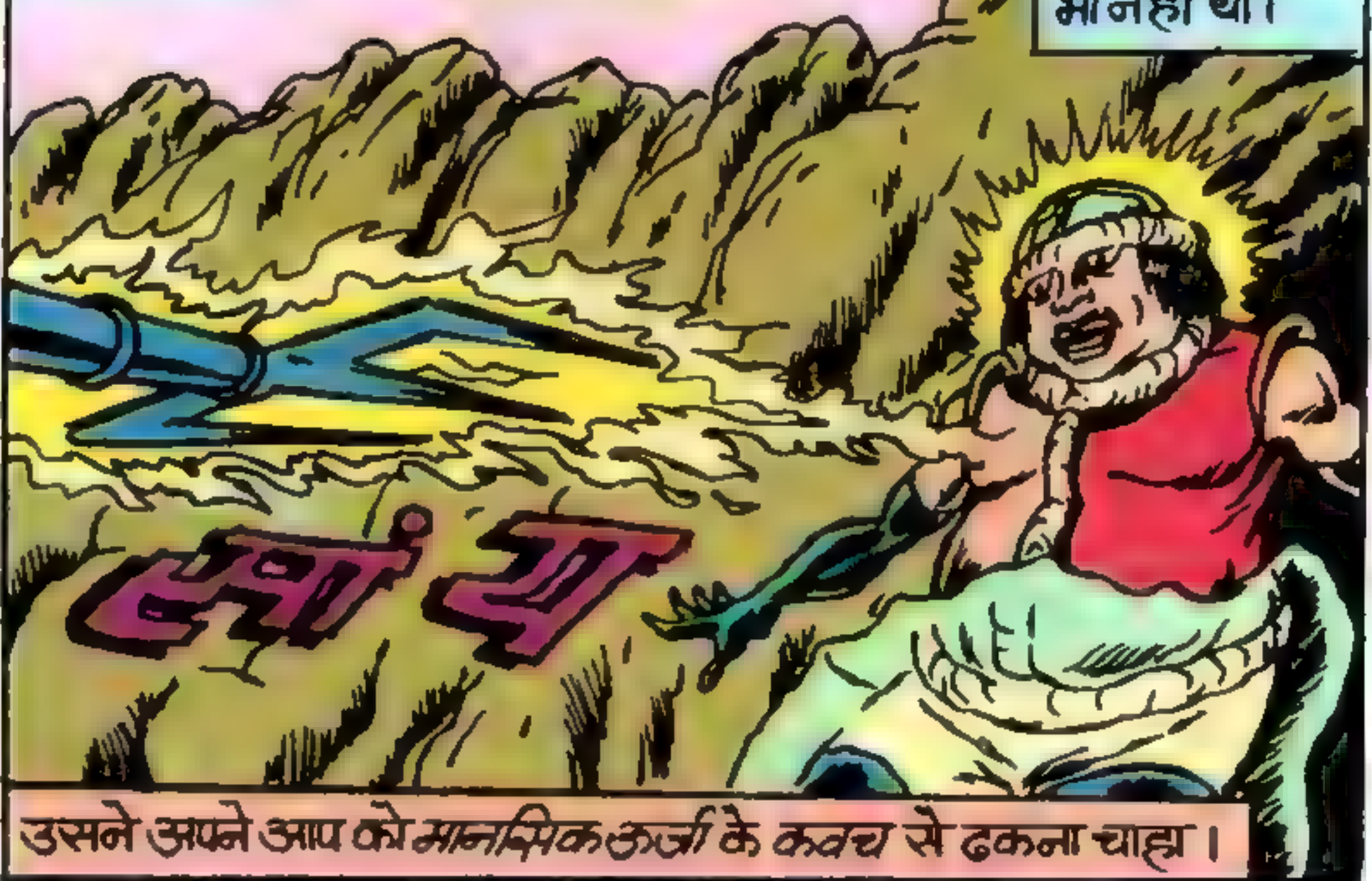
पर पूरी तरह ढक पाने से पहले ही लपट उससे टकरा चुकी थी।
आईया
चीख कर महामानव चट्टानों पर आ गिरा।
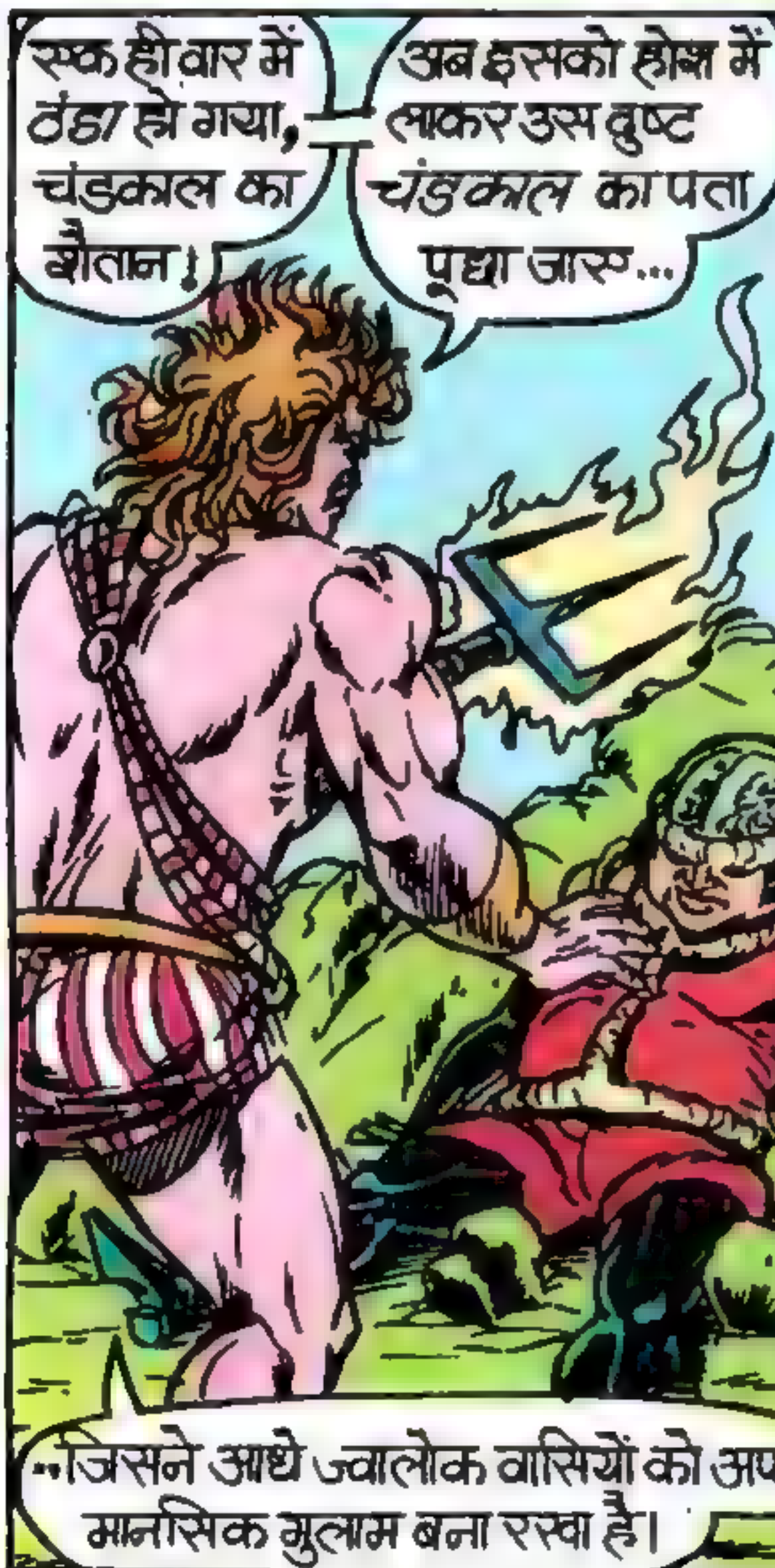
एक ही वार में ठंडा हो गया, चंडकाल का शैतान।
अब इसको होश में लाकर उस दुष्ट चंडकाल का पता पूछा जाए...
...जिसने आधे ज्वालोक वासियों को अपना मानसिक गुलाम बना रखा है।

पर महामानव को वार पूरी तरह नहीं लगा था।
और उसको पहले ही होश आ रहा था।
एक तेज मानसिक वार से सामरी दूर जा गिरा।

अब दो महाबलशाली प्राणी एक दूसरे के सामने थे।
और जीत किसकी होगी, यह कहना मुश्किल था।
ध्रुव की स्थिति कुछ और ही थी।
दुश्मन बहुत ताकतवर था।
और ध्रुव के फेफड़ों की ऑक्सीजन खत्म हो चुकी थी।
तभी- ध्रुव की आंखों के सामने आशा की किरण जगमगा उठी।
सामने चट्टान में एक छेद दिख रहा था।
ध्रुव के सामने, उसमें घुसने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था।
चाहे उस सुरंग में जिन्दगी छुपी हो-
या मौत।
सतह पर मंडरा रहे चंडकाल का धैर्य समाप्त हो चुका था।
बस! बहुत हो गया!
इस मच्छर को तो मैं कभी भी मसल सकता हूं।
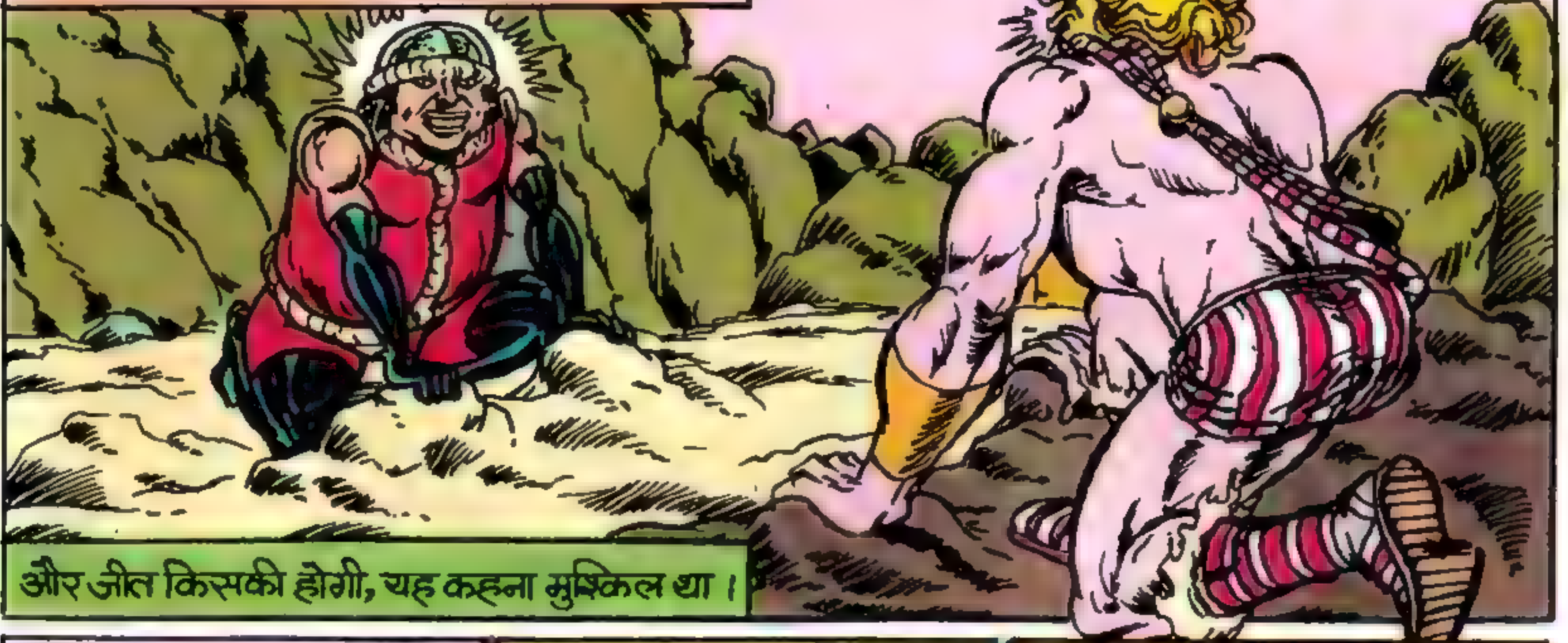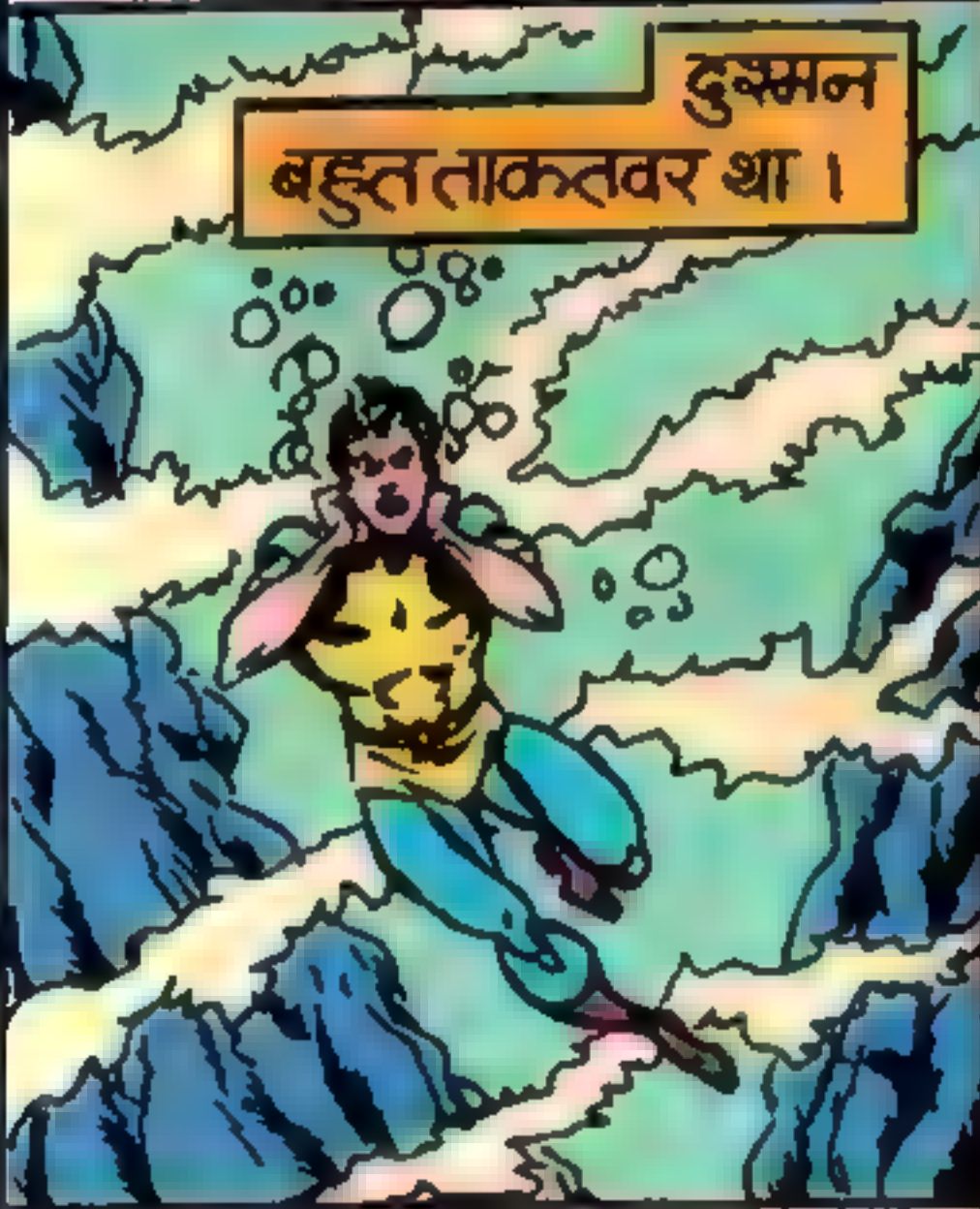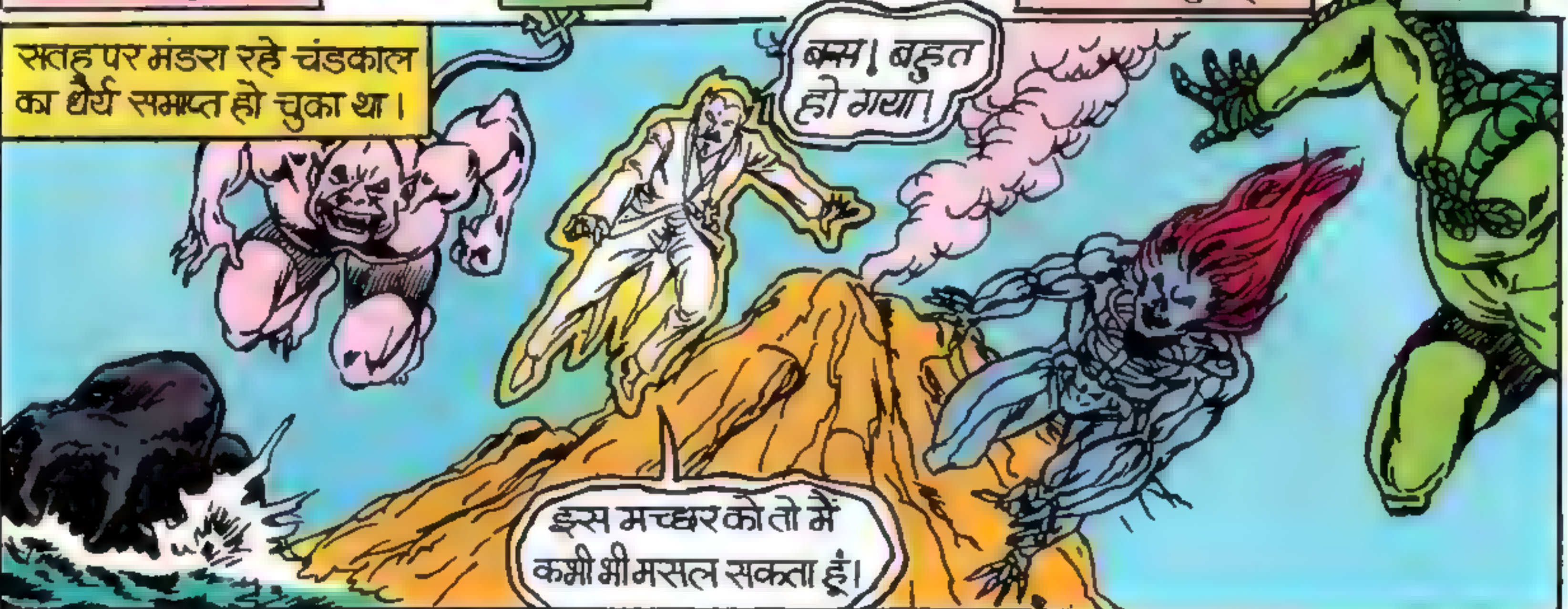
अभी हमको पहले सामरी और उसके जरिए ज्वाला पर काबू पाना है।

अगर *स्वर्णनगरी* वालों को मेरे मानस रूप के भागने का पता चल गया तो एक नई *मुसीबत* खड़ी हो जाएगी।

नताशा को अब तक होश नहीं आया था।

इनको पूरा दृश्य देखकर *सदमा* लग गया है।

पर यह जल्दी होश में आ जाएगी।

अब शक की कोई गुंजाइश नहीं है।

ये वही हैं।

इनको *देवताओं* ने यहां पर भेजा है।

अब अगर सामरी किसी तरह उस दुष्ट पर काबू पा सके तो हमारी *सारी खुशियां* वापस लौट आएं।

क्योंकि ध्रुव तो अब यहां नहीं आ सकता।
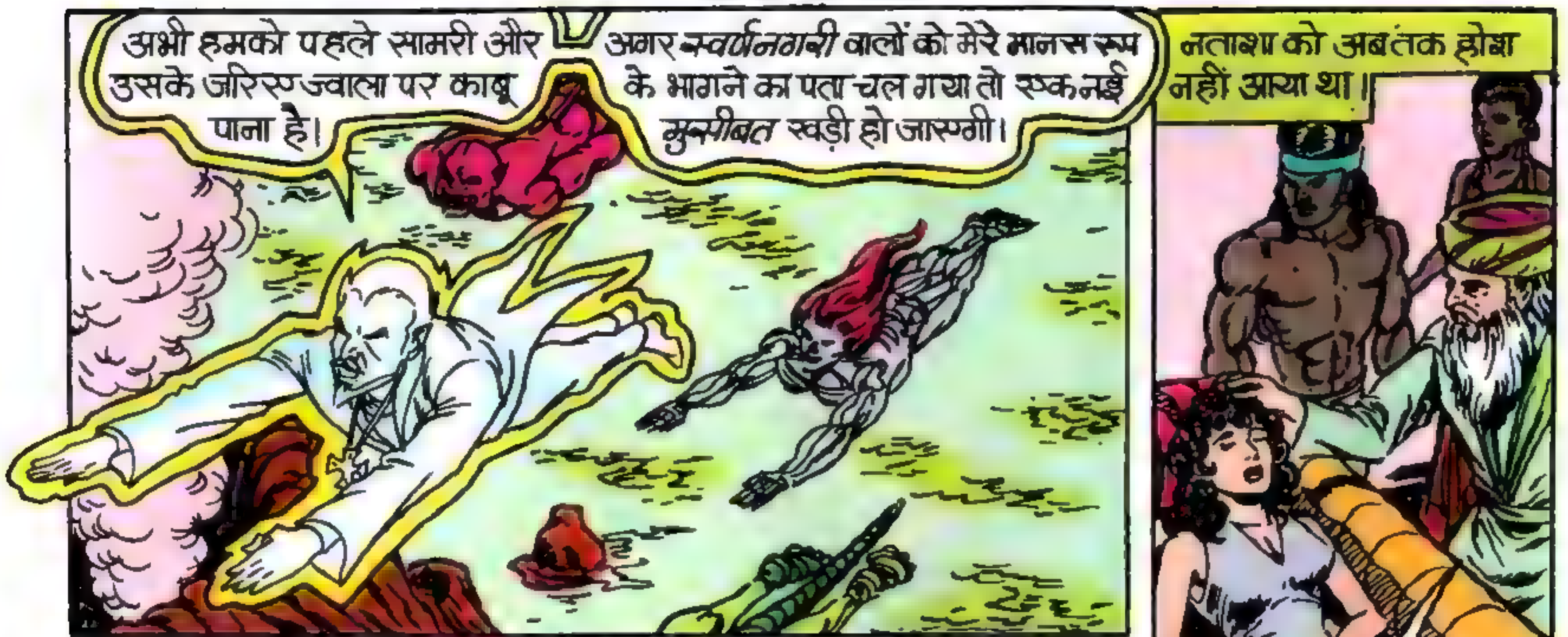
सामरी ने अपने आप को ज्वाला के घेरे में सुरक्षित कर लिया-
और महामानव के मानसिक हथियार उससे टकराकर भस्म होने लगे।
अब यह मेरे वार से बचकर नहीं जा सकता।
मेरी प्रचंड लपट इसको एक ही वार में खाक कर देगी।
महामानव को खाक करने के लिए आगे बढ़ती लपट-
अब सामरी की बारी थी।
मैं इसको ज्वाला के घेरे में कैद कर देता हूं।
जिससे राक्षस तो क्या...
...देवता भी बाहर नहीं निकल सकते।
एक भीषण मानसिक बाधा से जा टकराई।
अवतल सतह से टकराकर ज्वाला वापस सामरी की तरफ पलट गई।
धमाक
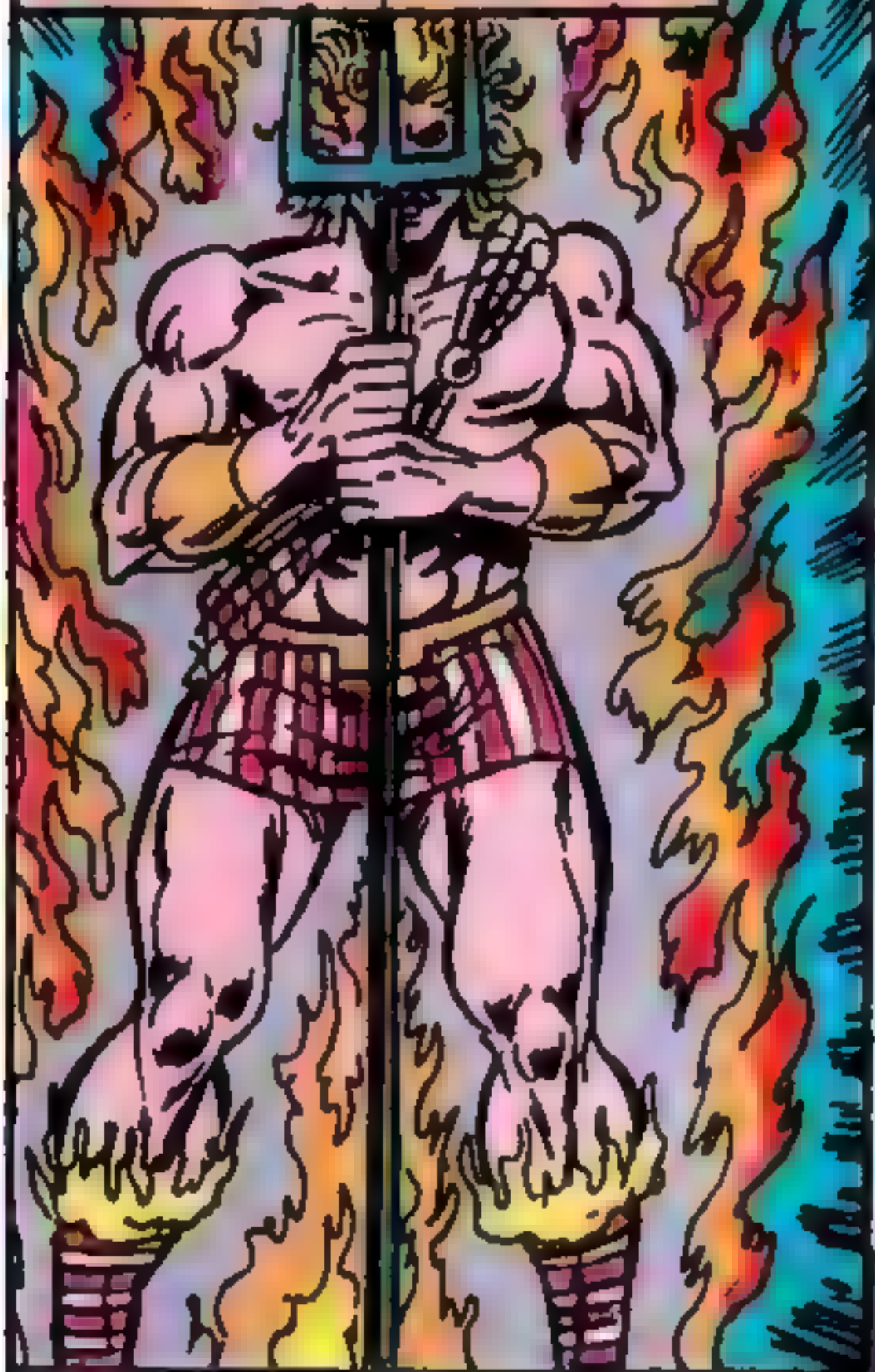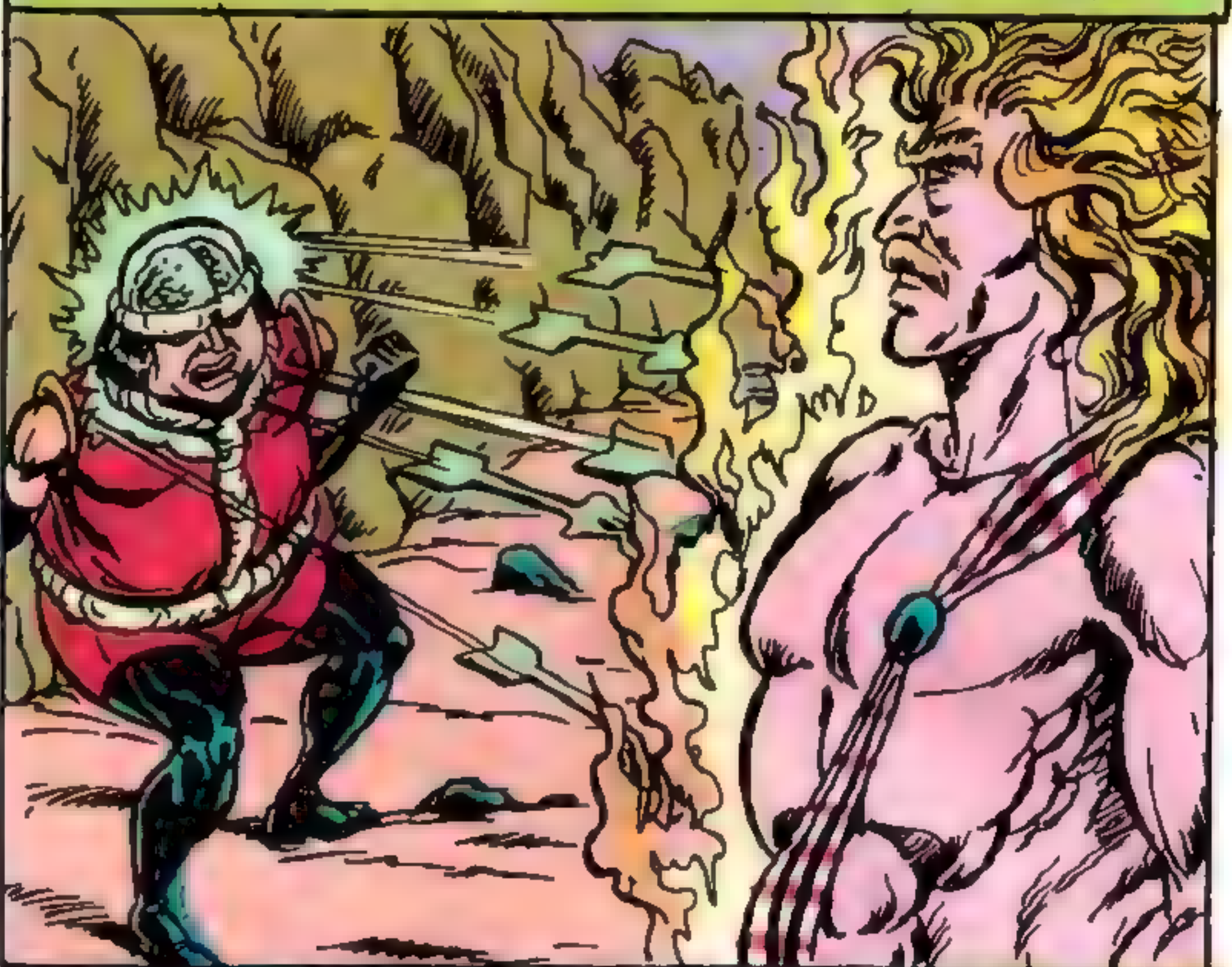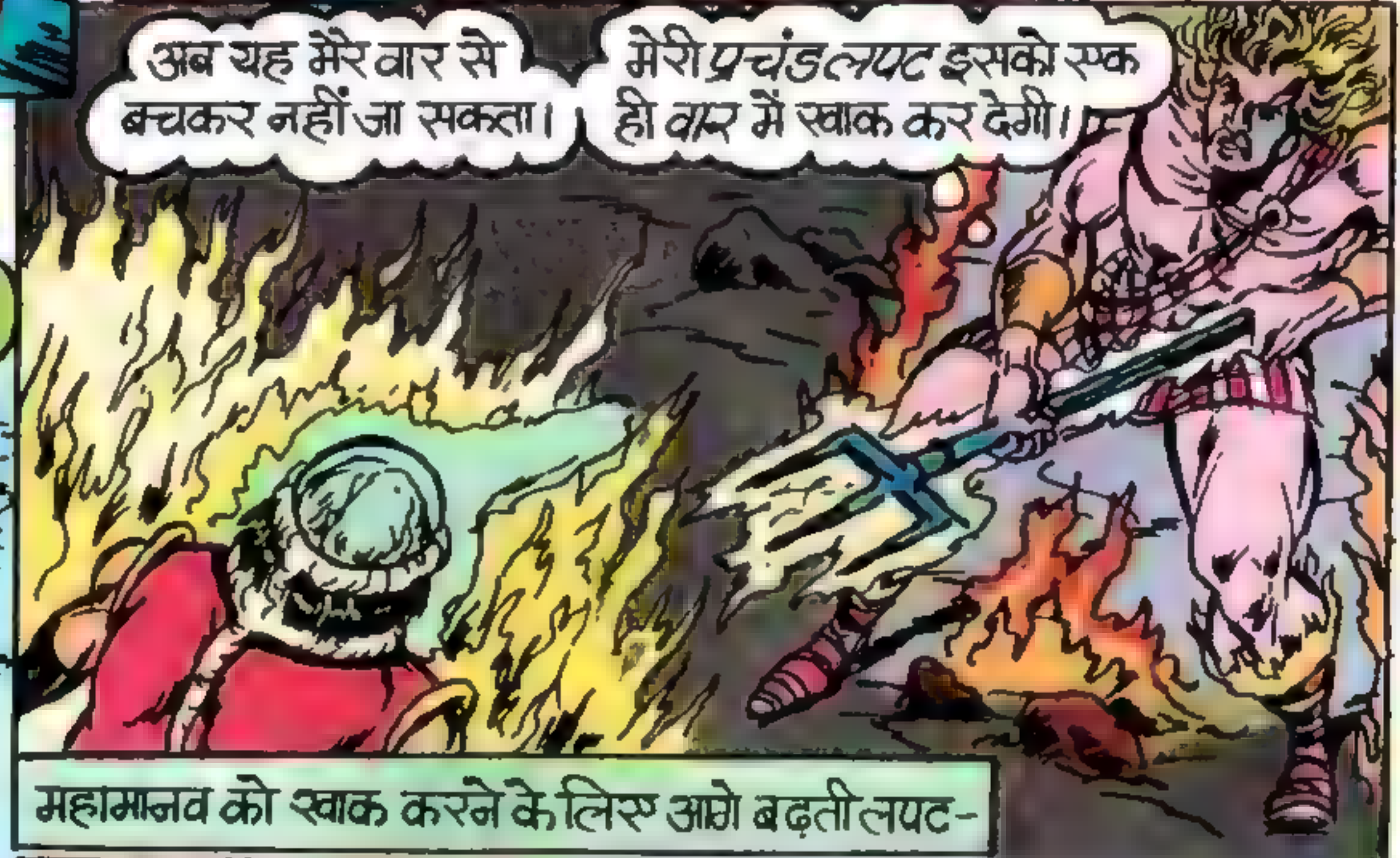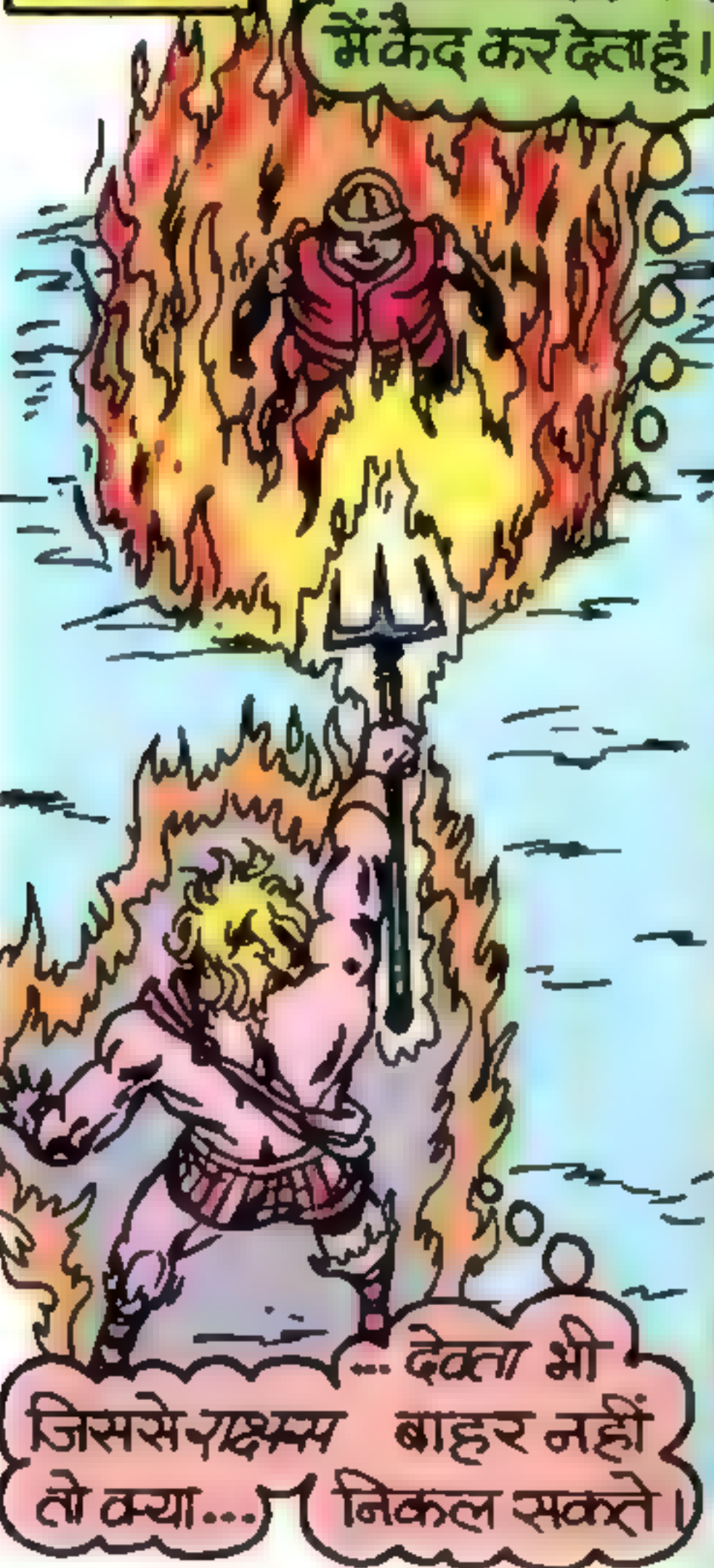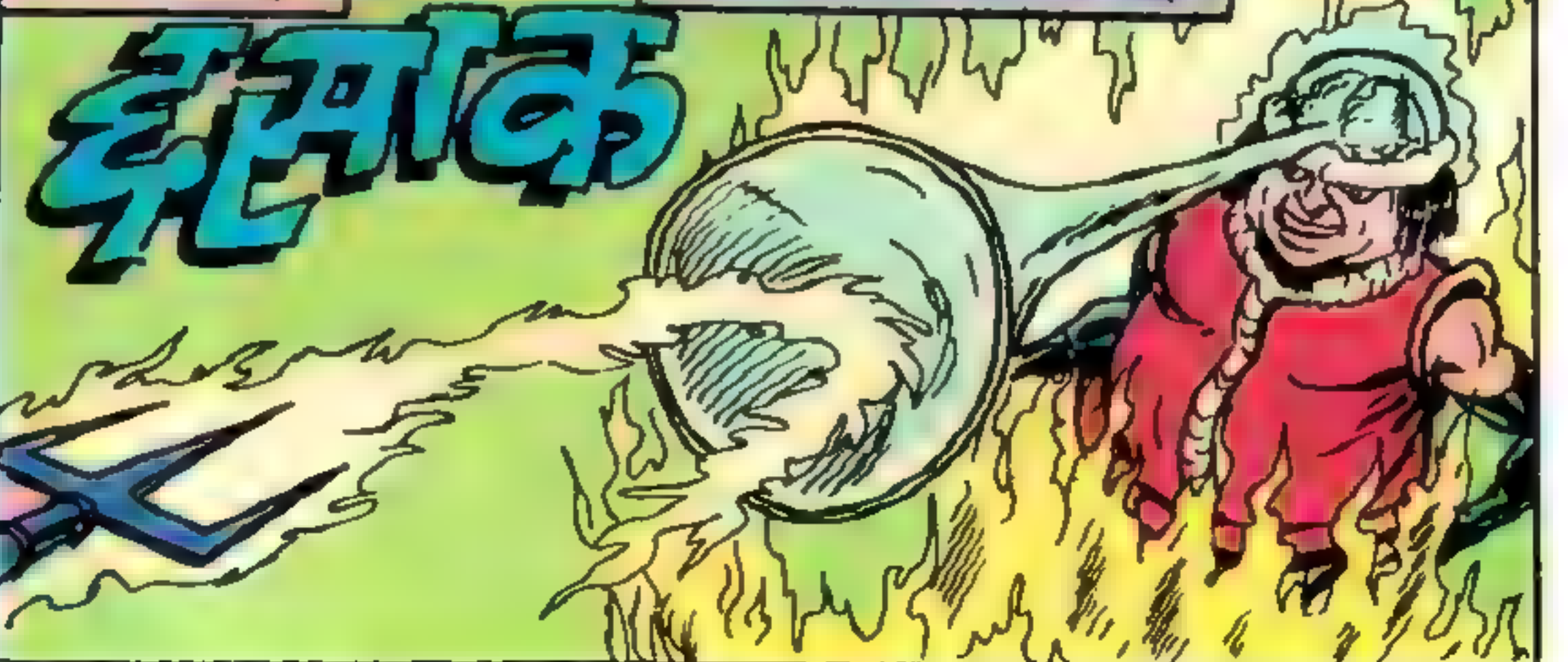
सामरी का 'ज्वाला-कवच' दुनिया के जाने-अंजाने, हर अस्त्र को रोक सकता था।
सिवाय खुद ज्वाला के।
ऐसा वार सामरी ने कभी नहीं झेला था।
उसके शरीर को लाखों वोल्ट बिजली के बराबर झटका लगा।
और वह बेसुध हो गया।
ध्रुव के रास्ते में अब तक कोई बाधा नहीं आई थी।
लगता है कि मैं सतह के पास आ रहा हूं।
ऊपर रोशनी दिखाई दे रही है।
आह! ताजा हवा! लगता था कि मेरे फेफड़े फट जाएंगे।
शायद मैं ज्वालामुखी के अन्दर आ गया हूं।
यह मैं कहां पर आ पहुंचा हूं?
ध्रुव को जवाब मिलने ही वाला था।
पर तभी ध्रुव की आंखें फैल गईं।
अरे! यह तो कोई पुराना नगर लग रहा है।
ज्वालामुखी के अन्दर!

महामानव ने सामरी की तरफ पलट कर भी नहीं देखा-
उसका ध्यान भटका नहीं था।
ध्रुव!
आखिर वह मुझे मिल क्यों नहीं रहा है।
शायद ज्वालामुखी की गर्मी मेरी शक्तियों को क्षीण कर रही है।
मुझे ठंडक चाहिए।
बर्फीली ठंडक!
महामानव की मानसिक तरंगें हवा में मौजूद नमी को जमाने लगीं।
और गुफा का द्वार बर्फ की एक मोटी सतह से ढंक गया।
अब मैं अपने मानस जाल को दुबारा पूरी पृथ्वी पर फैलाता हूं।
और इस बार ध्रुव मुझसे बच नहीं सकेगा।
ध्रुव को महामानव से पहले किसी और से बचना था।
भाले की गर्मी ने ध्रुव को खतरे का आभास दिला दिया था।
बाहरी दुनिया का मानव यहां तक कैसे आ पहुंचा?
खत्म कर दो इसे।

दोनों पहरेदार बाहरी दुनिया के नए दांव-पेचों से नावाकिफ थे।
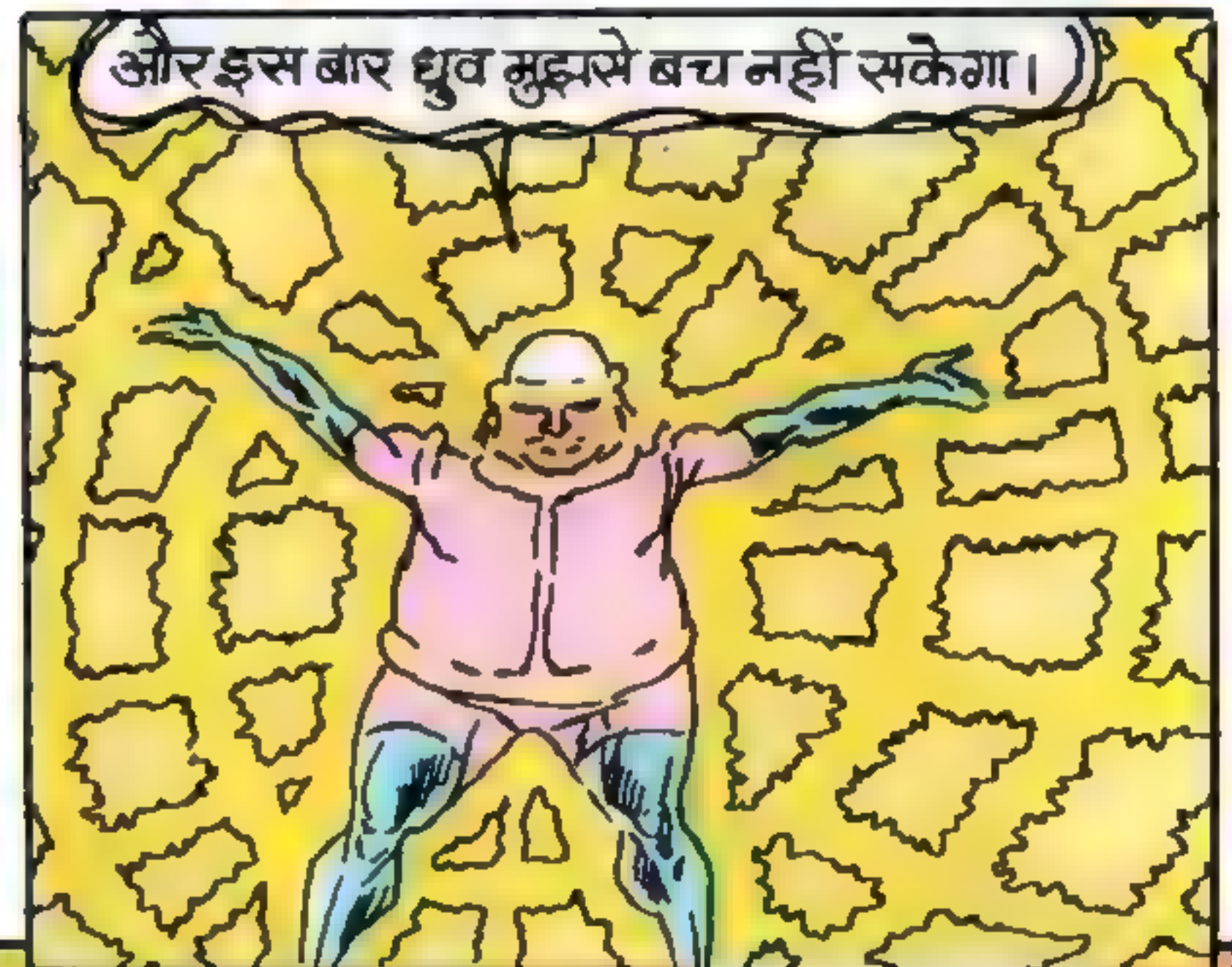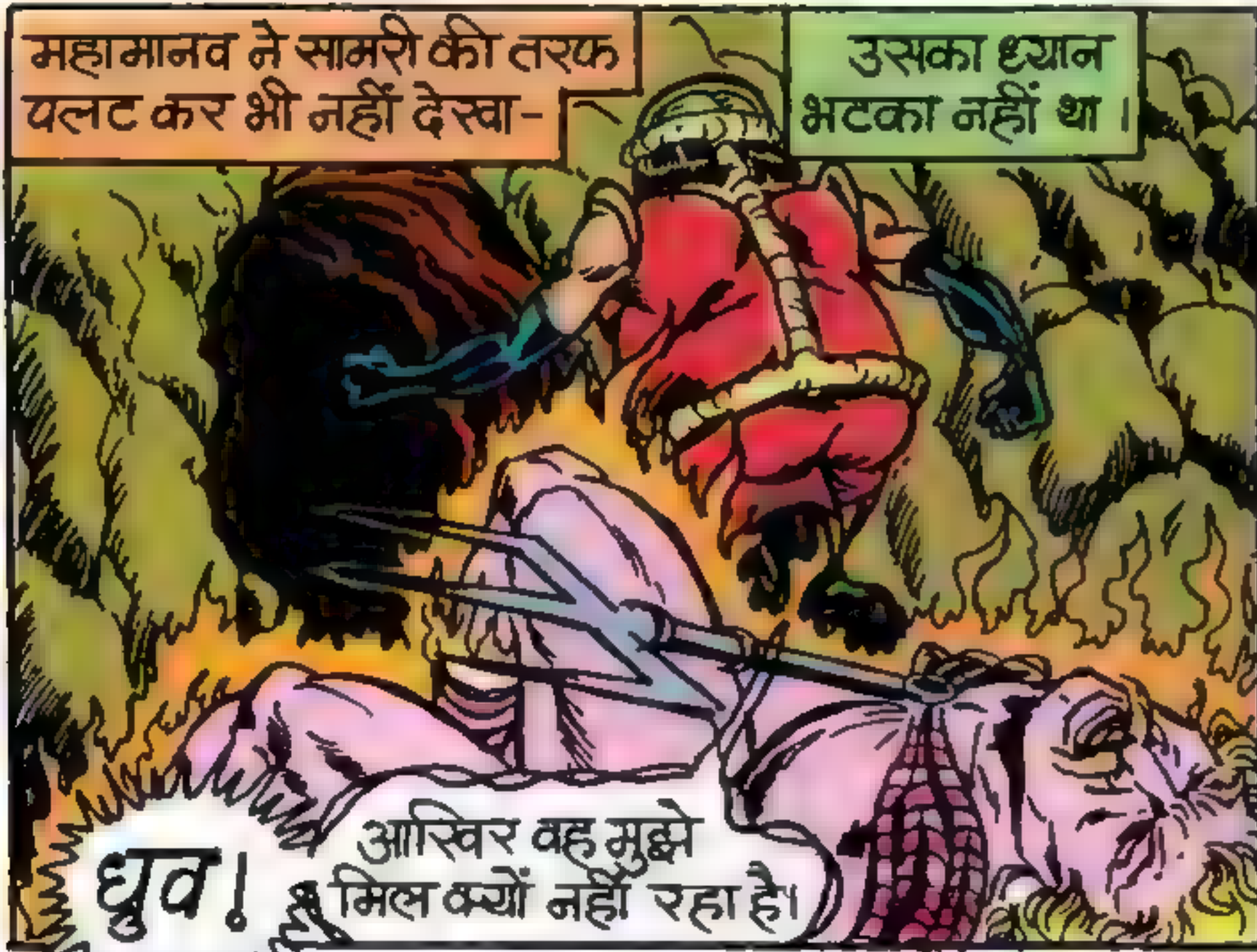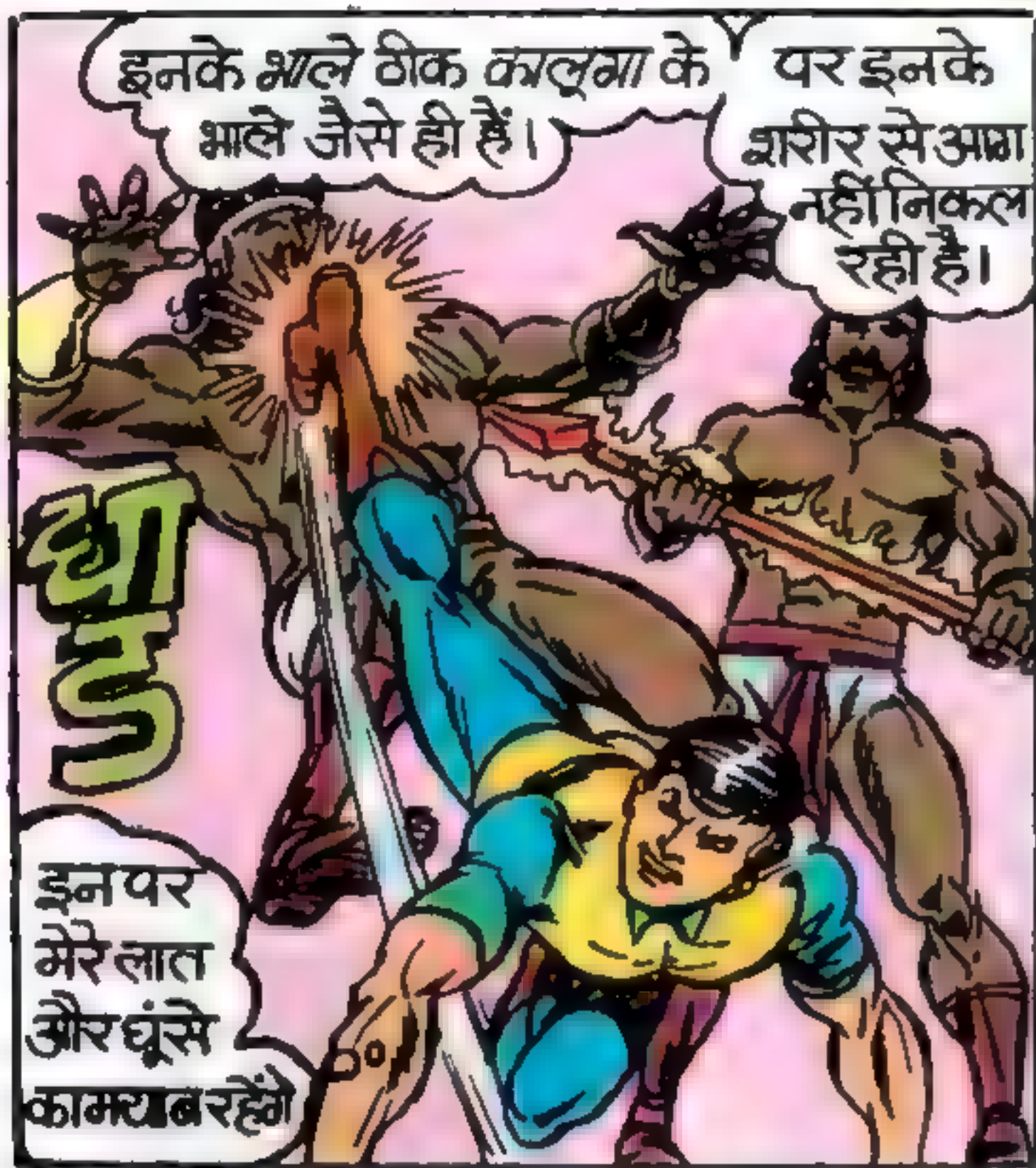
ओह! लेकिन क्या यहां पर मेहमान का स्वागत ऐसे ही किया जाता है?
नहीं! इन दोनों का दिमाग इस वक्त एक शैतानी ताकत के कब्जे में है।
इसलिए ये ऐसी हरकत कर बैठे।
शैतानी ताकत!
कैसी शैतानी ताकत?
मेरे साथ आओ!
मैं तुमको बताता हूं।
ध्रुव के लिए रहस्यों के कई पर्दे खुलने वाले थे।
और चंडकाल के लिए उसकी किस्मत-
सामरी!
सामरी बेहोश पड़ा है।
इसको बेहोश कौन कर सकता है?
पर यह तो मेरी लॉटरी लग गई।
इस वक्त इसके दिमाग पर काबू पाना बच्चों का खेल है।
बेहोश और असहाय सामरी का सिर चंडकाल के मानस रूप से घिर गया।
और सामरी उठ खड़ा हुआ-
उसके मुंह से चंडकाल का अट्टहास गूंजा।
हा हा हा हा
अब सामरी मेरे वश में है।
और अब मैं ज्वाला को वश में करके उसमें नहाऊंगा।
फिर मुझे पूरा ब्रह्मांड मिलकर भी नहीं रोक सकेगा।
हा हा हा! हा हा हा!
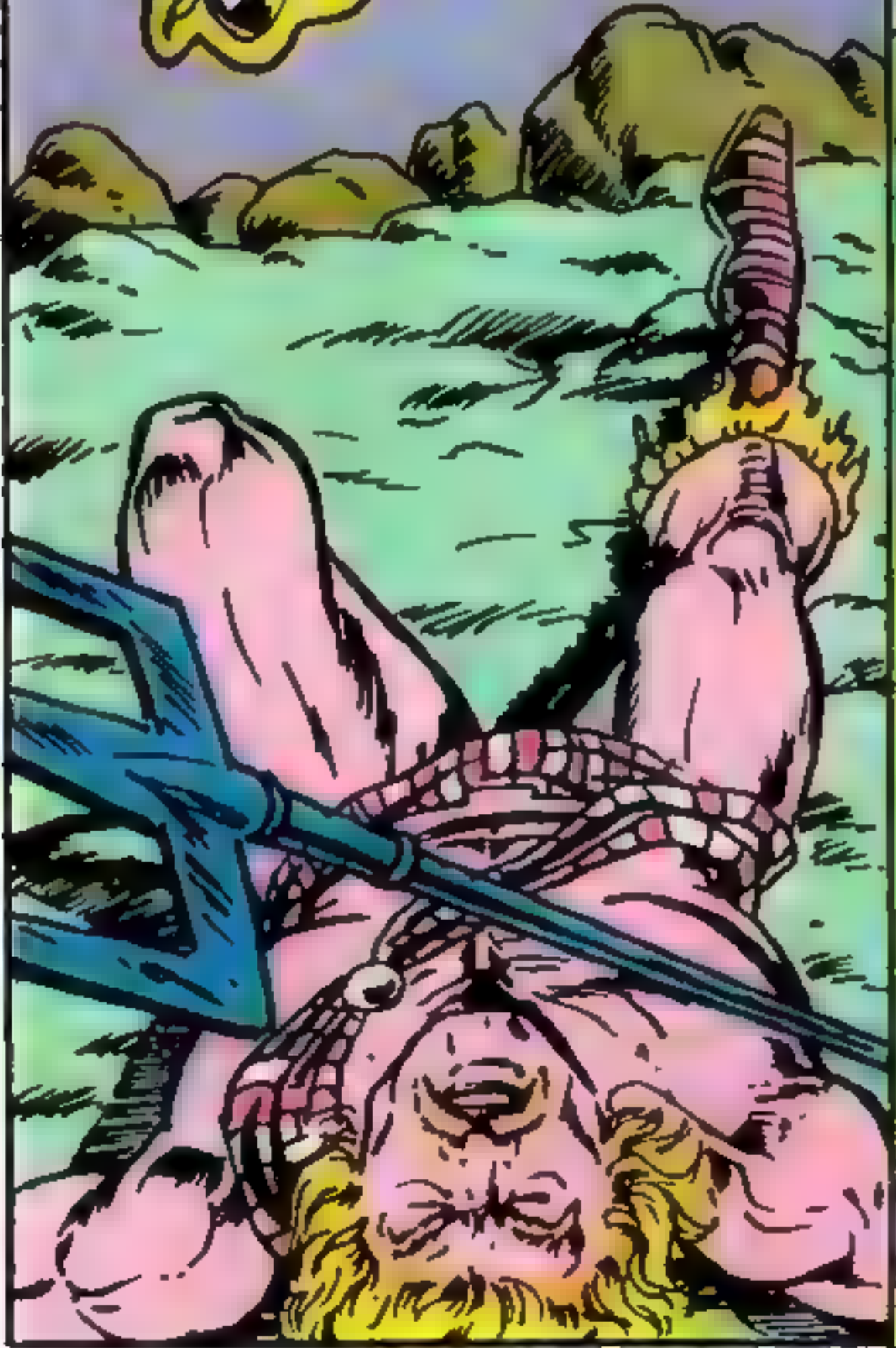
ध्रुव के कानों तक यह अट्टहास नहीं पहुंचा-
हम लोग यक्ष हैं ध्रुव! और इस पर्वत पर तब से रहते हैं जब यह पर्वत ज्वालामुखी नहीं था।
इस जगह का नाम ज्वालोक है।
पर यह 'सामरी की ज्वाला' क्या है?

यह ज्वाला देवताओं का वरदान है। हमारी सारी खुशियों का स्रोत!
इससे निकलने वाली रहस्यमय ऊर्जा हमको हर चीज से बचाकर रखती है।
बाहरी दुनिया की नजर से भी।

पर इस ज्वाला को सामरी की ज्वाला क्यों कहते हैं?
क्योंकि सामरी ही इस ज्वाला का पहरेदार है।
सिर्फ वही इस ज्वाला को नियंत्रित कर सकता है।
उसके नियंत्रण के कारण ही यह ज्वाला जलाने के बजाय हमारी रक्षा करती है।

पर इसके बीच में मैं कहां आता हूं?
हमारे ज्वालोक की शांति भंग हो गई है।
एक राक्षस चंडकाल इस ज्वाला को पाना चाहता है।
उसने इस लोक के लगभग आधे प्राणियों के मस्तिष्क को अपने वश में कर रखा है।

और यह संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।
अगर उसने सामरी और उसके जरिए ज्वाला पर कब्जा कर लिया तो वह दुष्ट अजेय हो जाएगा।
ज्वाला समाप्त हो जाएगी।
हम भी!
और यह संसार भी।

आप लोग मुझसे क्या मदद चाहते हैं?
चंडकाल को पिछले सैकड़ों वर्षों में सिर्फ एक ही व्यक्ति ने मात दी है।

और वह व्यक्ति...

...तुम हो, ध्रुव !

अगर उसको कोई दुबारा मात दे सकता है,

तो सिर्फ तुम।

हमने बहुत कोशिश की।

पर चंडकाल के मानस रूप पर कोई भी हथियार बेकार है।

तो क्या नताशा को भूल से मेरे बदले ले आया गया है।

नताशा?

यानि वह लड़की?

नहीं, ध्रुव!

तो फिर क्यों?

सदियों पहले यक्षों और मानवों में विवाह होते थे।

उनसे संतानें भी पैदा हुई थीं।

नताशा भी ऐसे ही एक राजसी यक्ष की वंशज है।

उसकी रगों में राजसी खून बह रहा है।

तो सबरीना से उसकी शक्ल मिलने का यह कारण है?

हां। कुमारी सबरीना बुरी तरह से घायल और बेहोश हैं।

इस वक्त हमको एक ऐसा शासक चाहिए जो राजदंड उठा सके।

राजदंड वही उठा सकता है, जिसकी रगों में राजसी खून हो।

और जिसके हाथ में राजदंड हो, सामरी सिर्फ उसी का आदेश मानता है।

यानि नताशा--

अब उनका नाम कुमारी तन्वी है। होश में आने के बाद वे अपनी पिछली जिंदगी भूल चुकी होंगी।

उनको सिर्फ यही याद रहेगा कि वे यक्षों की राजकुमारी हैं।

आंऽऽह!

तभी ध्रुव चीख उठा।

उसके मस्तिष्क में जैसे कई बम एक साथ फट पड़े।

महामानव ने ध्रुव को ढूंढ लिया था।
आहा! जिसको मैं पूरी दुनिया में तलाश कर रहा था, वह तो मेरे बगल में ही मौजूद था।
आह! न जाने एकाएक मुझे क्या हो गया था।
अपने आपको संभालो, ध्रुव।
इस समय हमको तुम्हारी जरूरत है।
मैं तैयार हूं! पर मेरी एक शर्त है।
नताशा को फिर पहले जैसा...
ध्रुव को अपने पैरों के नीचे की धरती कांपती हुई लगी।
सामरी के मुंह से निकल रहा अट्टहास इतना ही भयंकर था।
सामरी!
यह सामरी है?
पर इसके मुंह से चंडकाल की आवाज निकल रही है।
यानि उसने आखिरकार सामरी के दिमाग पर कब्जा पा ही लिया है।
पर कैसे?
सामरी ज्वाला की तरफ बढ़ रहा है।
इसको रोको!
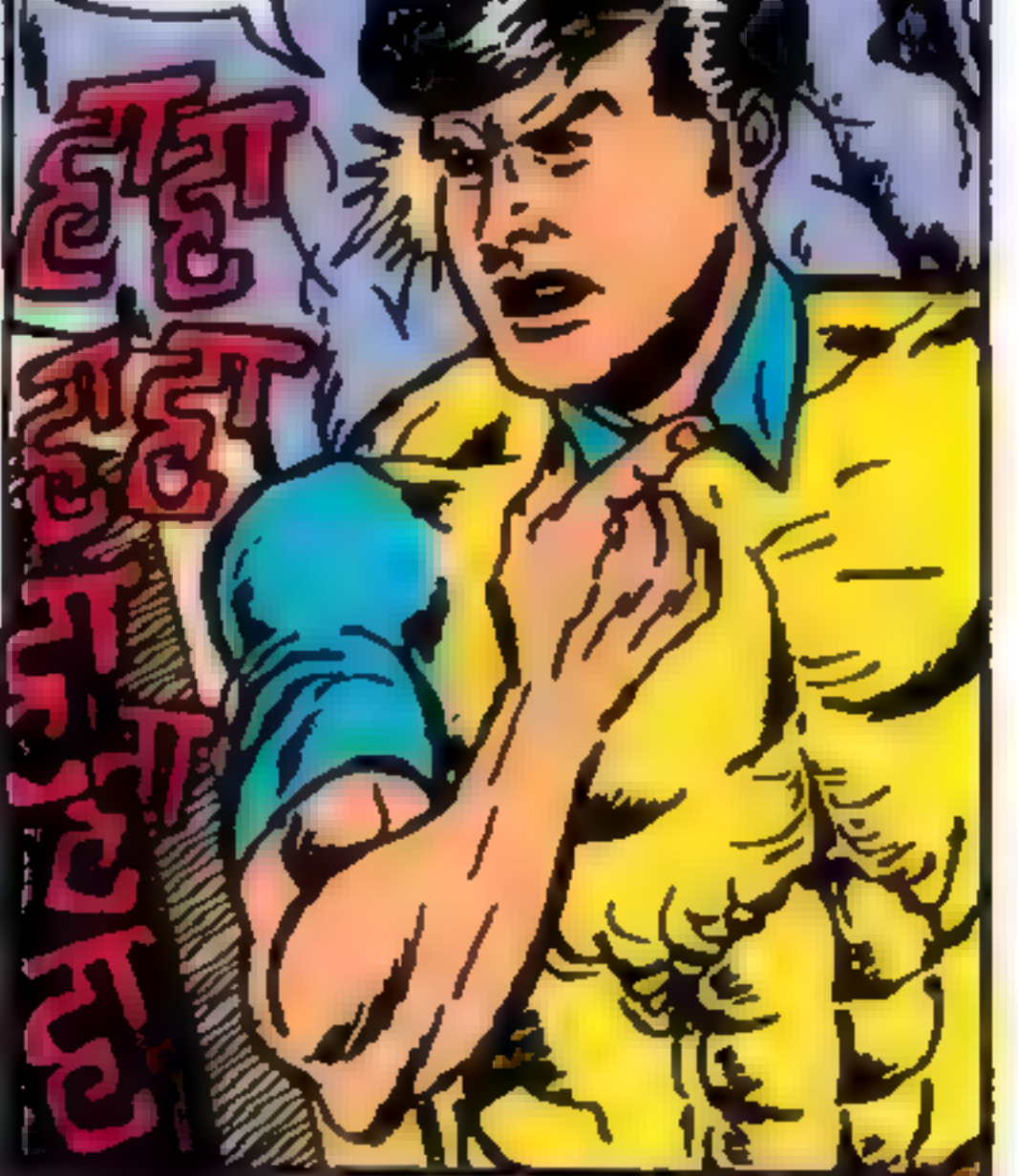
इस वक्त सामरी को रुकने का आदेश स्वरिना या तन्वी ही दे सकती हैं।
और वे दोनों ही इस समय बेहोश पड़ी हैं।
हम चंडकाल को ज्वाला में नहाने से नहीं रोक सकते।
कुछ देर के लिए तो रोक ही सकते हैं, धन्वन्तरी।
ध्रुव ने अंदाजा लगा लिया था कि सामरी का अगला कदम कहां पड़ेगा।
स्वर्र्ड़ स्वड़
और उसका अंदाजा सही था।
धम
आहा! आहा!
सुपर कमांडो ध्रुव!
तुमने तो दूर जाती मौत को आवाज देकर बुला लिया।
अब मैं पहले तेरे गर्म-गर्म खून से नहाऊंगा।
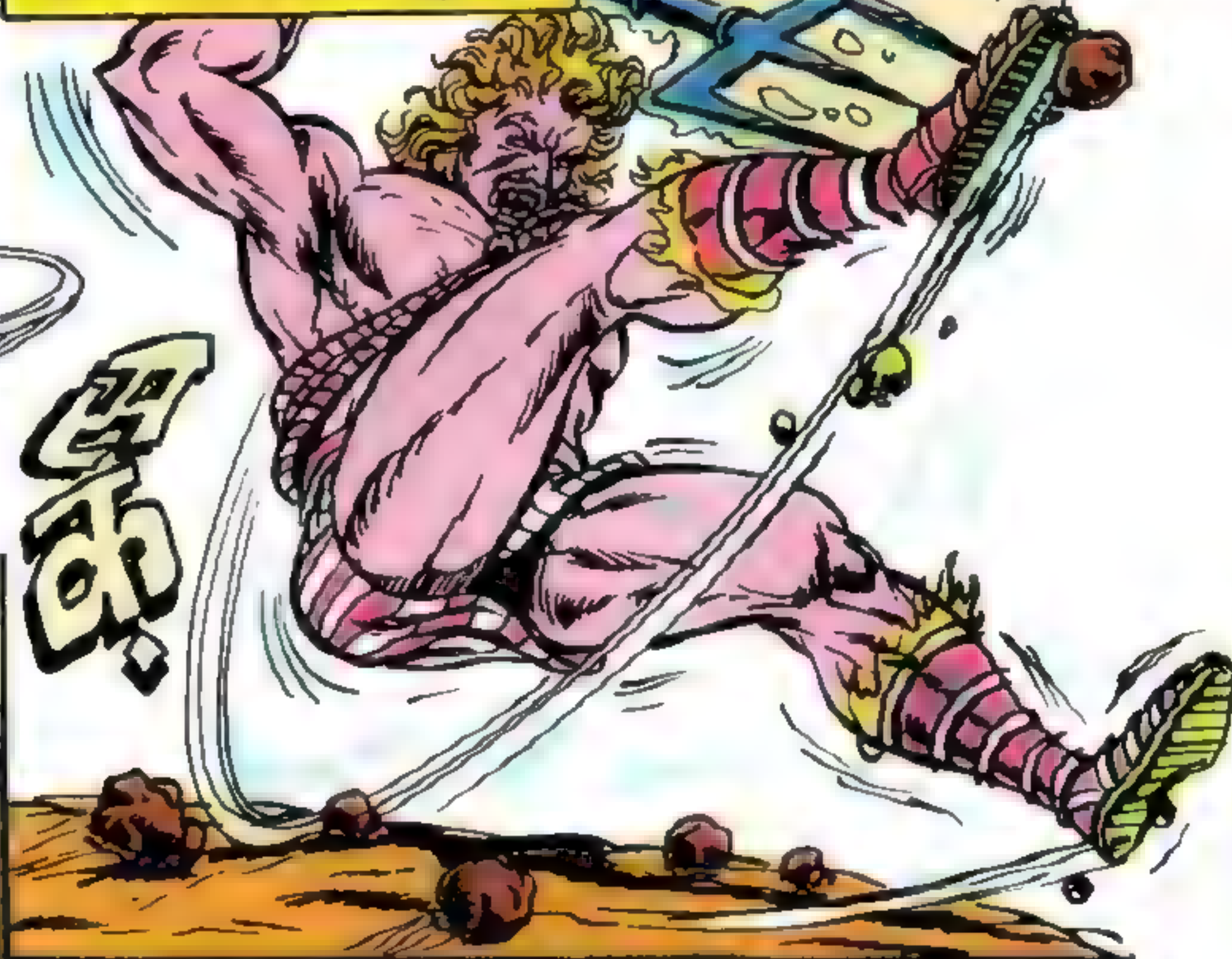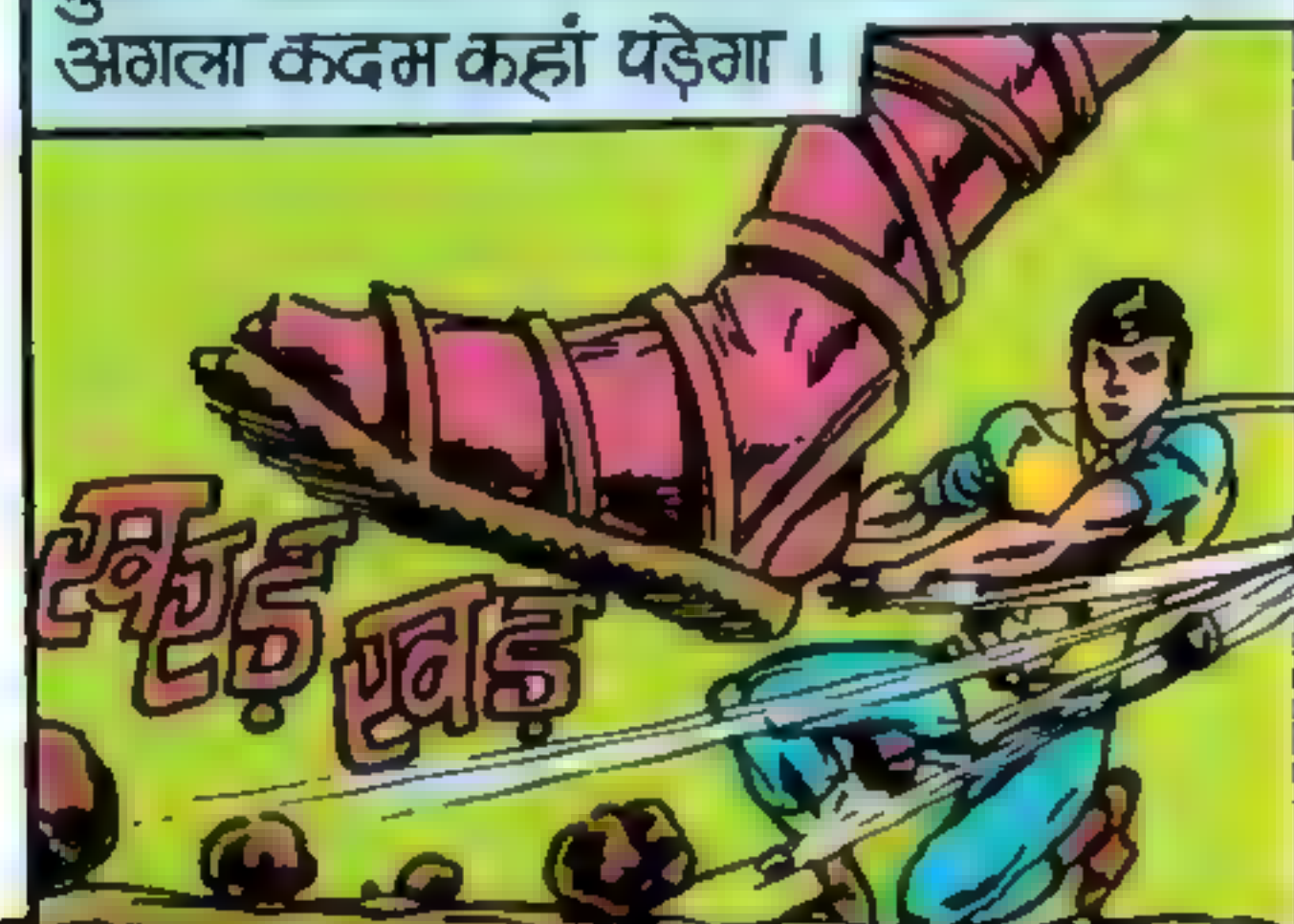
और उसके बाद ज्वाला में।
आग की लपट, ध्रुव की तरफ लपकी।
पर ध्रुव तो गोली की रफ्तार को भी मात दे सकता था।
कड़ाक
लपट, ध्रुव के बगल से होती हुई... चट्टान में ऐसे घुस गई, जैसे नर्म मक्खन में गर्मागर्म चाकू।
हिस्सस्स
चट्टानों को गलाकर सुरंग बनाती हुई-
...ज्वाला समुद्र से टकराई।
छिस्सस्सस!
क्योंकि घाटी समुद्री सतह से नीचे बनी हुई थी।
फिस्सस्सस
सुरंग से पहले भाप निकलकर घाटी में छा गई।

और फिर- समुद्र के पानी की एक मोटी धार भीषण गति से अंदर गिरने लगी।
सामरी के मुंह से चंडकाल की चीख निकली।
यह क्या?
सारी घाटी पानी से भर जाएगी।
और ज्वाला बुझ जाएगी।
चंडकाल के आदेश पर सामरी ने अपना त्रिशूल ताना-
और एक दूसरी लपट जमीन में बड़ा सा छेद करती हुई, जमीन के अंदर समा गई।
कं कं डं मं म म म
ज्वाला की तरफ बढ़ती पानी की धार गढ्ढे में समाने लगी।
इस पर ज्वाला की दूसरी शक्तियों का इस्तेमाल करना पड़ेगा।
यह लड़का बहुत खतरनाक है। इसको रोकना होगा।
इसके दिमाग पर काबू पाना तो बहुत मुश्किल काम है।
क्योंकि इसकी इच्छाशक्ति बहुत जबरदस्त है।
ज्वाला का इस्तेमाल करने से मुझे भी नुकसान हो सकता है।
चंडकाल ने सामरी के मस्तिष्क को टटोला।
और उसे समस्या का हल मिल गया।
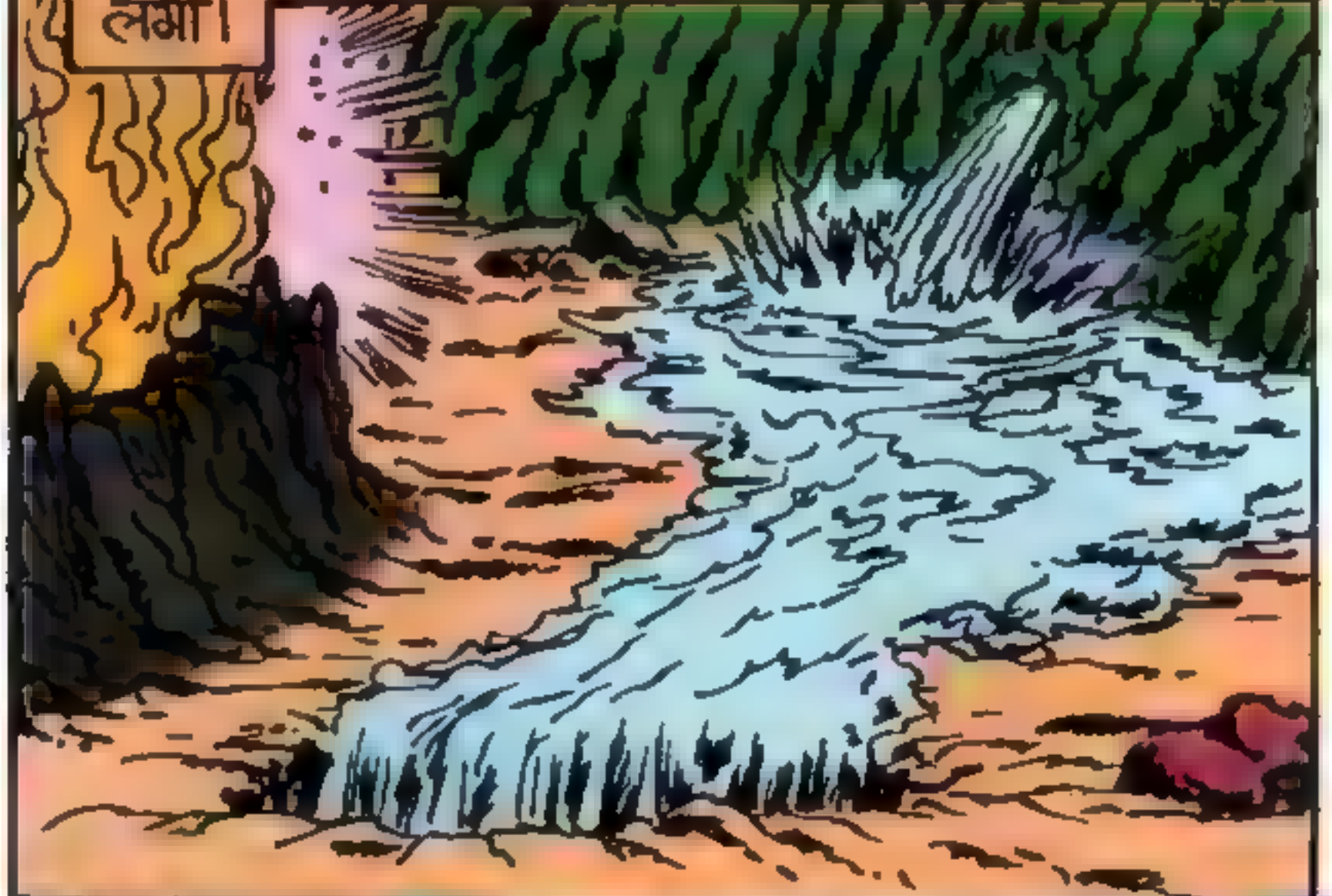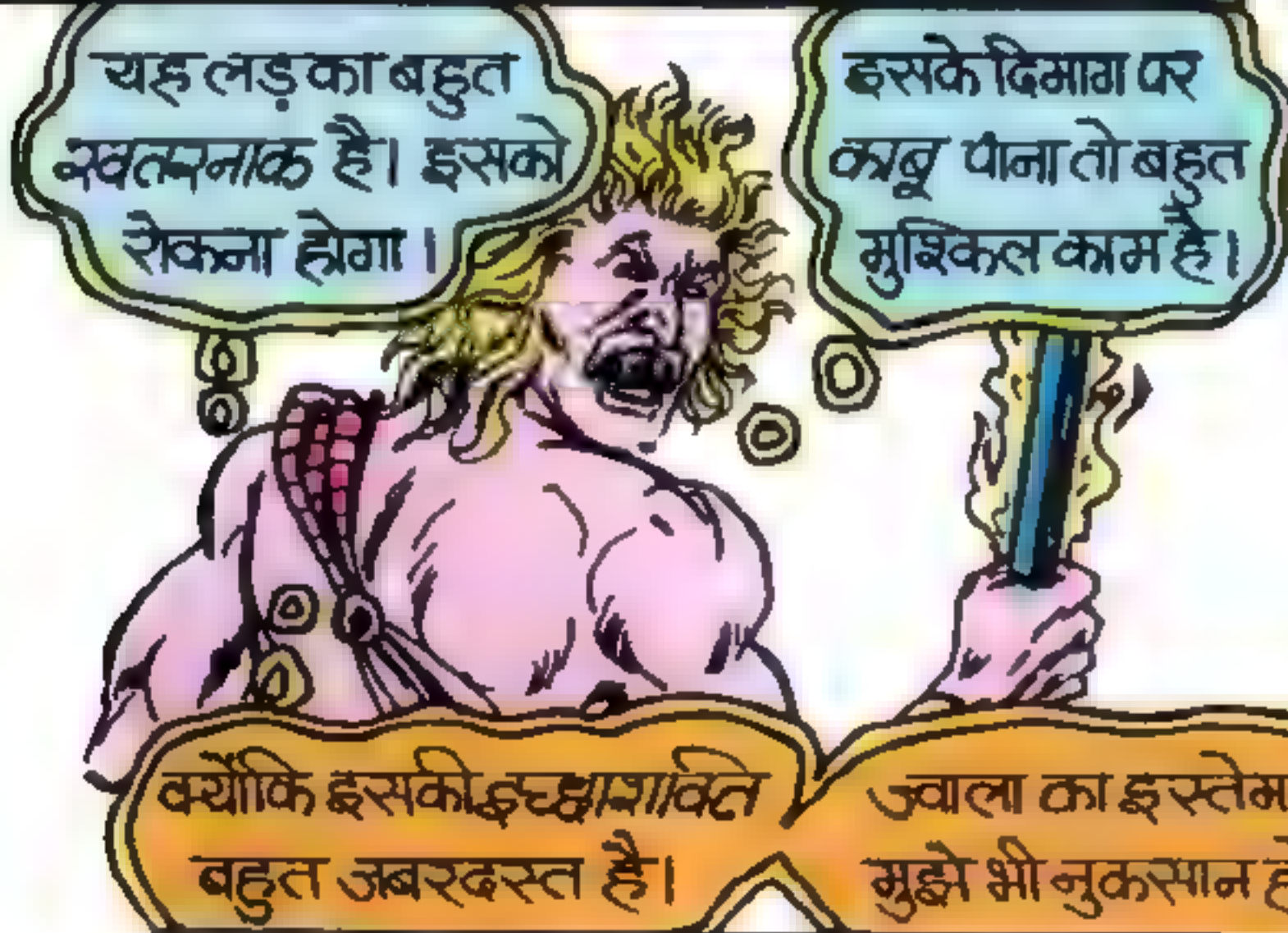
सामरी ने अपने होंठों को गोल किया।
उसके मुंह से आग के छल्ले निकलने लगे।
फ़ू ऊऊऊऊ
ध्रुव का शरीर आग के छल्लों की एक दीवार में कैद होने लगा।
तू इससे बाहर नहीं निकल सकता!
अब ये छल्ले और संकरे होते जाएंगे।
और इनसे छूते ही तेरा शरीर भस्म हो जाएगा
हा हा। हा हा। हा हा।
यह सही कह रहा है।
ये छल्ले और छोटे होते जा रहे हैं।
मेरा शरीर तो इसकी आंच से ही जलता हुआ सा लग रहा है।
अगर मैं किसी तरह उस चट्टान को पकड़ सकूं तो मैं बच सकता हूं।
पर इतनी ऊंचाई की एकदम सीधी छलांग लगानी मुश्किल है।
अगर यह चट्टान दो-तीन फीट और नीचे होती तो...
एक मिनट। मैं इसकी ऊंचाई को तीन फीट तो कम कर ही सकता हूं।
ध्रुव ने अपनी बेल्ट को कमर पर से खोला।
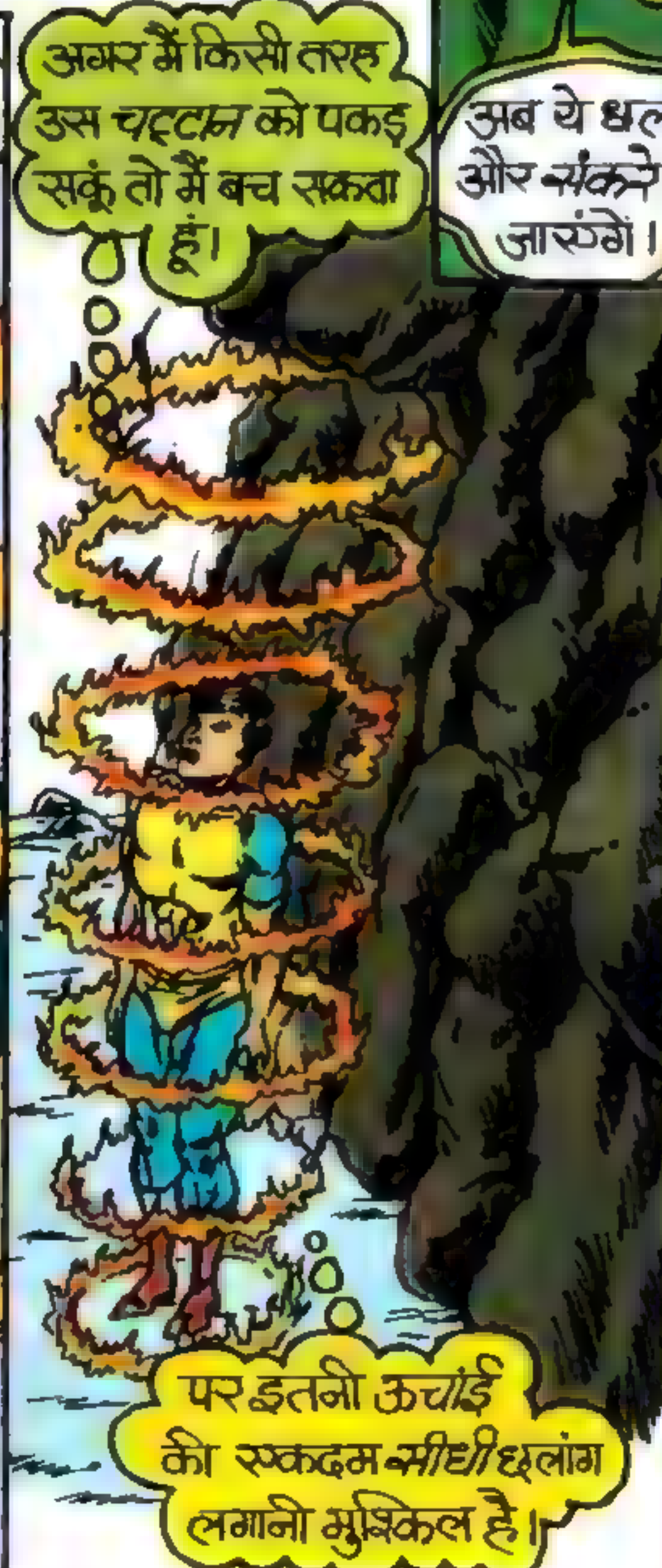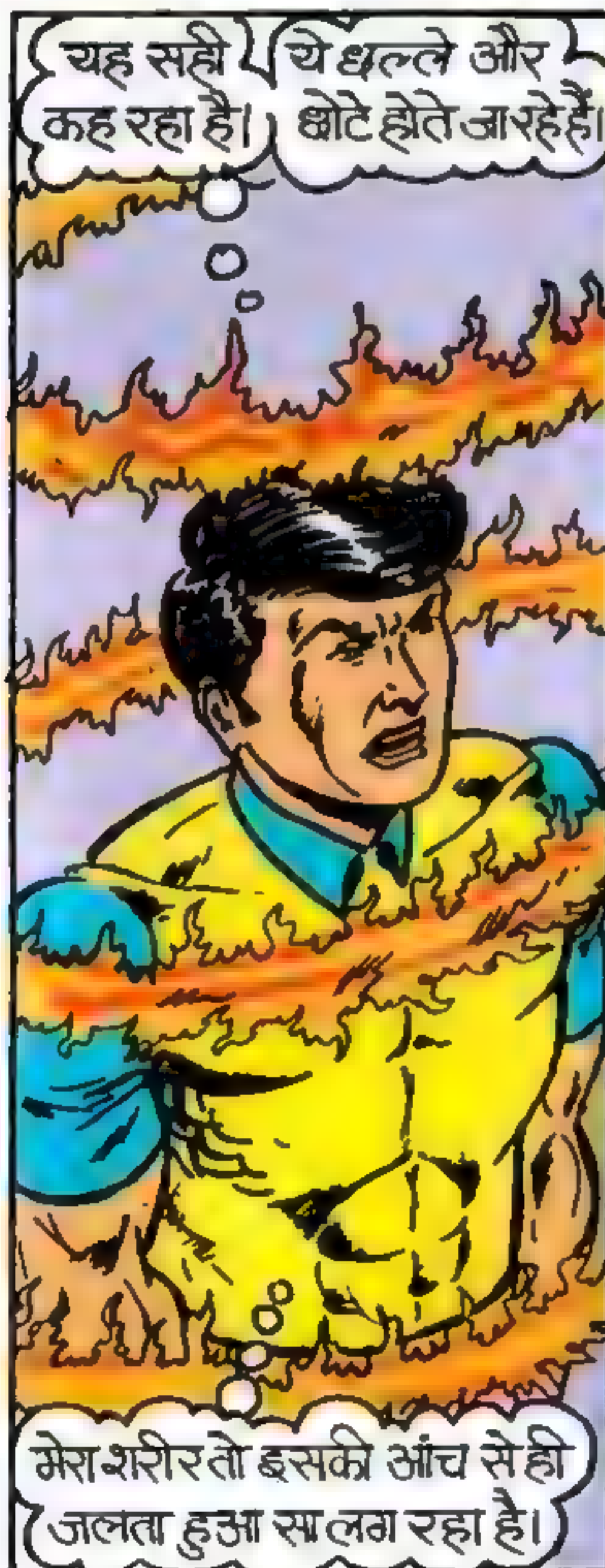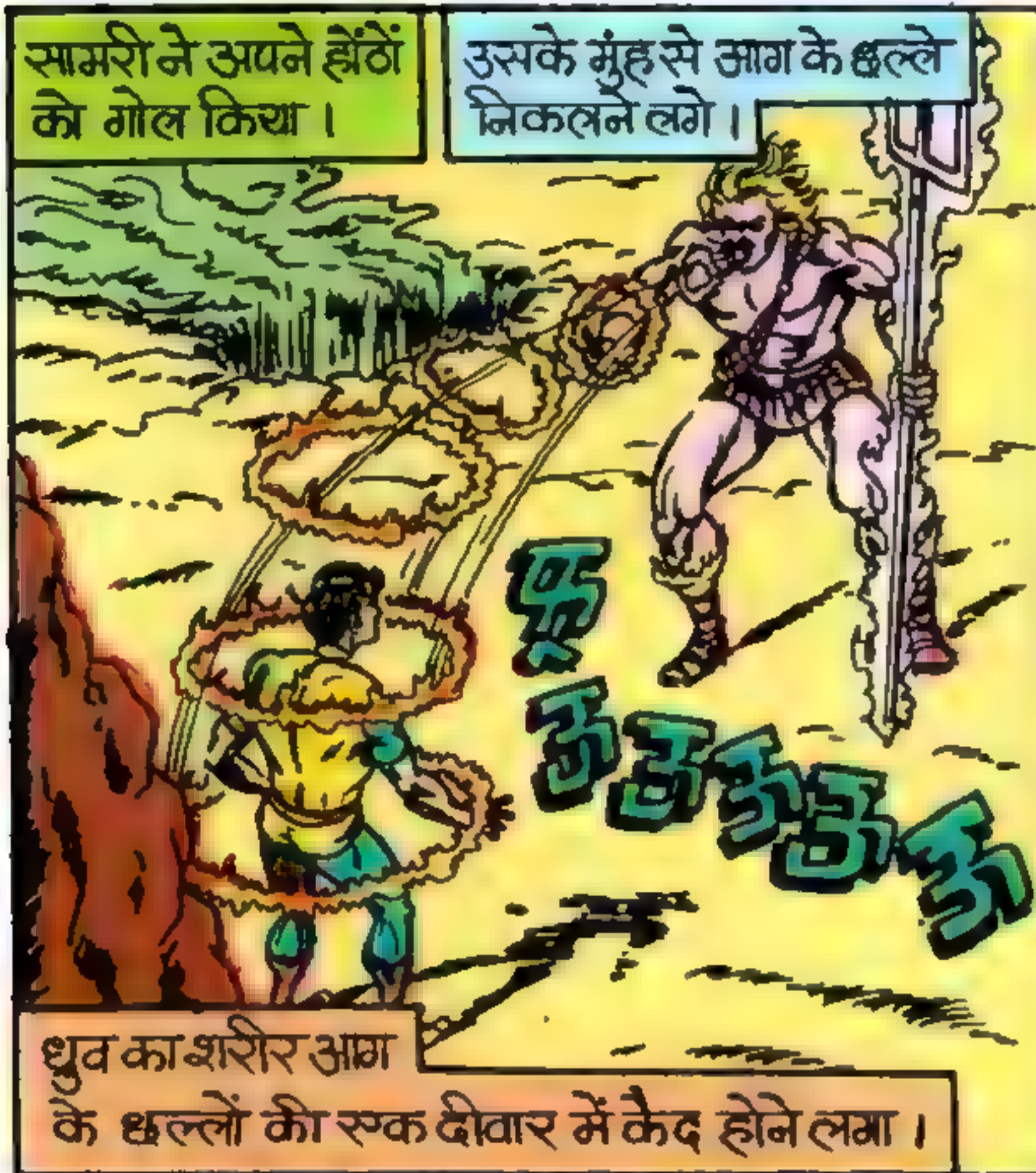
और उसको ऊपर उछाला
एक ही प्रयास का समय था।
छल्ले बदन को छूने ही वाले थे।
और बेल्ट का मजबूत और नुकीला सिरा चट्टान में फंस गया।
बेल्ट का नीचे लटक रहा सिरा ध्रुव की पहुंच के अन्दर था।
और एक तीर की तरह सीधी छलांग में ध्रुव ने बेल्ट को पकड़ लिया।
और सिर्फ दो सेकंड बाद उसका शरीर छल्लों से बाहर था।
ओफ्फ! बाल-बाल बचा।
एक सेकंड की देर और होती तो छल्ले मुझे कस चुके होते।
अरे! यह लड़का तो काबू में ही नहीं आ रहा है।
यानि अब समय आ गया है...
अपनी राक्षसी सेना को बुलाने का।
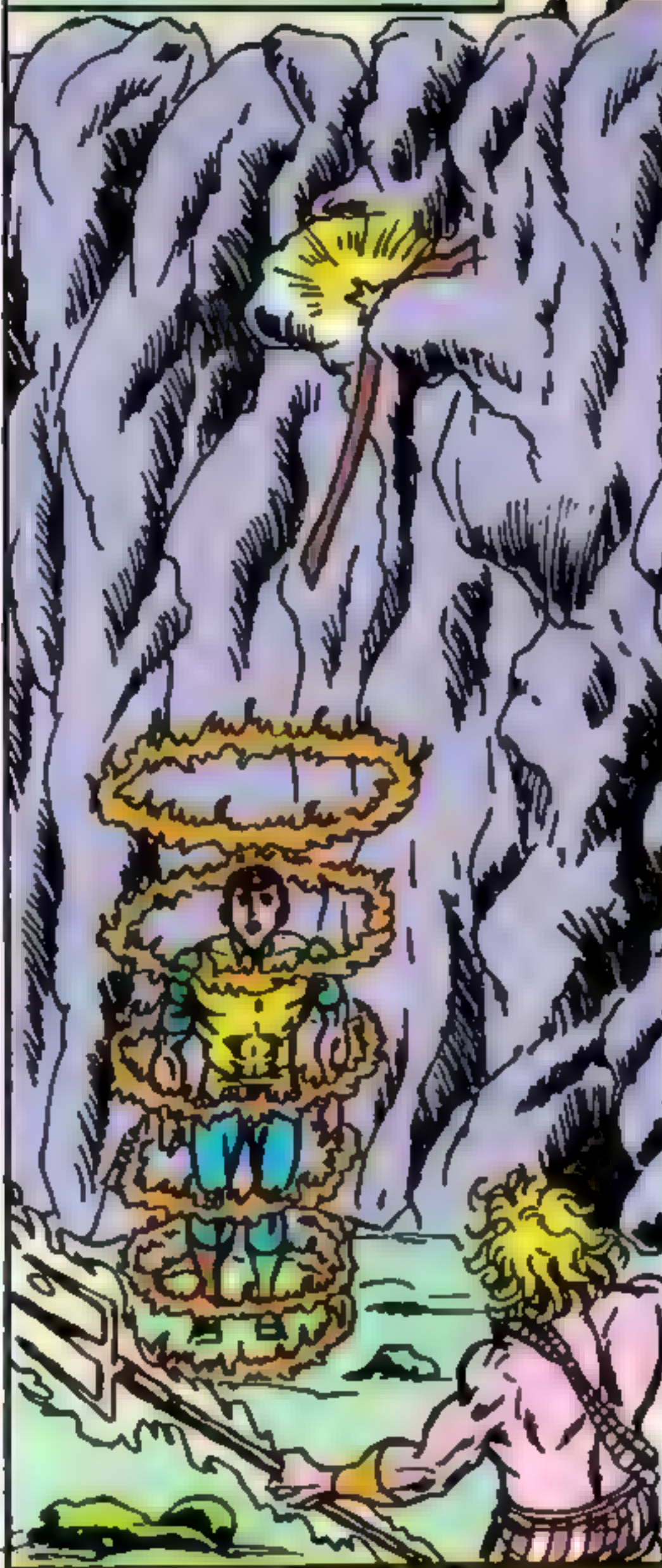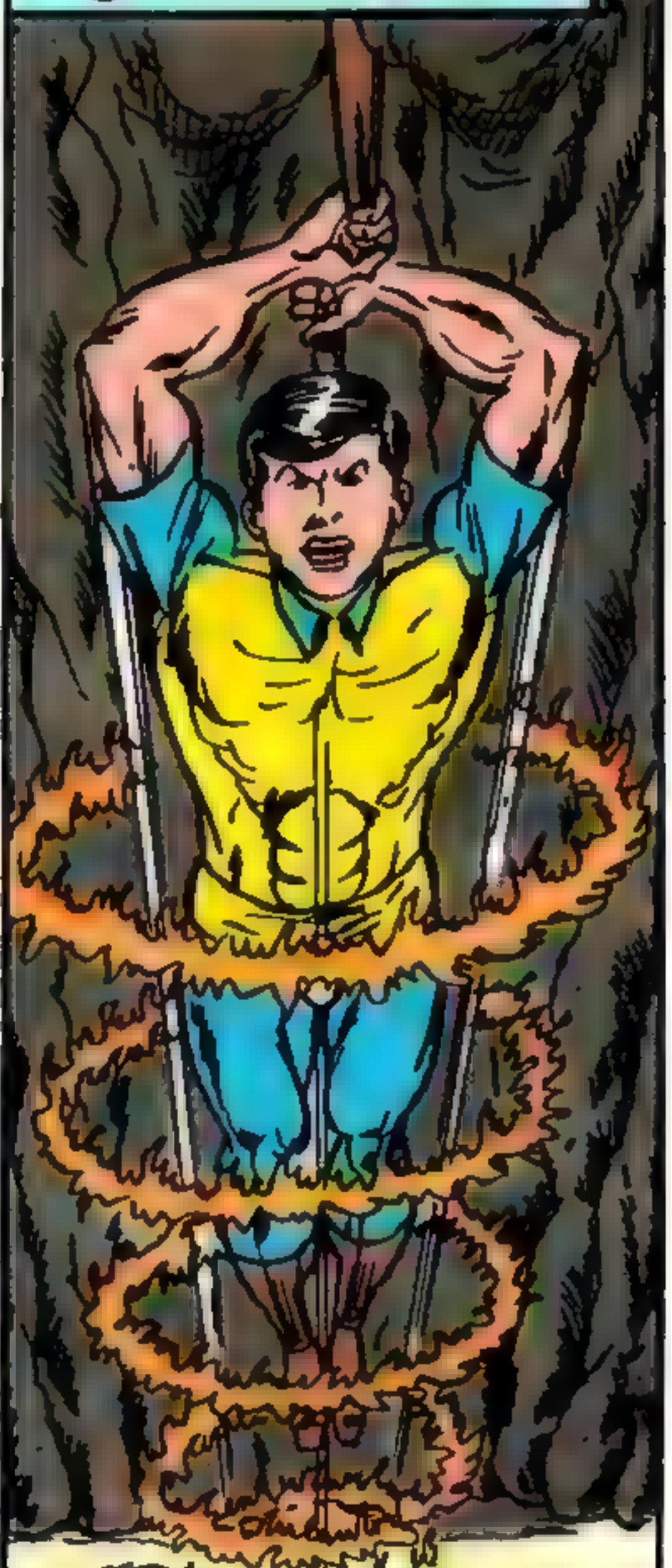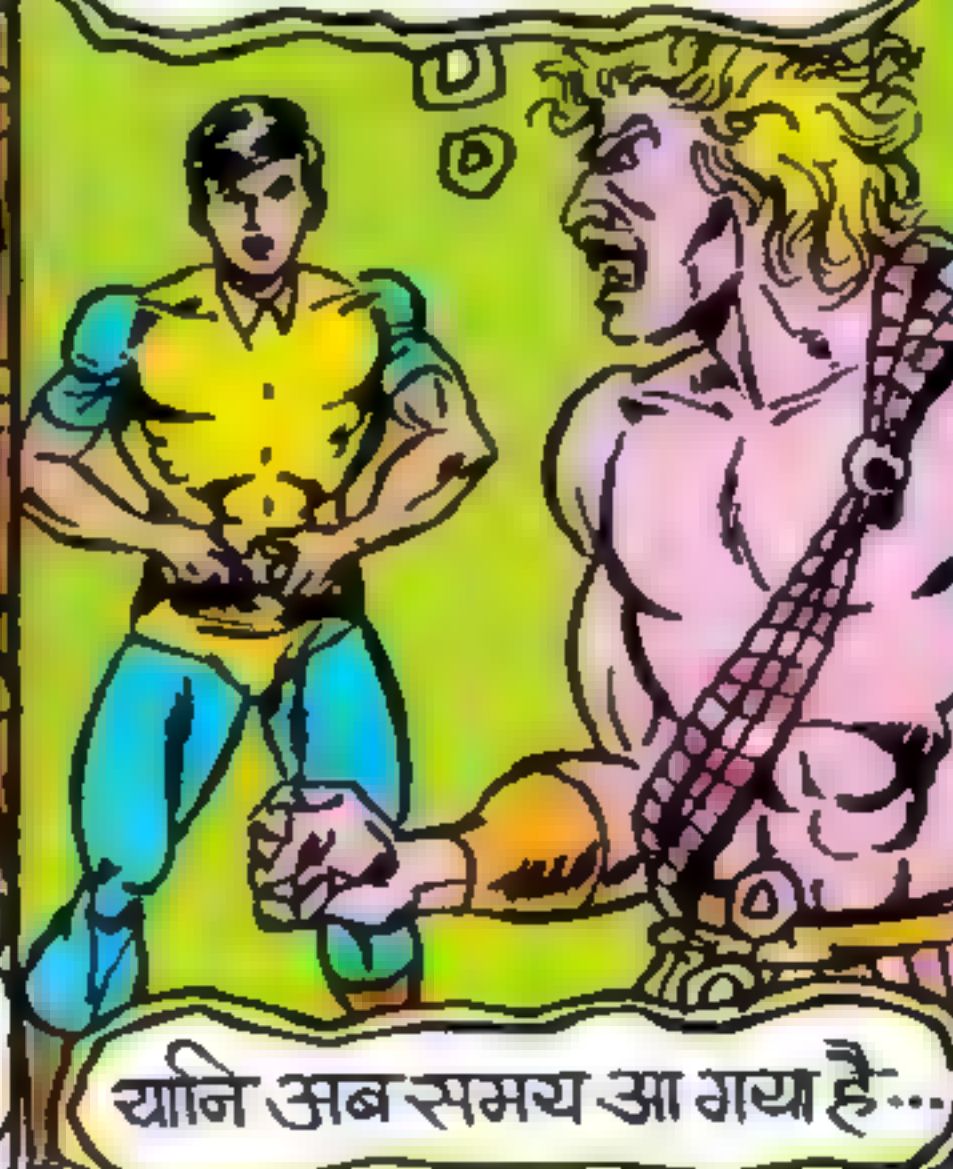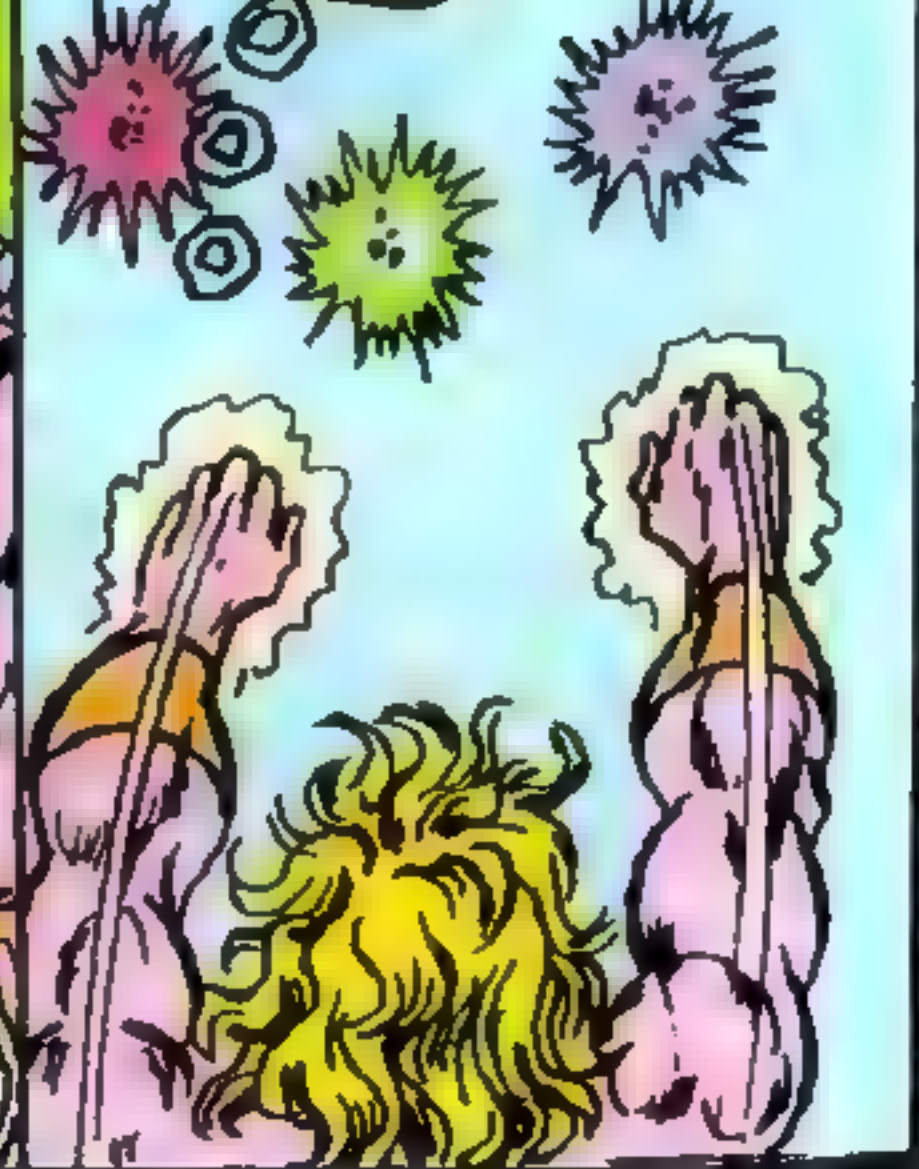
तीन खतरनाक आकृतियां हवा में से प्रकट हो गईं।
पर इस बार ध्रुव उनके लिए तैयार था।
चाहे इंसान हो या शैतान।
अगर मुझे पकड़ नहीं पाए...
...तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे।
और मैं इनको इनके घर 'नर्क' पहुंचाने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही...
अरे!
और-
धाड़
आह!
आश्चर्य है! जब मैं इन पर वार कर रहा हूं, तो इनका शरीर हवा का बना लगता है।
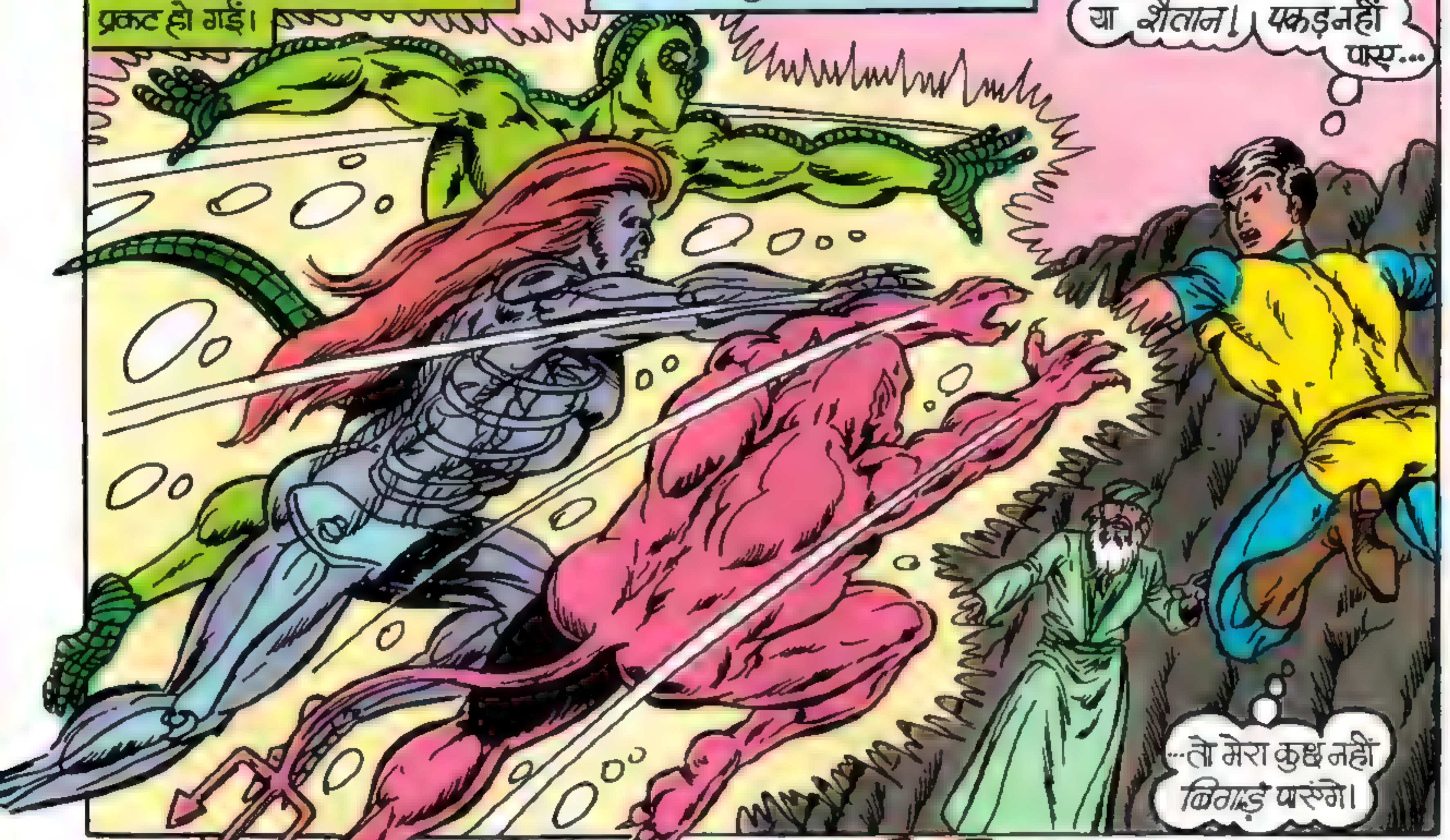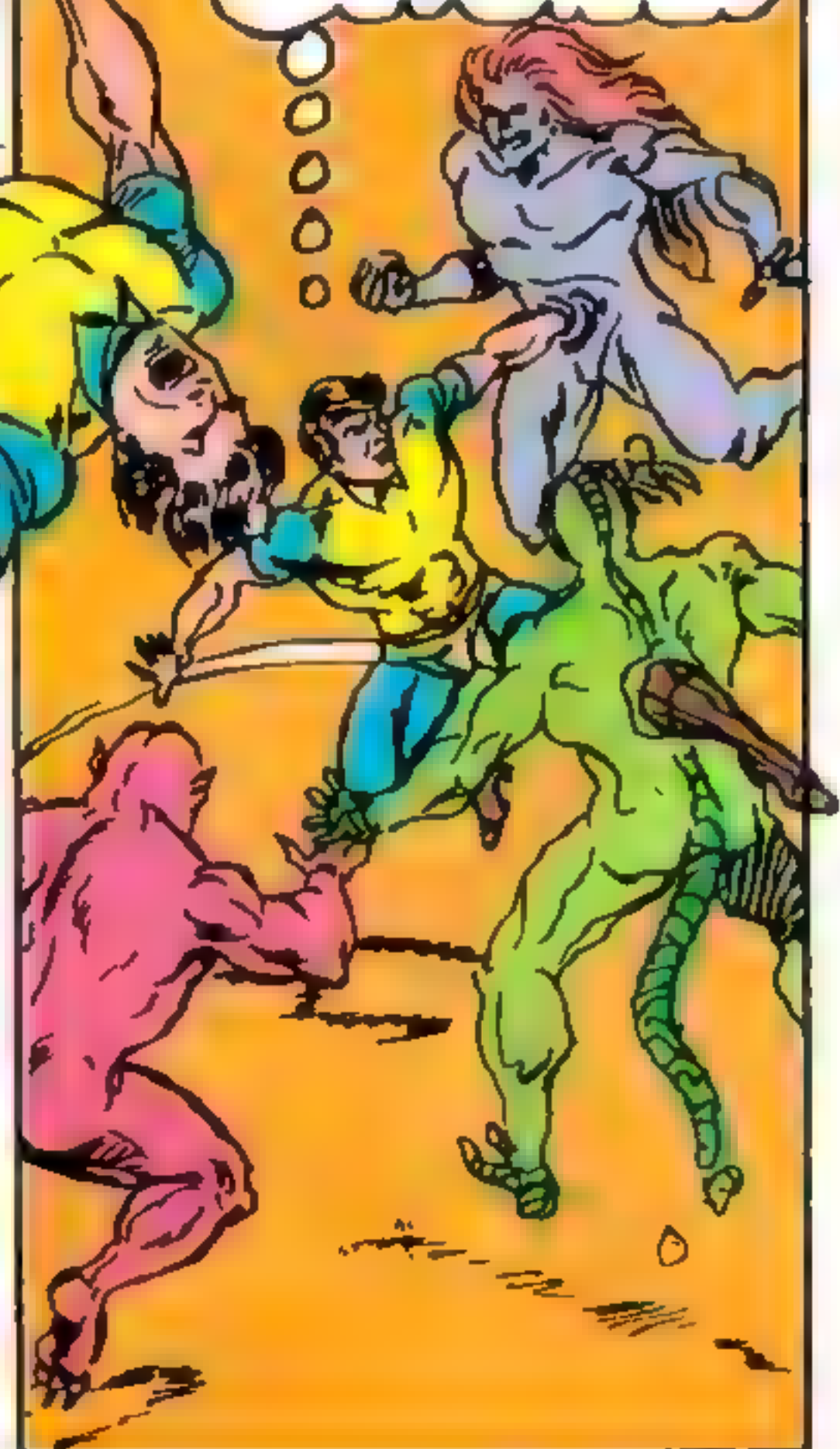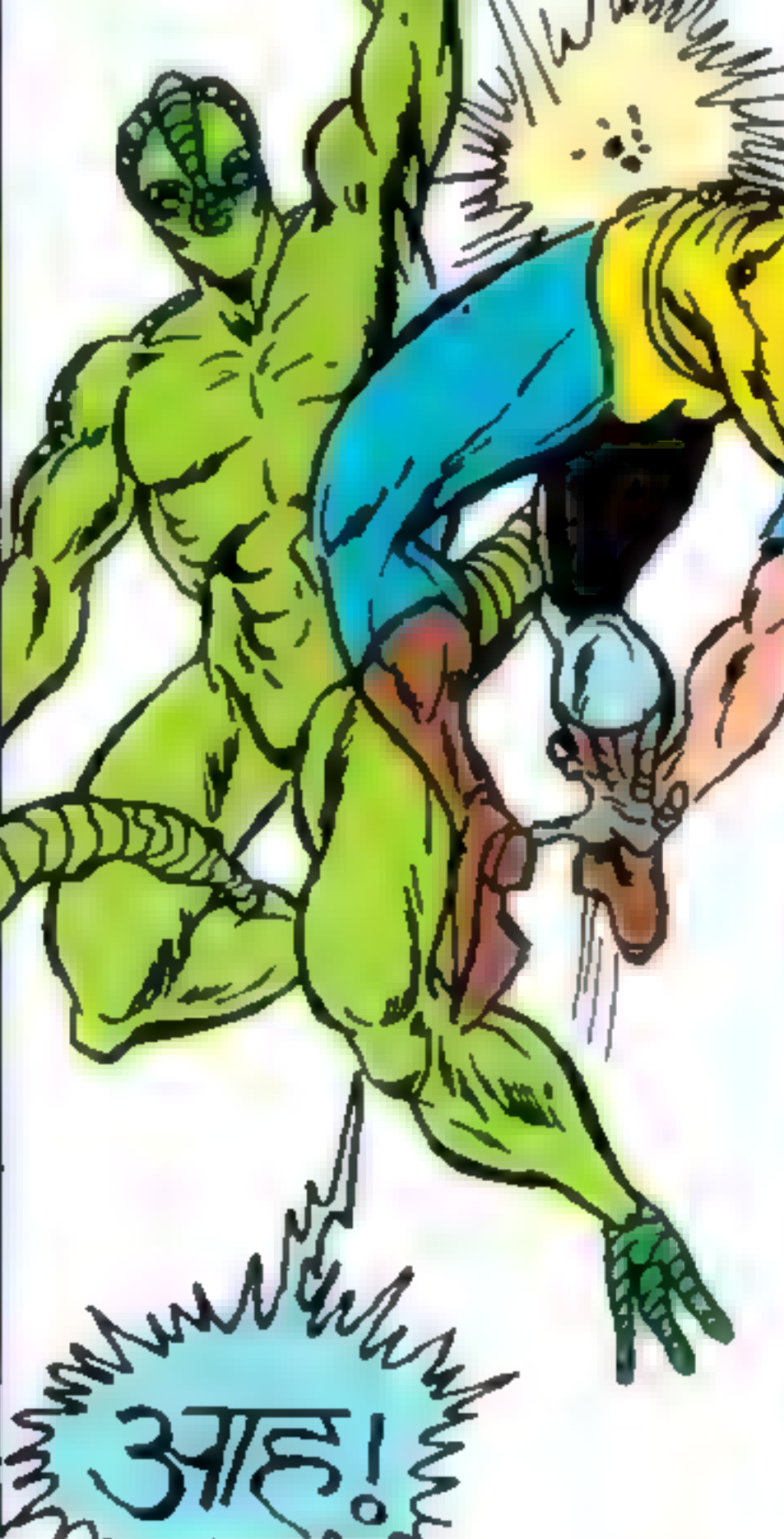
और जब ये मुझे मारते हैं, तो इनका शरीर पत्थर का सा बना लगता है।
यानि ये अपनी इच्छाशक्ति से अपने शरीर का स्वरूप बदल सकते हैं।
पर ऐसे तो ये मुझे पीट-पीट कर खत्म कर देंगे।
और मैं इनको हाथ तक नहीं लगा पाऊंगा।
अब एक ही रास्ता समझ में आ रहा है।
कि इनको अपने शरीर का स्वरूप न बदलने दिया जाए...
और इनकी ताकत का इस्तेमाल इन्हीं के खिलाफ किया जाए।
आह!
मैं और वार नहीं सह सकता।
तड़क
एक बिलियर्ड जैसा खेल शुरू हो गया।
जिसमें गेंद था
ध्रुव!
हा हा हा हा हा
अब ये पूरी तरह से असावधान भी हैं।
यानि अपनी स्कीम को लागू करने का समय आ गया है।
ध्रुव का बदन गेंद की तरह गोल हो गया।
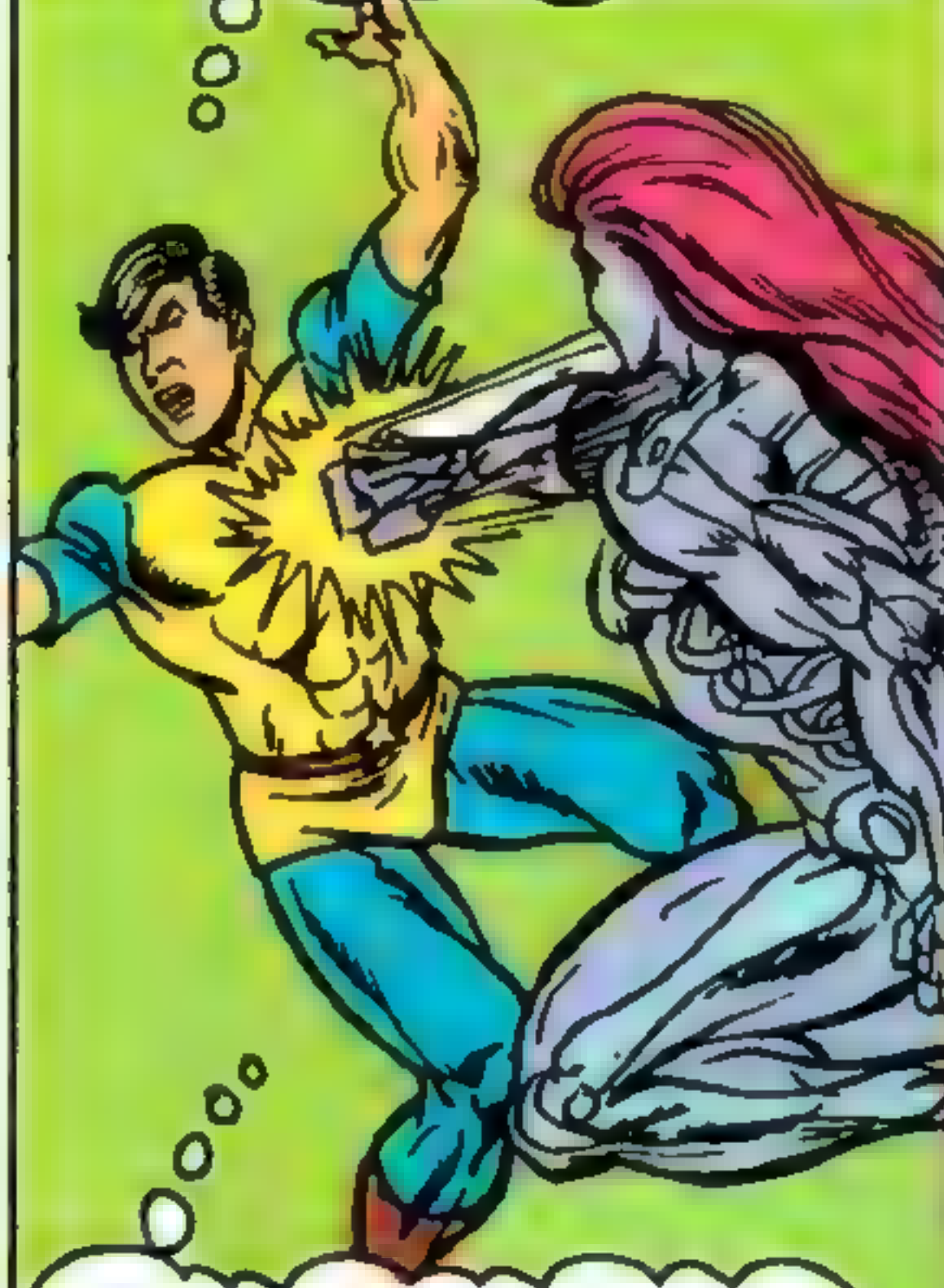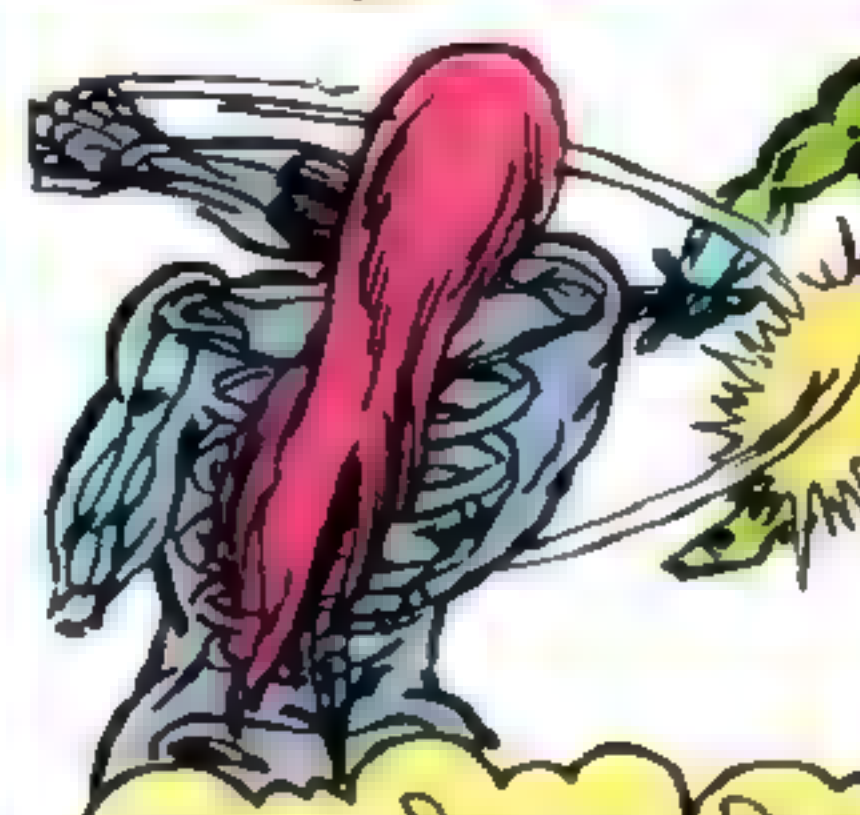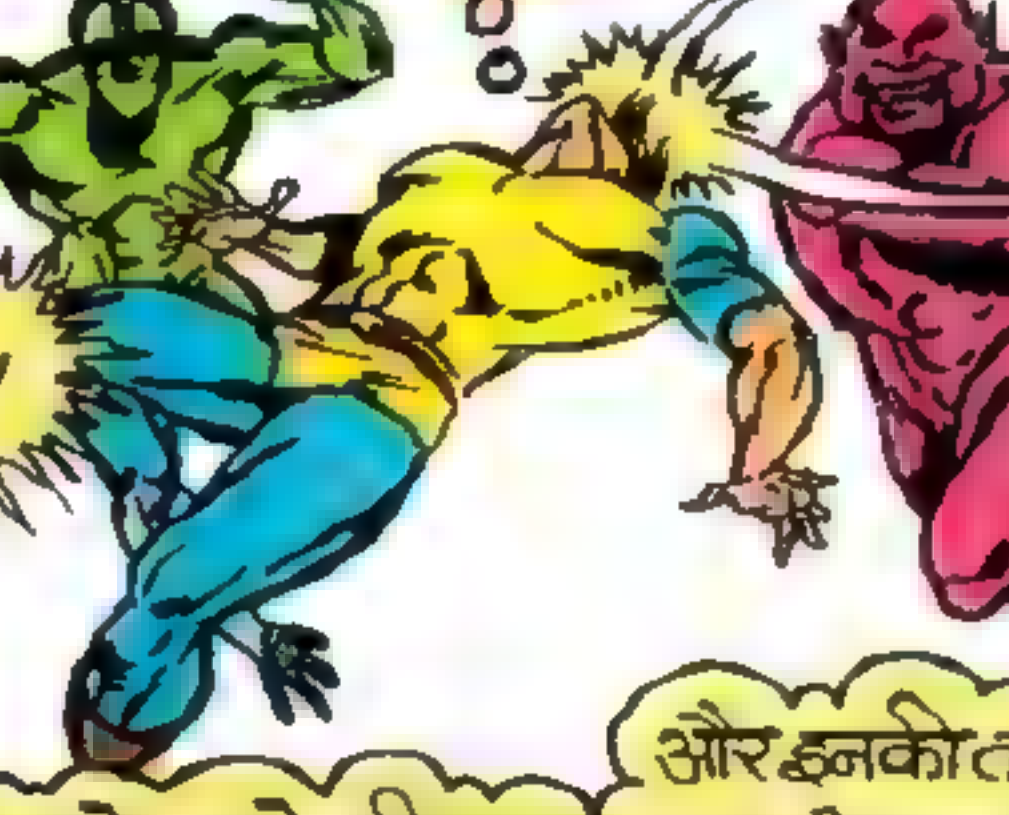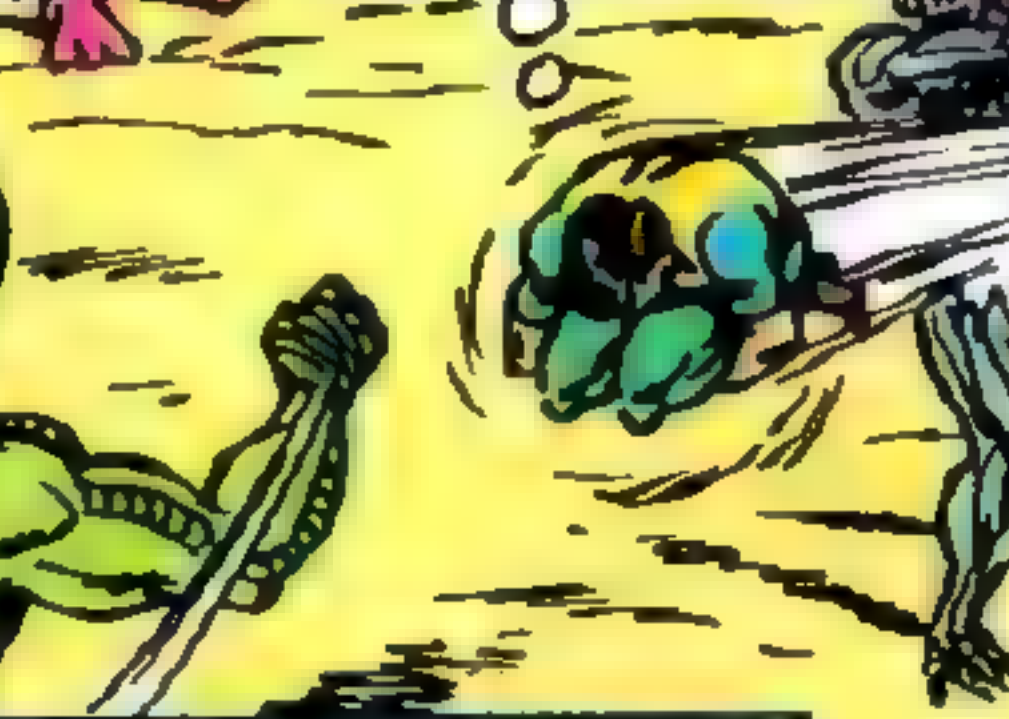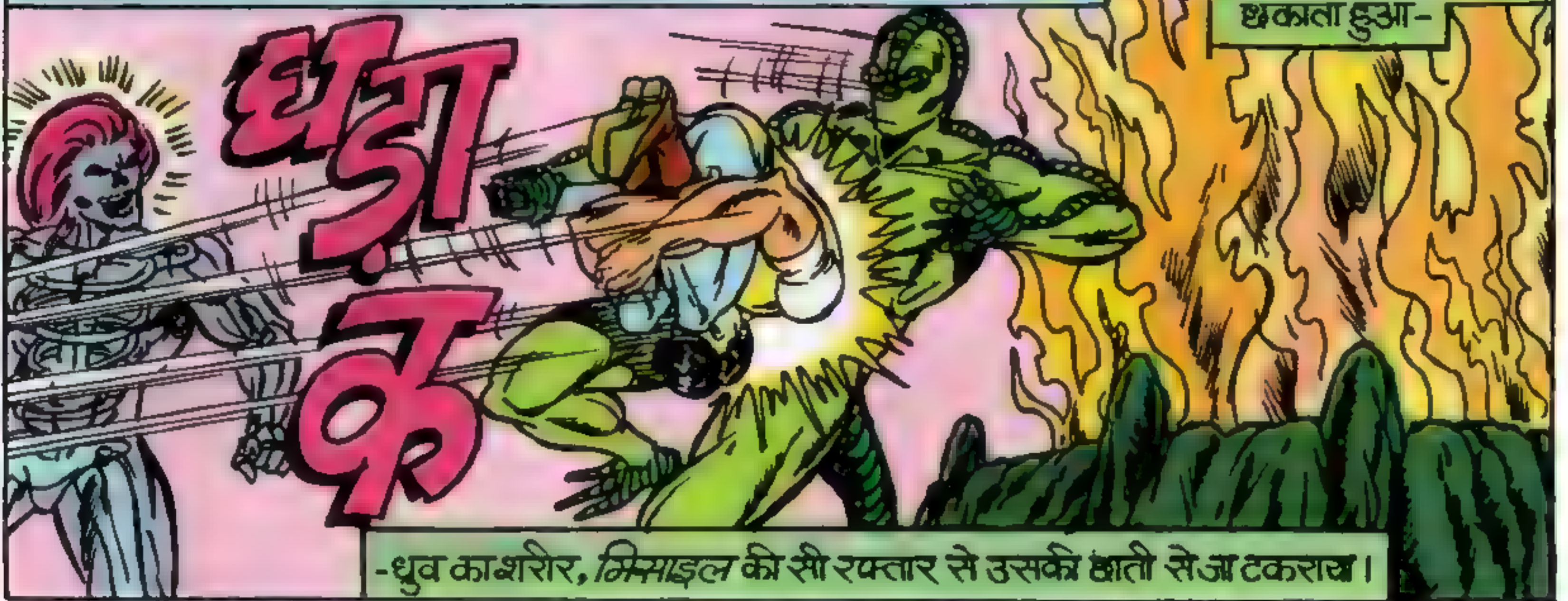
☆ पढ़िए 'प्रतिशोध की ज्वाला'
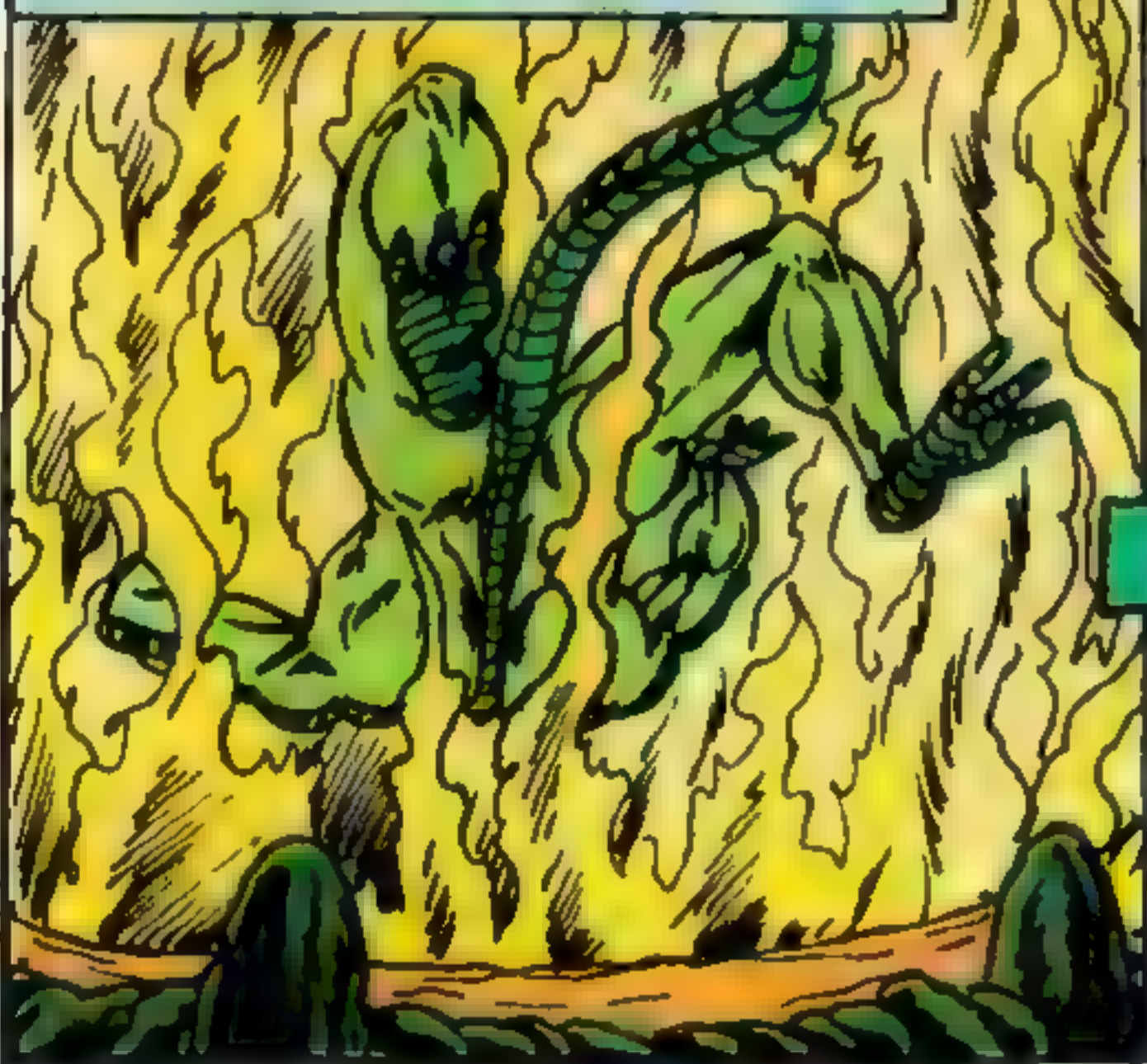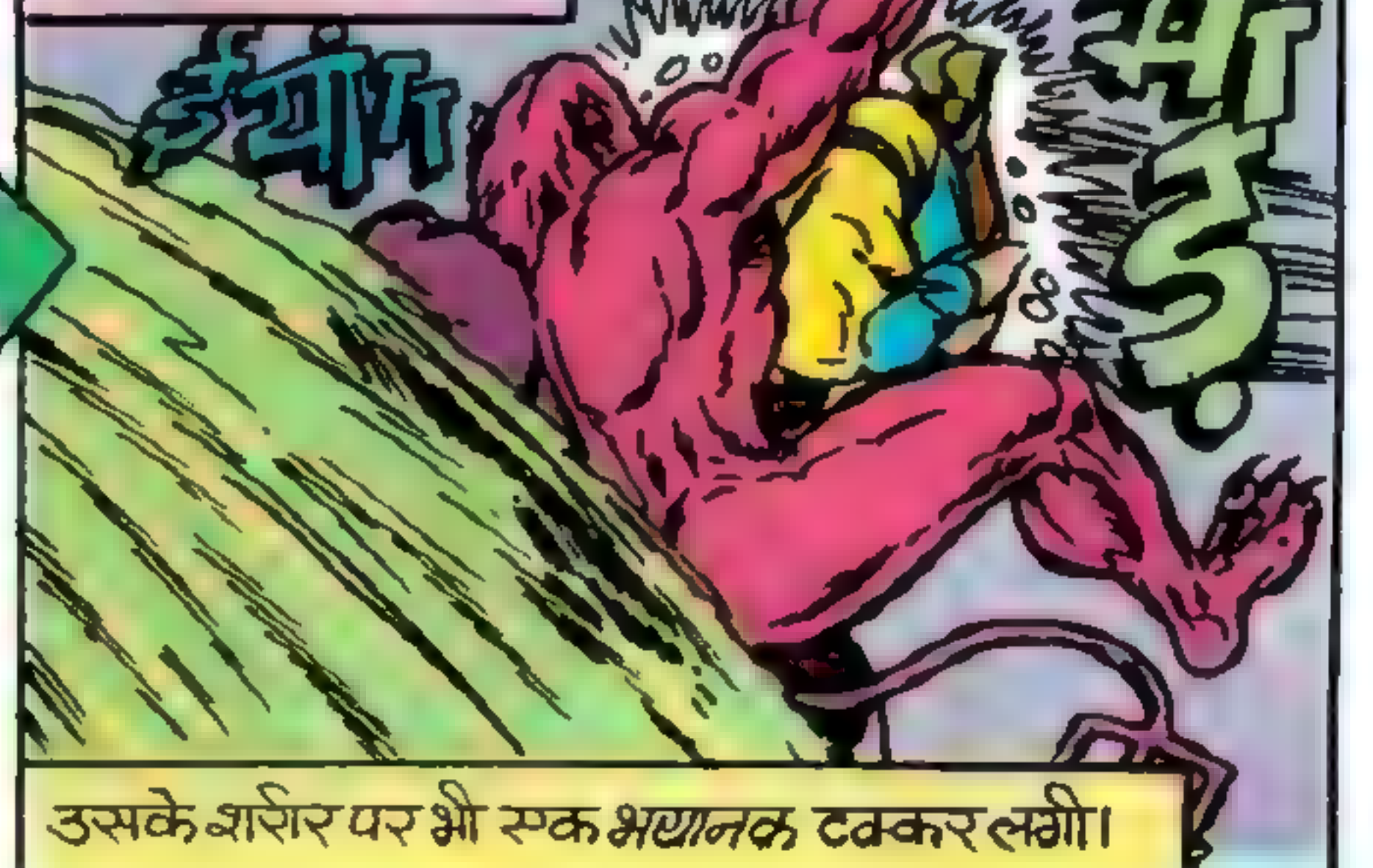
और वह वहां जा गिरा-

जहां पर जाने से वह अब तक बच रहा था।

रहस्यमय रसायनों से घुले, समुद्र के पानी ने शाकाल के पूरे शरीर को मोम की तरह गला दिया।

आईयायं

पर कंकाल को बचने का समय मिल गया था।

ईयाऊऽऽ!

धड़ाक

ध्रुव का दिमाग कुछ पलों के लिए अंधकार में डूब गया।

और कंकाल के शरीर ने एक गाढ़े और लिसलिसे द्रव में परिवर्तित होकर...

तब तक कंकाल का शरीर उसकी नाक और मुंह को ढक चुका था।
ध्रुव का दम घुटना शुरू हो गया था।
पर अब बहुत हो चुका था।
कड़क
एक किरण आकर कंकाल से टकराई और वह गायब हो गया।
महामानव का इस लड़ाई से मनोरंजन तो जरूर हो रहा था।
पर वह किसी और को, ध्रुव की जान लेने का मौका नहीं दे सकता था।
यह खतरनाक प्राणी कौन हो सकता है?
जिसने एक ही वार से कंकाल को विखंडित कर दिया?
महामानव!
यानि मेरा ख्याल सही था महामानव मरा नहीं था।
पर यहां पर कैसे?
अगले ही पल- चंडकाल को समझ में आ गया कि यह प्राणी भी, उसके दुश्मन का दुश्मन है।
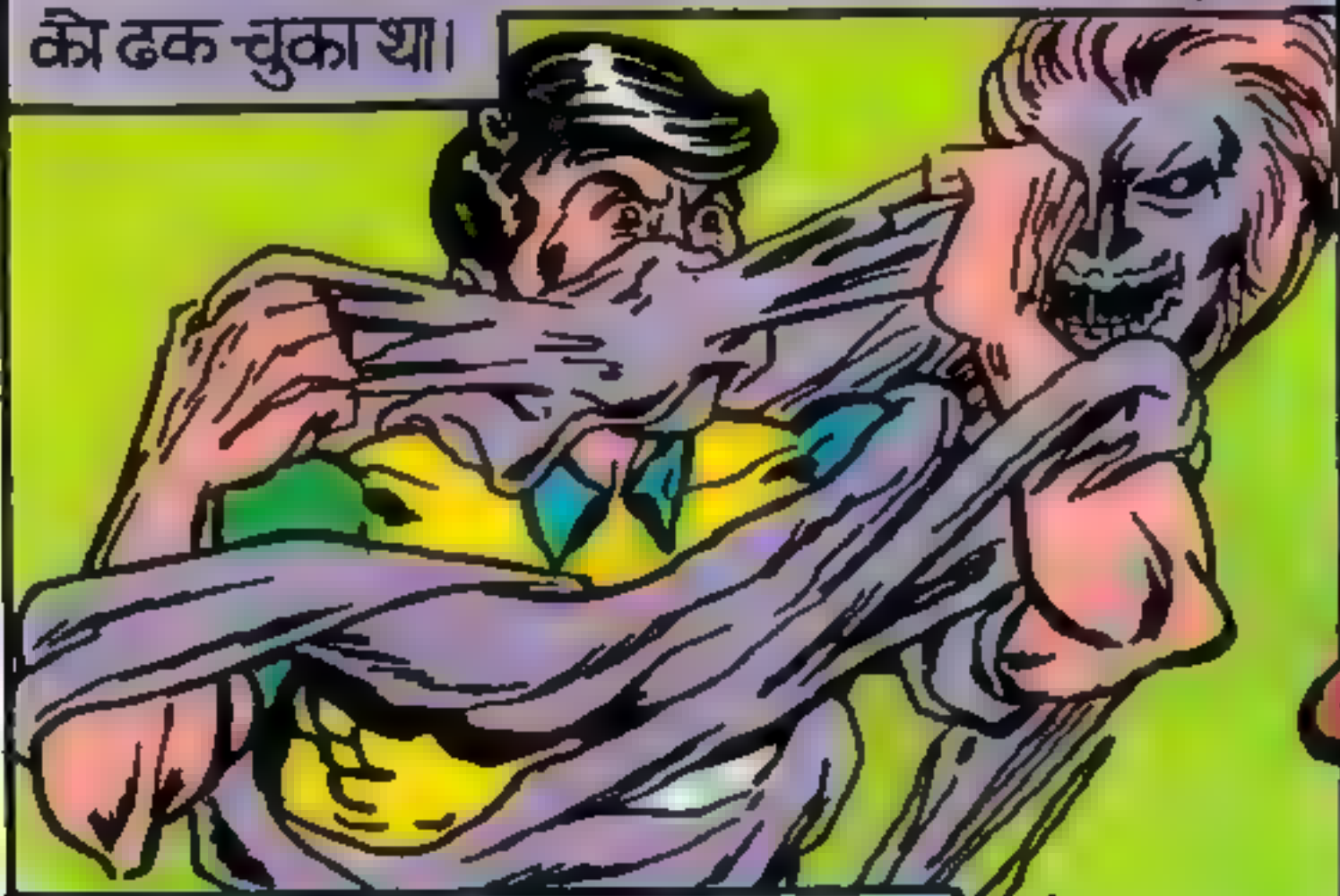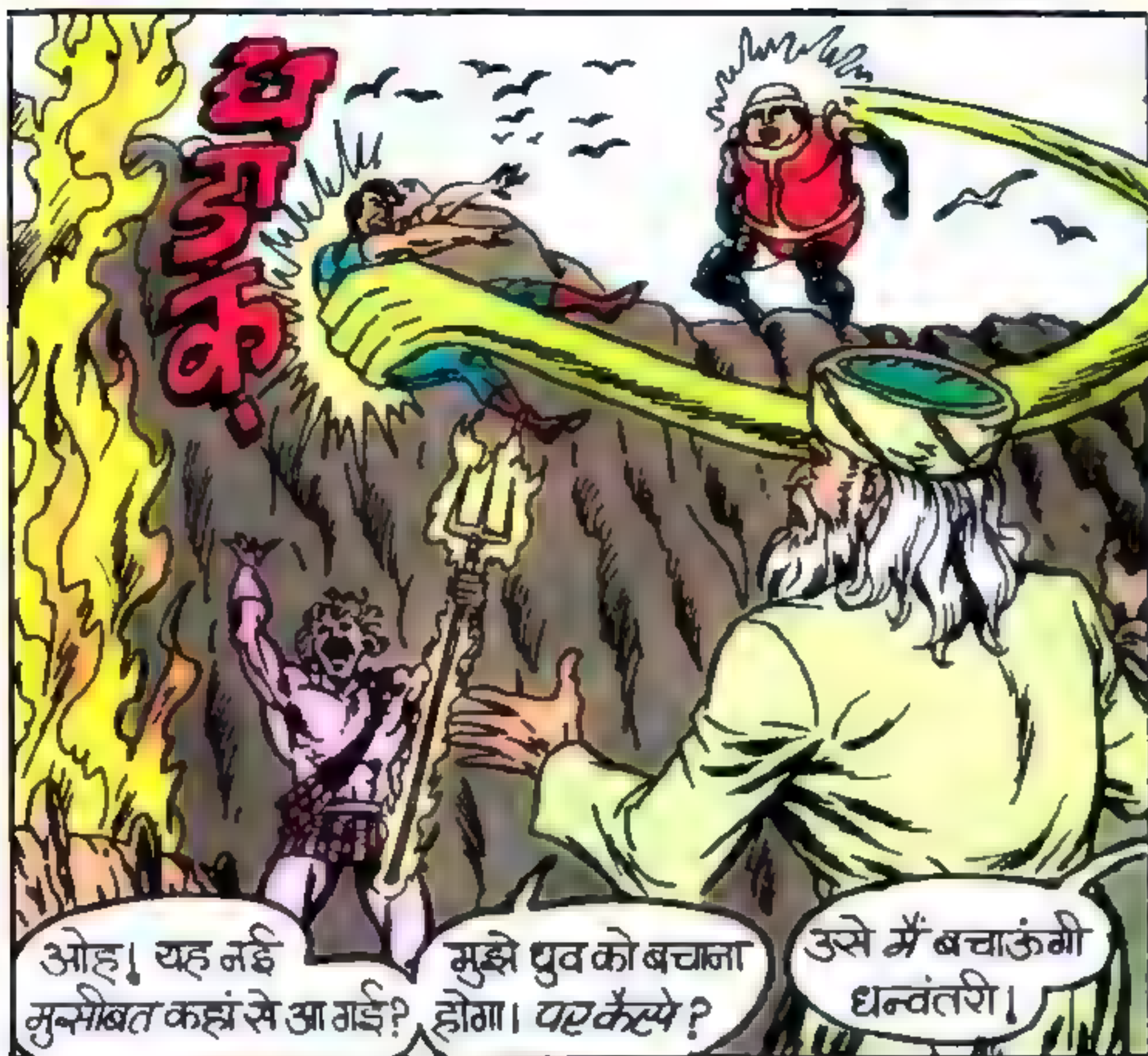
धड़ाक
ओह! यह नई मुसीबत कहां से आ गई?
मुझे ध्रुव को बचाना होगा। पर कैसे?
उसे मैं बचाऊंगी धन्वंतरी।
मेरे रहते यक्षों का बाल भी बांका नहीं होगा।
कुमारी तन्वी आप होश में आ गई?
हां! और अब मैं सामरी को आज्ञा देती हूं...
सामरी!
...कि वह कुमार ध्रुव को बचाए।
मस्तिष्क पर चंडकाल का अधिकार होने के बावजूद, सामरी, राजदंड का आदेश मानने को मजबूर था।
अब सामरी का मस्तिष्क उसका हाथ पीछे खींच रहा था।
और राजदंड का आदेश, उसका हाथ आगे।
एक कशमकश चल रही थी।
चंडकाल बौखला उठा-
यह क्या?
यह मूर्ख तो उस प्राणी पर वार करने जा रहा है, जो ध्रुव को मेरे रास्ते से हटा रहा है।
मैं ऐसा नहीं होने दूंगा!
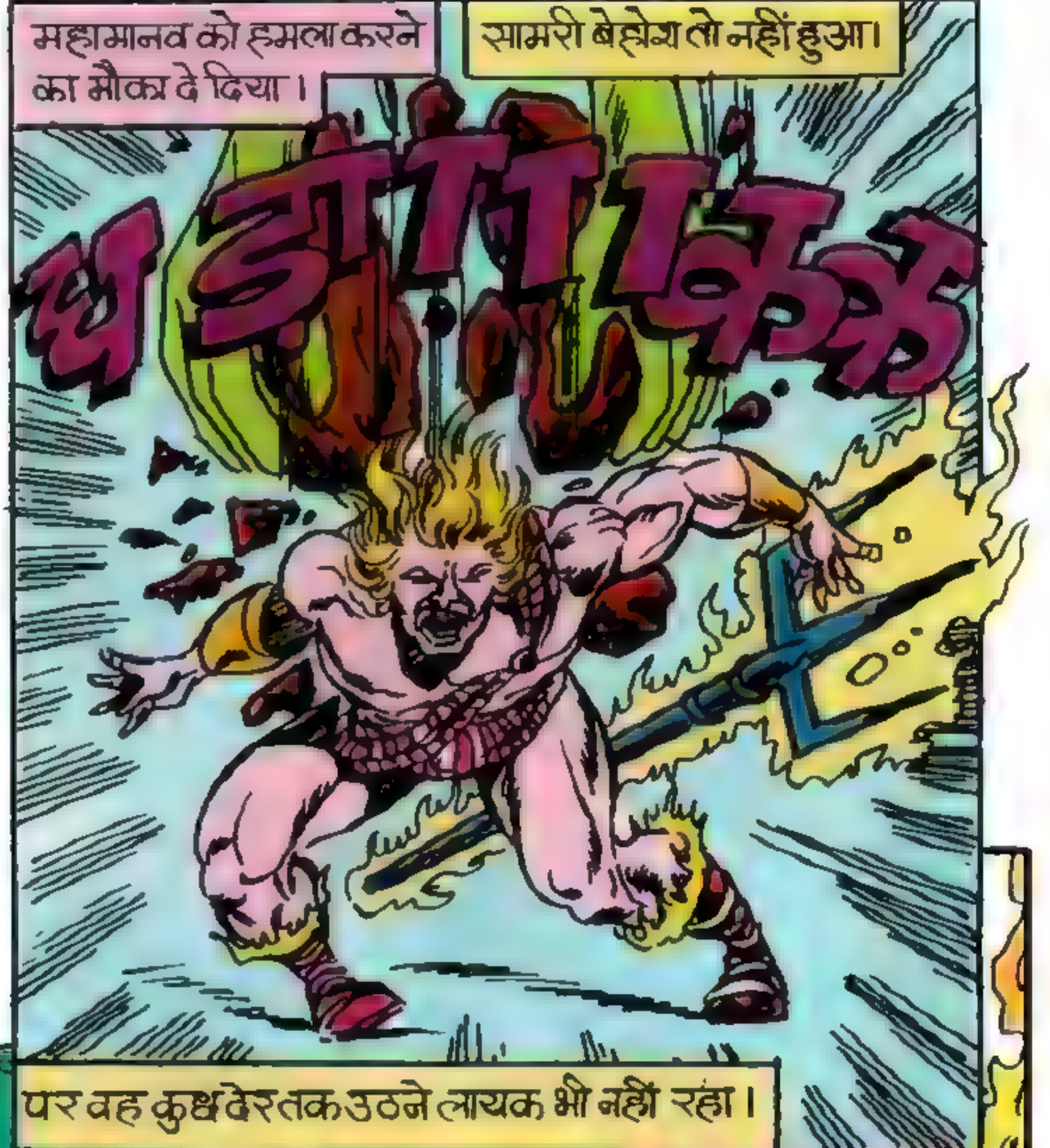
इस कशमकश ने
महामानव को हमला करने का मौका दे दिया।
सामरी बेहोश तो नहीं हुआ।
धड़ाम्म्म्क्क
पर वह कुछ देर तक उठने लायक भी नहीं रहा।
अब महामानव था-
-ध्रुव था-
-और थी ध्रुव की मौत।
बीच में कोई नहीं था।
बचने का रास्ता भी नहीं।
बचने की कोशिश ध्रुव को खुद ही करनी थी।
अगर ज्वालोक के घोड़े मेरी बात समझ सकते हैं
तो पक्षी भी जरूर समझेंगे।
और अगले ही पल-
ची ची ची
चू चू-चीच!
पक्षियों का एक विशाल झुंड नीचे उतर आया।
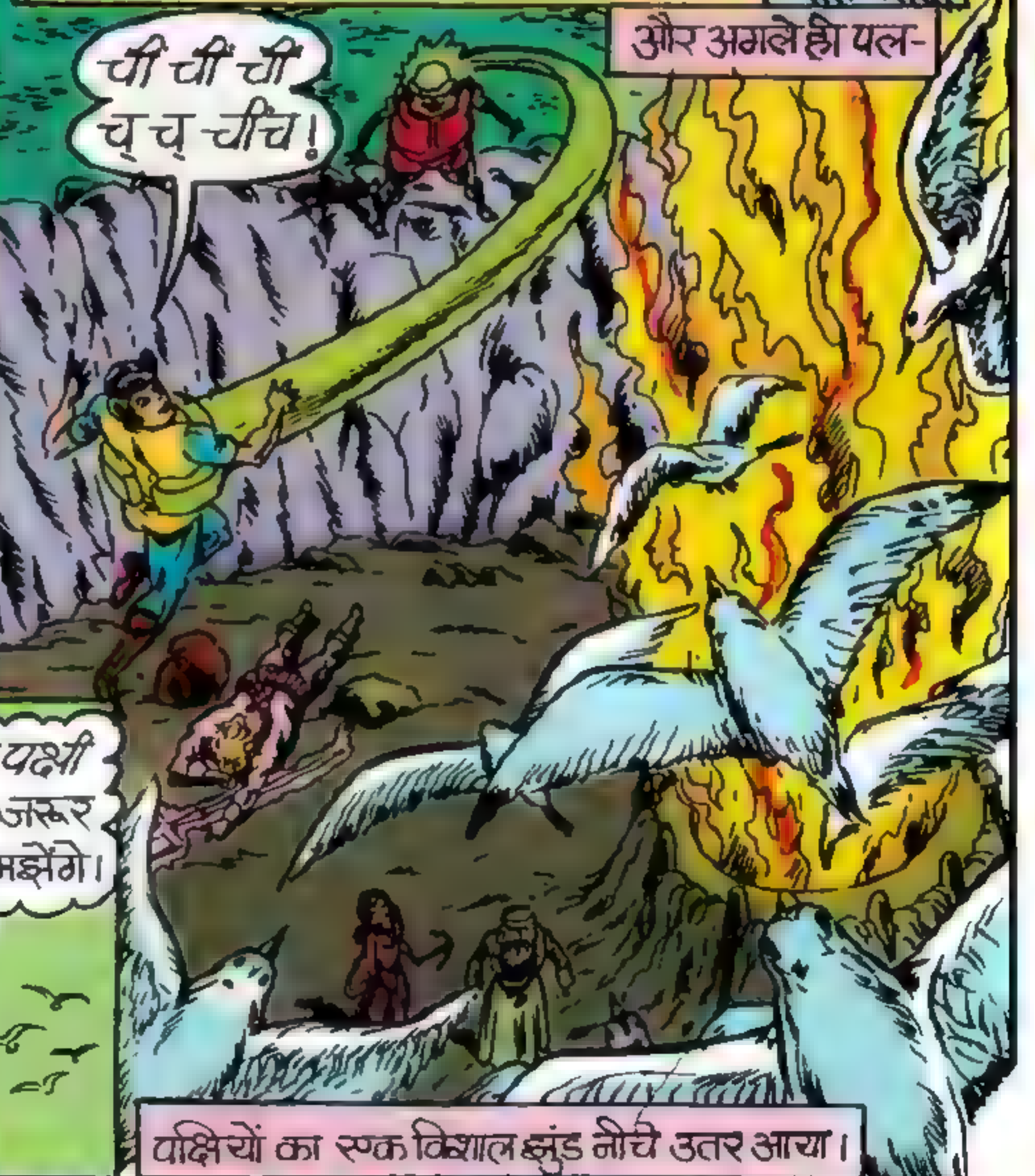
सैकड़ों पंख हवा में एक साथ फड़फड़ाए-

और सामरी की ज्वाला का रुख महामानव की तरफ मुड़ गया।

फड़ फड़ फड़ फड़

इससे पहले कि महामानव मानसिक कवच पहन पाता...

...उसको धधकती लपट का एक तेज भभका लगा।

हवूश

और उसका दिमाग शून्य होने लगा।

ध्रुव को थामने वाला मानसिक हाथ गायब हो गया।

वाह! अब बस एक बार और पंख फड़फड़ाए तो महामानव गया...!

नहीं!

यह मैं क्या कर रहा हूं? चंडकाल के मानसरूप पर सारे हथियार बेकार हैं।

पर मानस रूप को अगर कोई मार सकता है, तो मानसिक शक्तियां

और महामानव, मानसिक शक्तियों का स्वामी है।

चंडकाल, सामरी को उठाने की बेकार कोशिश कर रहा था।
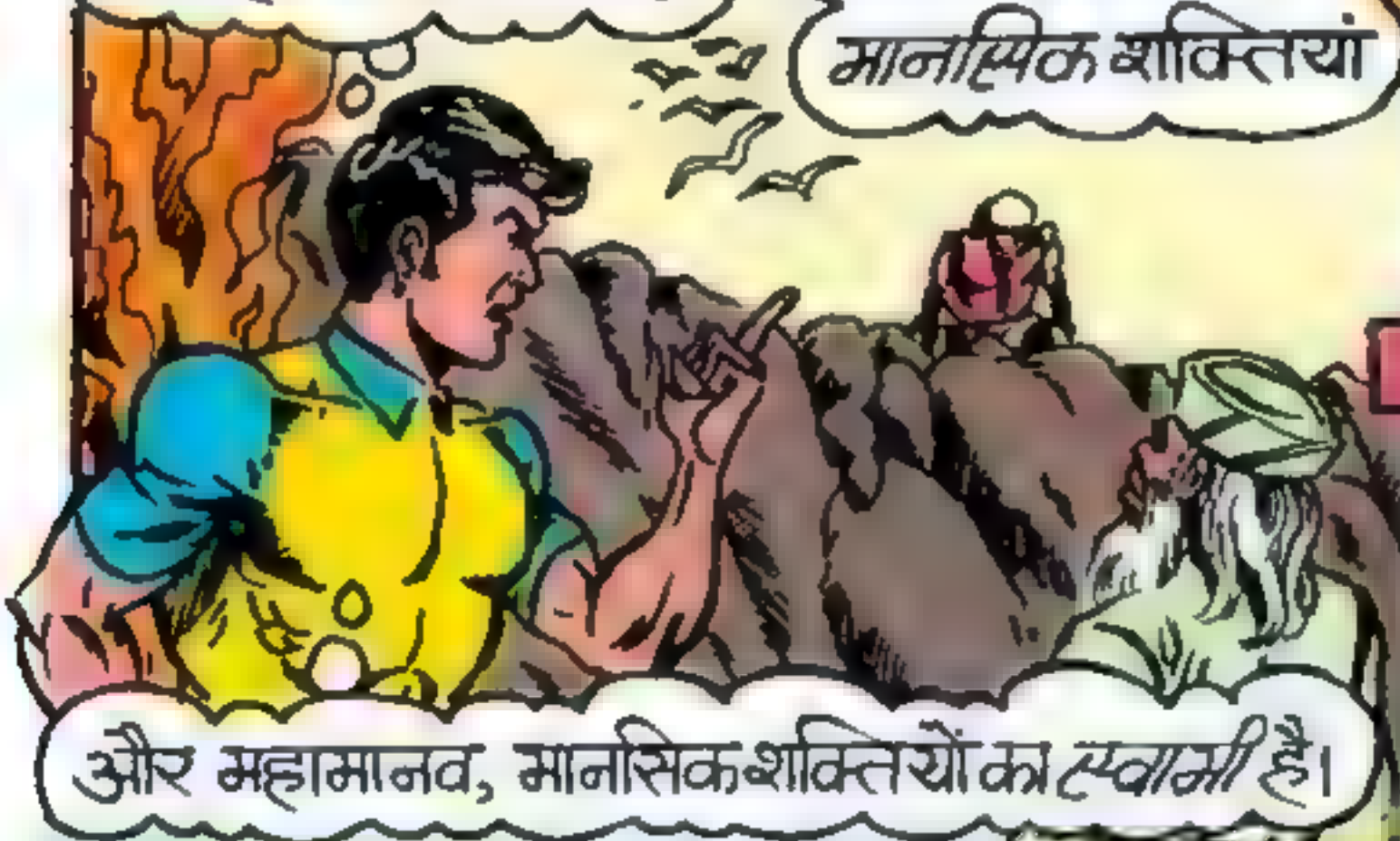
उठ, सांड! उठता क्यों नहीं है?
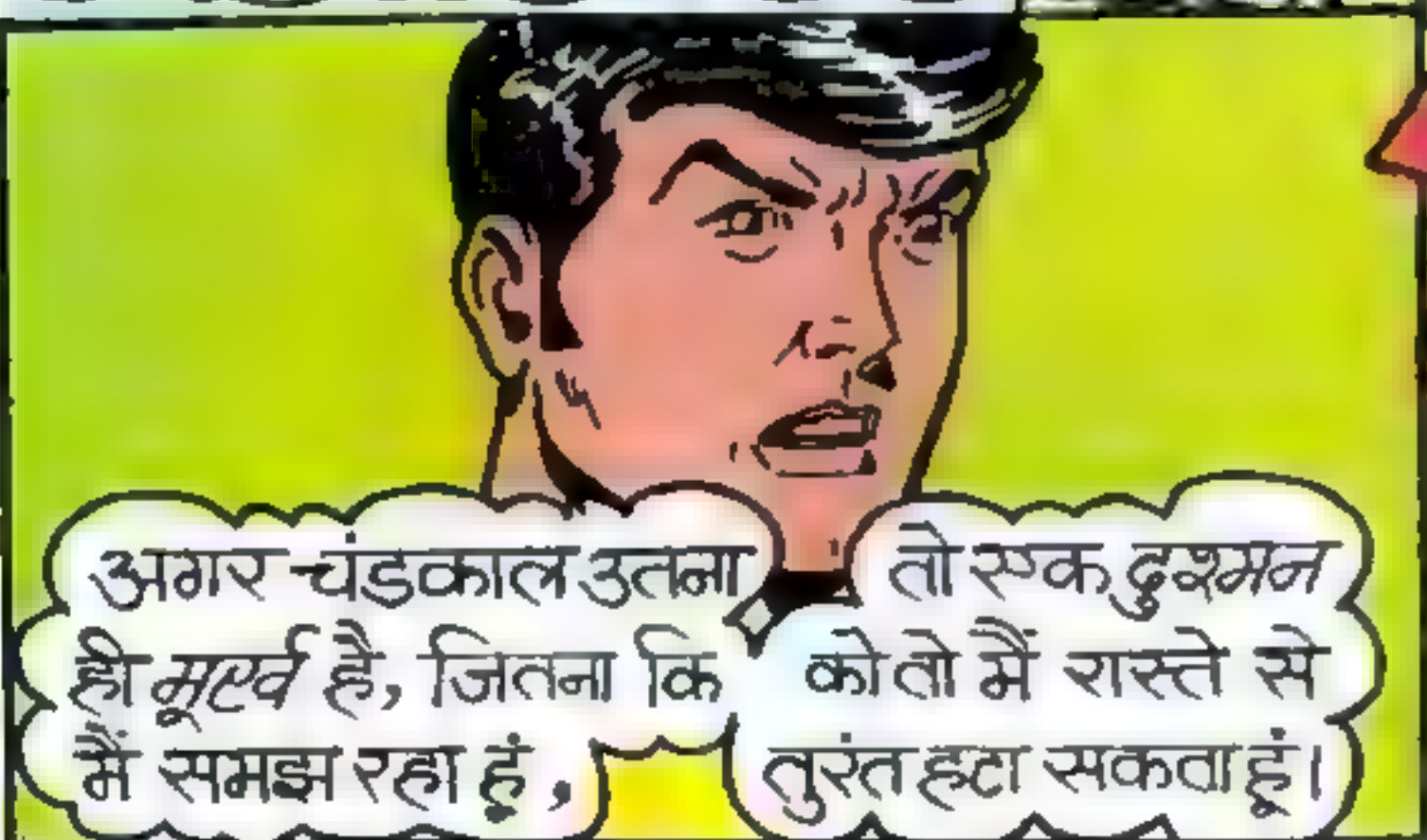
अगर चंडकाल उतना ही मूर्ख है, जितना कि मैं समझ रहा हूं,

तो एक दुश्मन को तो मैं रास्ते से तुरंत हटा सकता हूं।
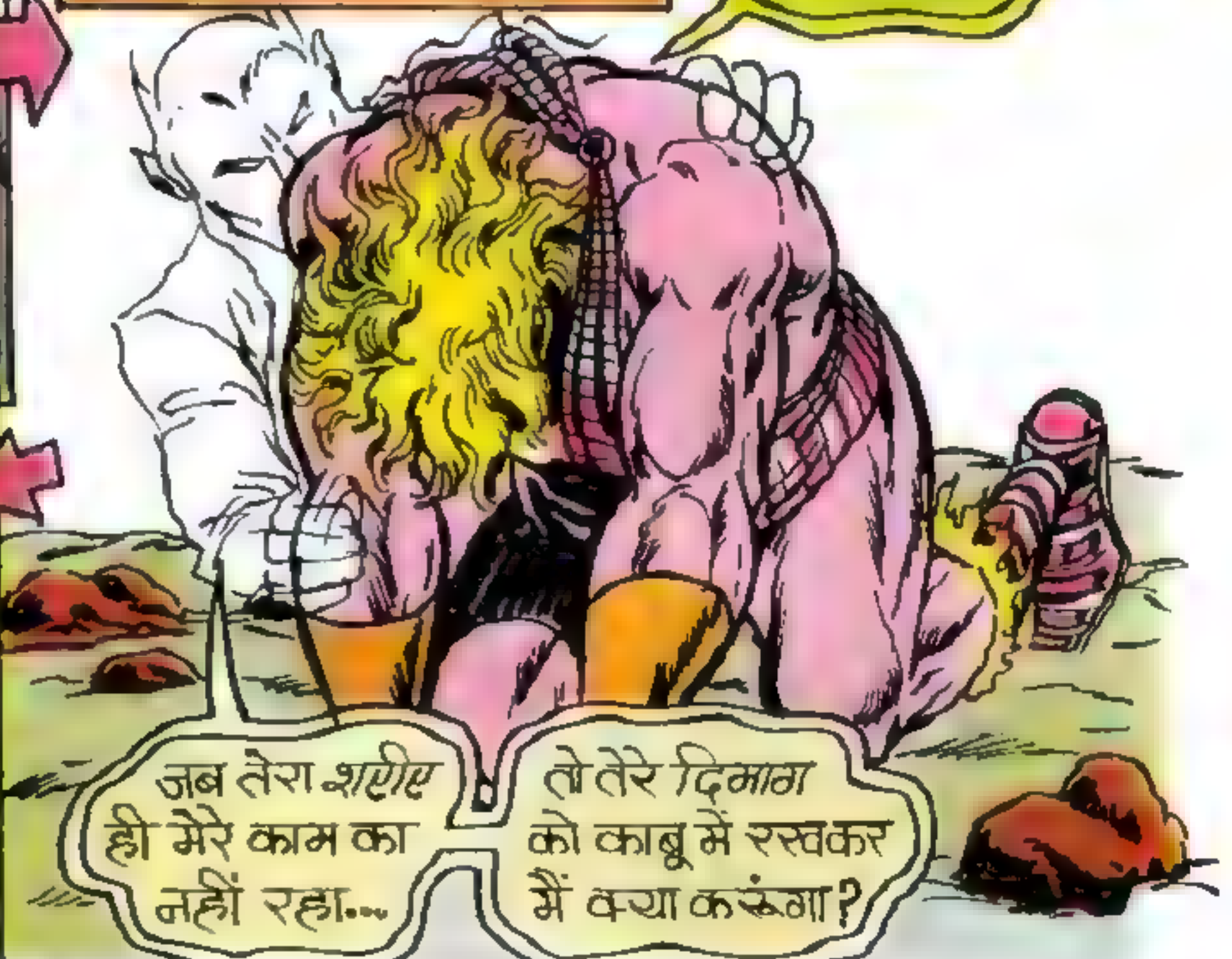
जब तेरा शरीर ही मेरे काम का नहीं रहा...

तो तेरे दिमाग को काबू में रखकर मैं क्या करूंगा?

उठजा, सामरी! तेरे बगैर तो मैं ज्वाला में नहा भी नहीं...
तभी चंडकाल के कानों में ध्रुव की आवाज गूंजी।
धन्वंतरी, सावधान!
सामरी घायल हो चुका है।
अब चंडकाल, महामानव के दिमाग पर कब्जा करने की कोशिश करेगा।
और उसने अगर ऐसा कर लिया तो उसे ज्वाला में नहाने की जरूरत नहीं रहेगी।
यह तो मैंने सोचा ही नहीं, ध्रुव!
बात तो सही है। महामानव के पास अद्भुत मानसिक शक्तियां हैं।
इसके दिमाग पर काबू पाने के बाद मैं बहुत शक्तिशाली हो जाऊंगा।
पर चंडकाल का मानस रूप यह नहीं जानता था, कि वह किससे उलझने जा रहा है।
महामानव का मस्तिष्क, भीषण मानसिक ऊर्जा पैदा करने वाले एक हाई पावर जेनरेटर की तरह था।
अभी यह असावधान है।
इस वक्त इसके दिमाग पर काबू पाना बहुत आसान होगा।
कड़ाक
जिसके हल्के स्पर्श का भी मतलब था।
धड़ड़ड़ड़
पूरे मानस रूप का कण-कण में होकर बिखर जाना।

चंडकाल खत्म हो गया था।

पर उसके हमले ने महामानव को गुस्से से पागल कर दिया था।

उसके मस्तिष्क से क्रुद्ध मानसिक किरणें निकलकर पूरे ज्वालोक पर छा गई।

और देखते ही देखते सभी बेसुध हो गए।

बचा था-तो सिर्फ ध्रुव-

जिसको, उसकी जबरदस्त इच्छा शक्ति ने बचा लिया था।

और सामरी - जिसकी रक्षा उसकी ज्वाला ने की थी।

?

अब महामानव का इंतजाम करना है। और यह काम सामरी अपनी ज्वाला से करेगा।

क्योंकि महामानव की एक ही कमजोरी है गर्मी।

पर सामरी को इस लड़ाई में लाया कैसे जाए?

सामरी भौंचक्का था। क्योंकि उसको यही याद था, कि महामानव से हुई लड़ाई के बाद अभी-अभी होश में आया है।

अरे! यह दूसरा बाहरी आदमी कहां से आ गया?
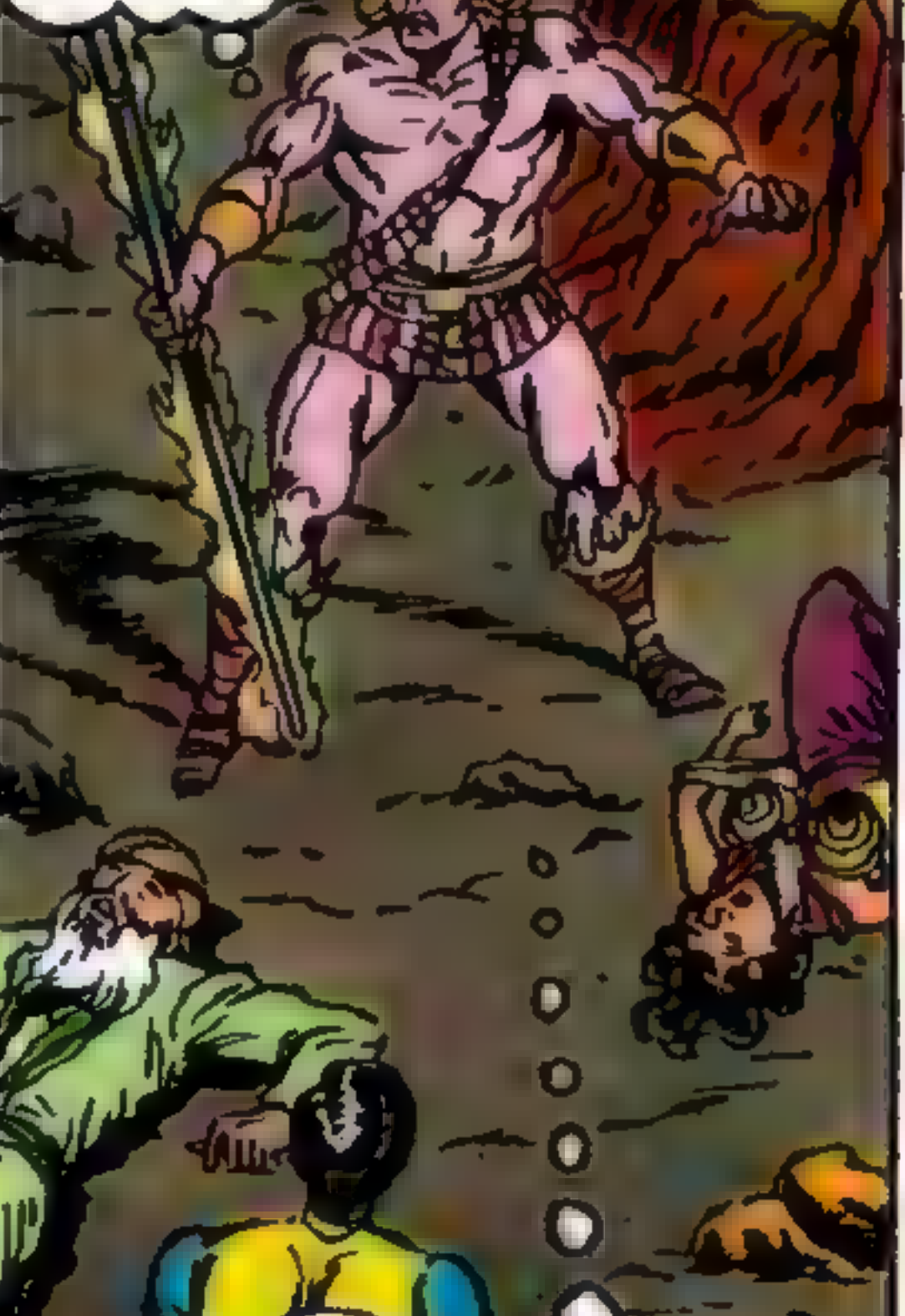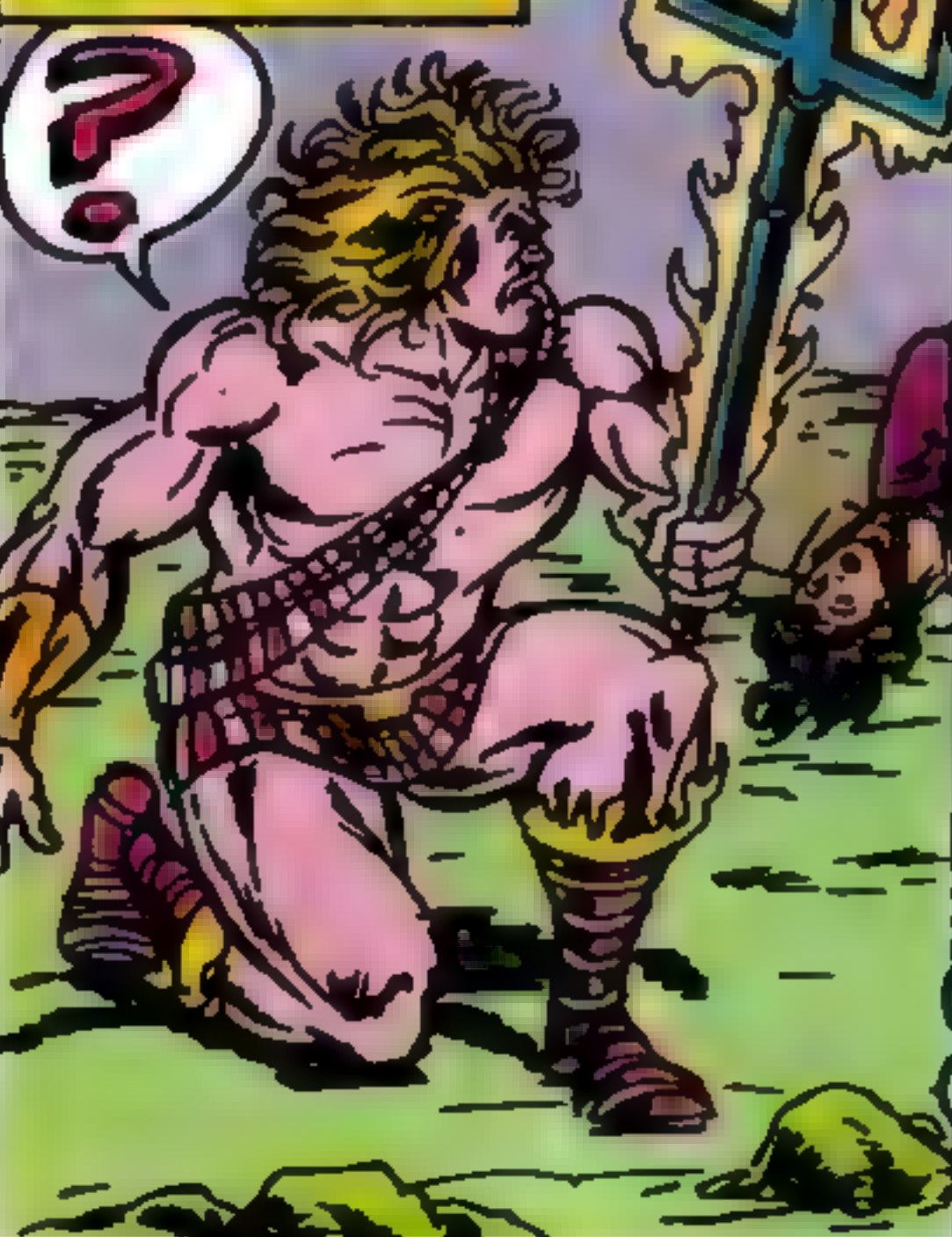
धन्वंतरी को किसने बेहोश किया?

और यह लड़की कौन है?
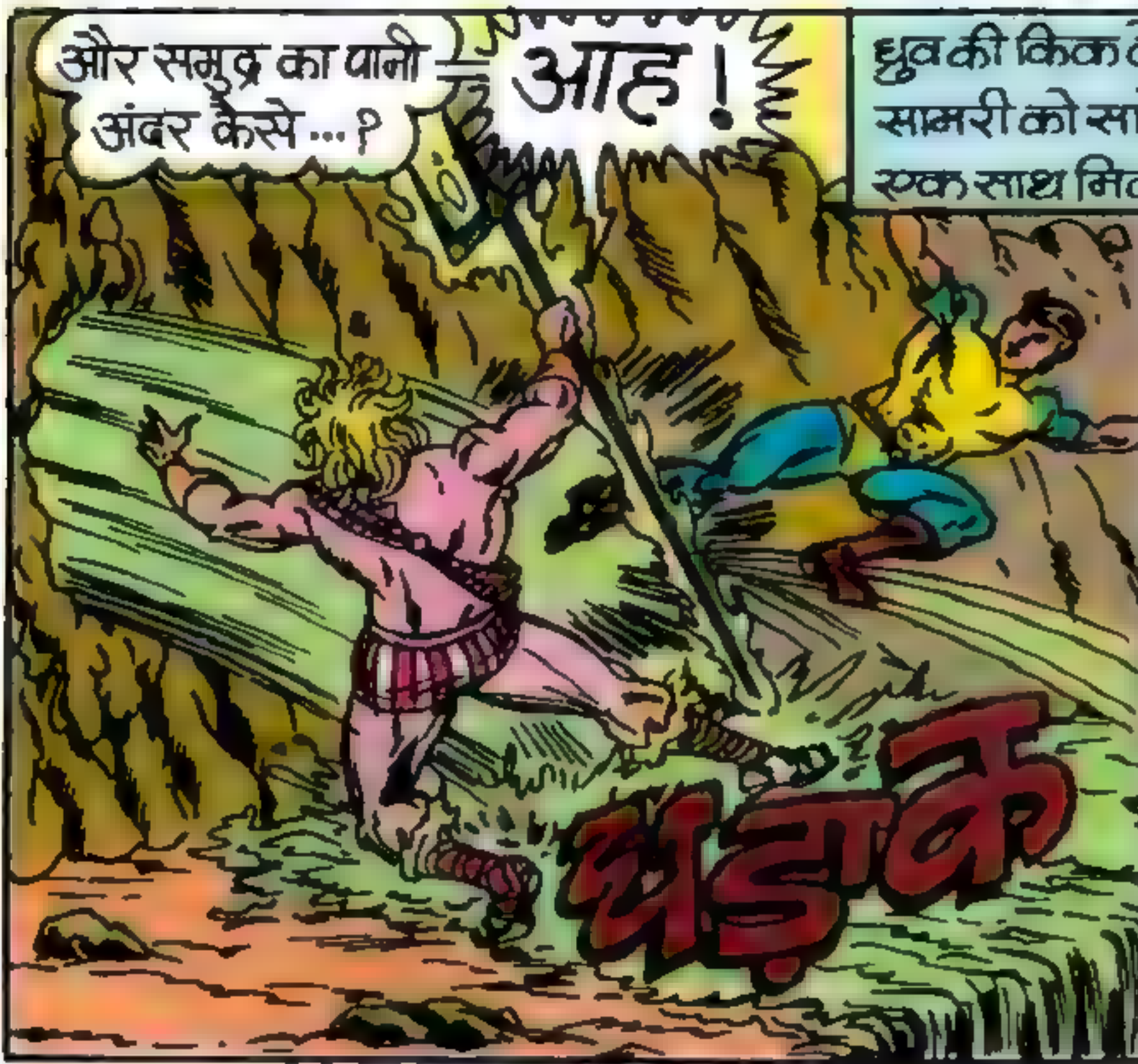
और समुद्र का पानी अंदर कैसे...?
आह!
ध्रुव की किक के साथ सामरी को सारे जवाब एक साथ मिल गये थे।
धड़ाक
जो बिना बात उस पर हमला करे...
...वही उसका और ज्वालोक का दुश्मन हो सकता था।
और ज्वालोक के दुश्मन की सजा थी- मौत।
?
ध्रुव की इस हरकत का मतलब महामानव भी नहीं समझ पा रहा था।
आग के कई चक्र ध्रुव की तरफ लपके -
...एक भी चक्र के हल्के से स्पर्श का मतलब था...
...पूरे जिस्म का कोयला बन जाना।
सामरी, अपने दुश्मन की फुर्ती को भांप गया था।
और इस फुर्ती का काट उसके पास था।
एक ज्वाला-जाल ध्रुव की तरफ लपका।
अपनी जान पर खेल रहा था ध्रुव।
पर क्यों?
यह जाल मेरे पास आते-आते और फैलता जा रहा है।
भागने का रास्ता नहीं है।
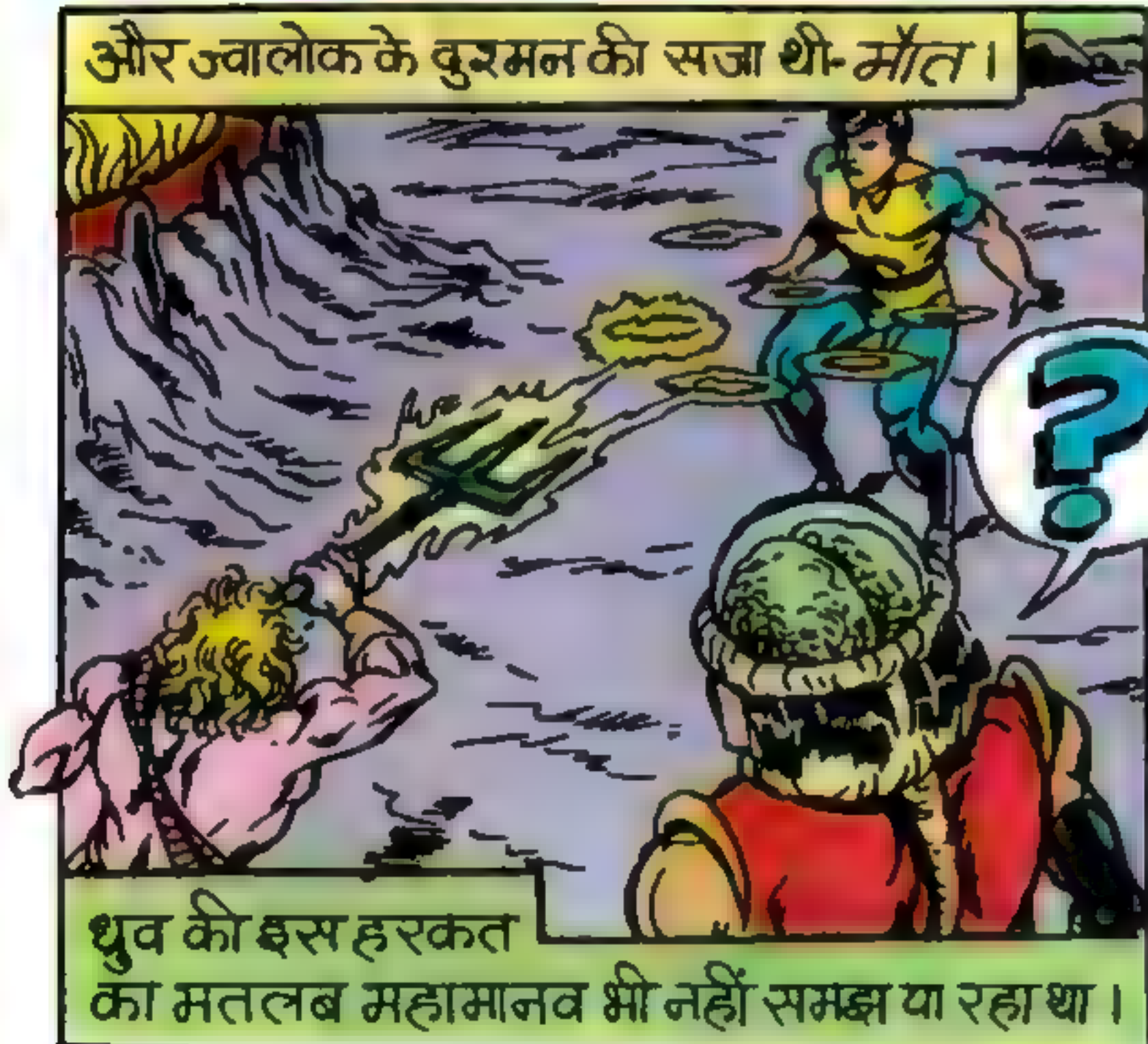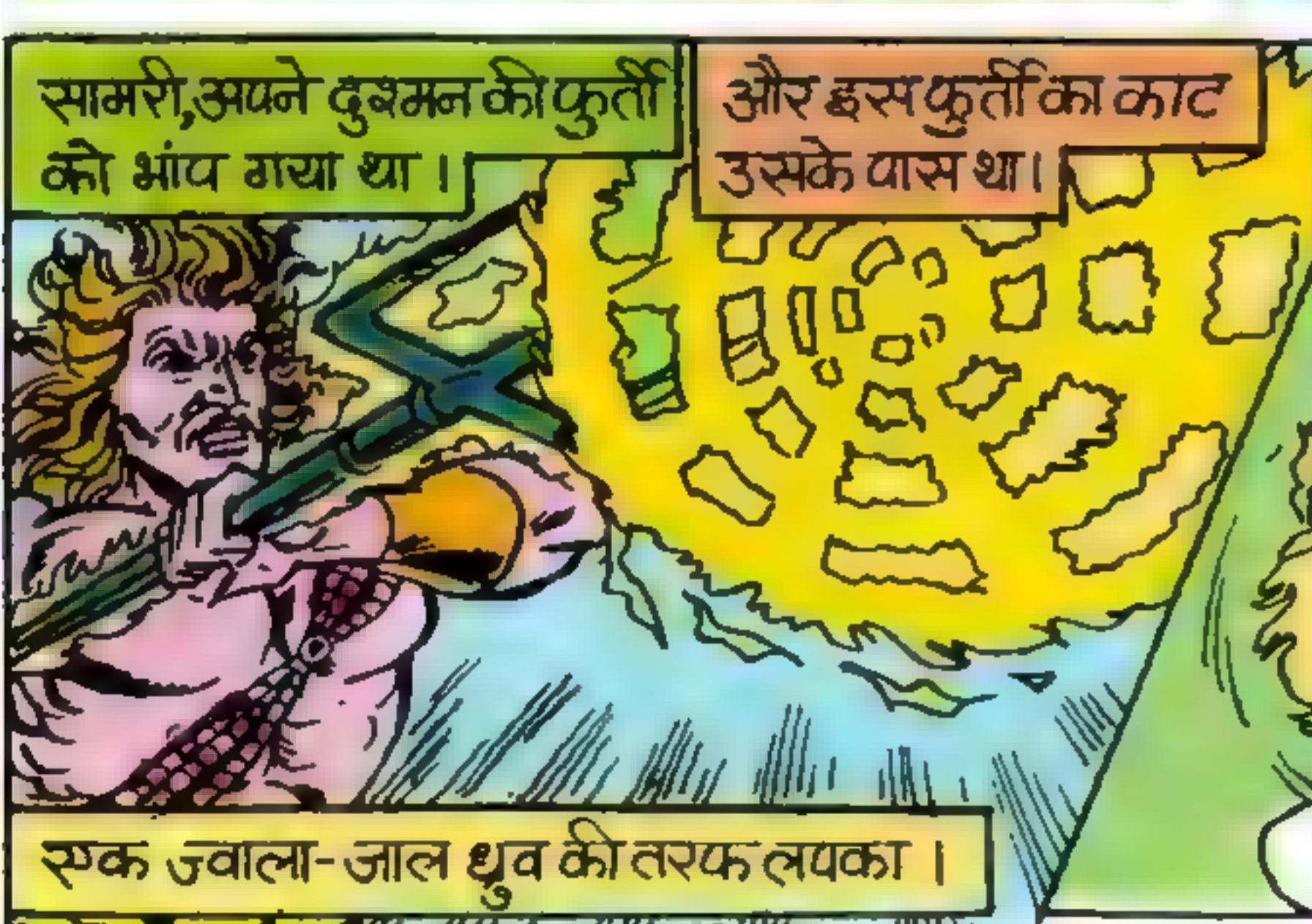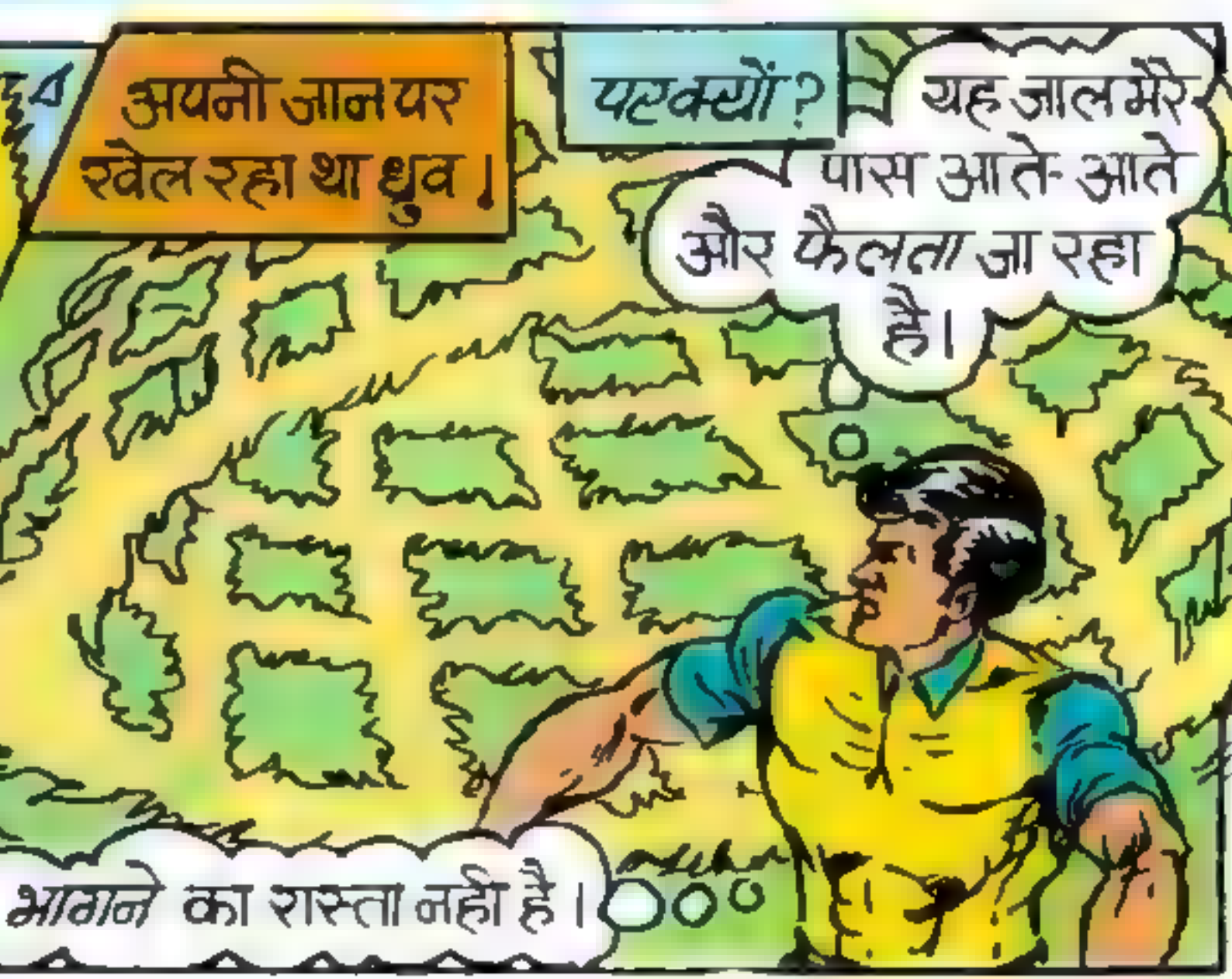
पर जाल के बड़े होने के साथ-साथ इसके छेद भी बड़े होते जा रहे हैं।
मुझे एकदम सही मौके का इंतजार करना होगा।
अब छेद एक छोटी खिड़की जितने बड़े हैं।
एक सधी छलांग से, मैं इसके पार...
आऽऽह!
छलांग तो सधी हुई थी।
पर ज्वाला की आंच ही बदन झुलसा देने के लिए काफी थी।
सामरी ने, ध्रुव को अधमरा कर दिया था।
और अब बाकी आधी बची जान भी उसे चाहिए थी।
ध्रुव में इतनी ताकत भी नहीं बची थी कि वह अपनी तरफ बढ़ रही मौत से बचकर भाग सके।
पर ध्रुव तक पहुंच पाने से पहले ही, लपट एक बाधा से जा टकराई।
छपाक
और सामरी का बदन हवा में उड़ गया।
धड़ाक
महामानव ध्रुव को सिर्फ अपने हाथों से ही मारना चाहता था।

मुझे मालूम था कि अगर सामरी मुझ पर *जानलेवा* हमला करेगा, तो महामानव उससे जरूर जा टकराएगा।

ठीक वैसा ही जैसा उसने कंकाल के साथ किया था।

क्योंकि मुझे खत्म करने का श्रेय वह खुद हासिल करना चाहता है।

ओह! तो ये दोनों *मिलकर* मुझ पर हमला कर रहे हैं।

मैं इनको *जिंदा* नहीं छोड़ूंगा।

सामरी ने एक भीषण वार किया।

पर महामानव के पास सामरी के वारों का काट मौजूद था।

सामरी के दांत भिंच गए।

उसका क्रोध कई गुना बढ़ गया।

उसने ज्वाला की गर्मी को उच्चतम ताप पर पहुंचा दिया।

और ज्वाला ने इस बार मानसिक बाधा को भी काट डाला।

ईस्स्स्

महामानव सतर्क हो गया।

उसने भी अपनी मानसिक शक्ति को बढ़ाया।
धड़ाक
सामरी का त्रिशूल दूर जा गिरा।
और सामरी की गर्दन, धड़ से अलग होते-होते बची।
महामानव सामरी पर भारी पड़ रहा है।
मुझे उसकी मदद करनी होगी।
सामरी के अंग-अंग से ज्वाला लपकती थी।
उसने अपने हाथ को वार करने के लिए ऊपर उठाया।
मगर एक सधे हुए निशाने ने-
सामरी का निशाना बिगाड़ दिया।
हिस्सस्स
ज्वाला महामानव के बजाए बहते पानी से जा टकराई।
और महामानव भाप के बादलों में घिर गया।

महामानव का पूरा ध्यान सामरी पर था।
उसको किसी दूसरी तरफ से खतरे के आने की उम्मीद नहीं थी।
और सामरी के दूसरे वार ने...
...रही सही कसर पूरी कर दी।
वह लड़खड़ाया -
कड़ाड़ाक
गुड! अब महामानव कुछ देर तक तो बेहोश रहेगा ही। तब तक हम लोग उसे बंदी बनाने का कोई न कोई तरीका ढूंढ़ ही लेंगे।
पर तभी-
इसको भी खत्म कर दो, सामरी।
मैंने अपनी आंखों से देखा है।
इसने तुम पर पत्थर से हमला किया था।
सामरी का दुश्मन पूरे ज्वालोक का दुश्मन है।
नताशा, पागल हो गई हो क्या?
मेरा नाम राजकुमारी तन्वी है, लड़के!
और पागल तो तू हो गया था।
जो तूने सामरी पर हमला करके अपनी मौत को दावत दी।
कड़प

ज्वाला की लपटें, ध्रुव पर बेतहाशा बरसने लगीं।

चट्टानों में कई नई सुरंगें खुल गईं।
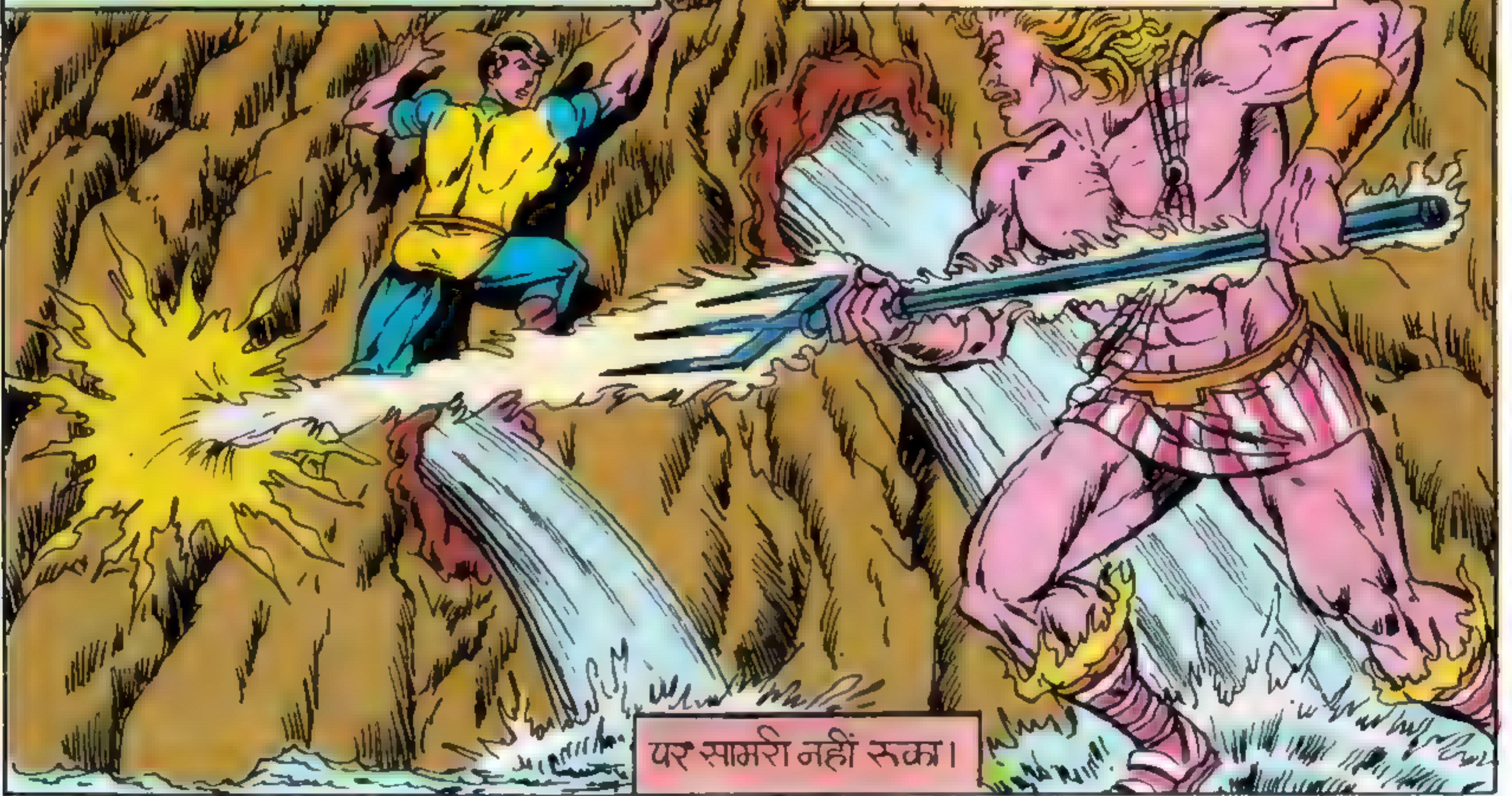
पर सामरी नहीं रुका।

अब और बचा नहीं जा सकता।

सामरी की सारी शक्तियों का केंद्र यह ज्वाला है। पर यह ज्वाला है क्या बला?

आग कहीं पर अपने आप से नहीं जल सकती। उसके लिए ज्वलनशील गैसों की जरूरत होती है।

मेरे ख्याल से इस ज्वालामुखी के गर्भ से कई रहस्यमय गैसों का मिश्रण निकलता है।

और इन रहस्यमय गैसों के एक साथ जलने से ही यह अनोखी ऊर्जा निकलती है।
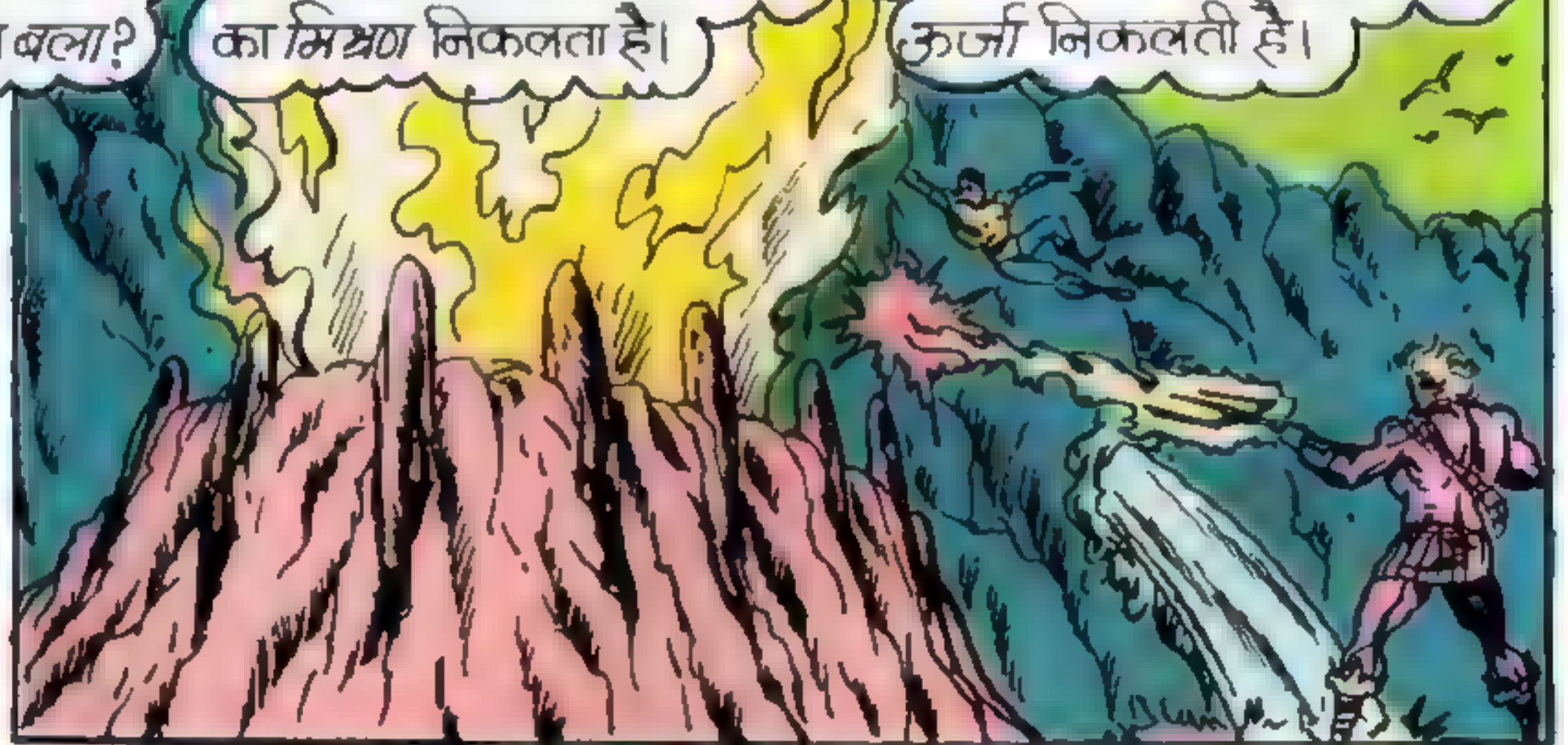
और वह गैस समुद्र के पानी में घुलती है।

इसलिए मुझे पानी में सांस लेने में तकलीफ हो रही थी।
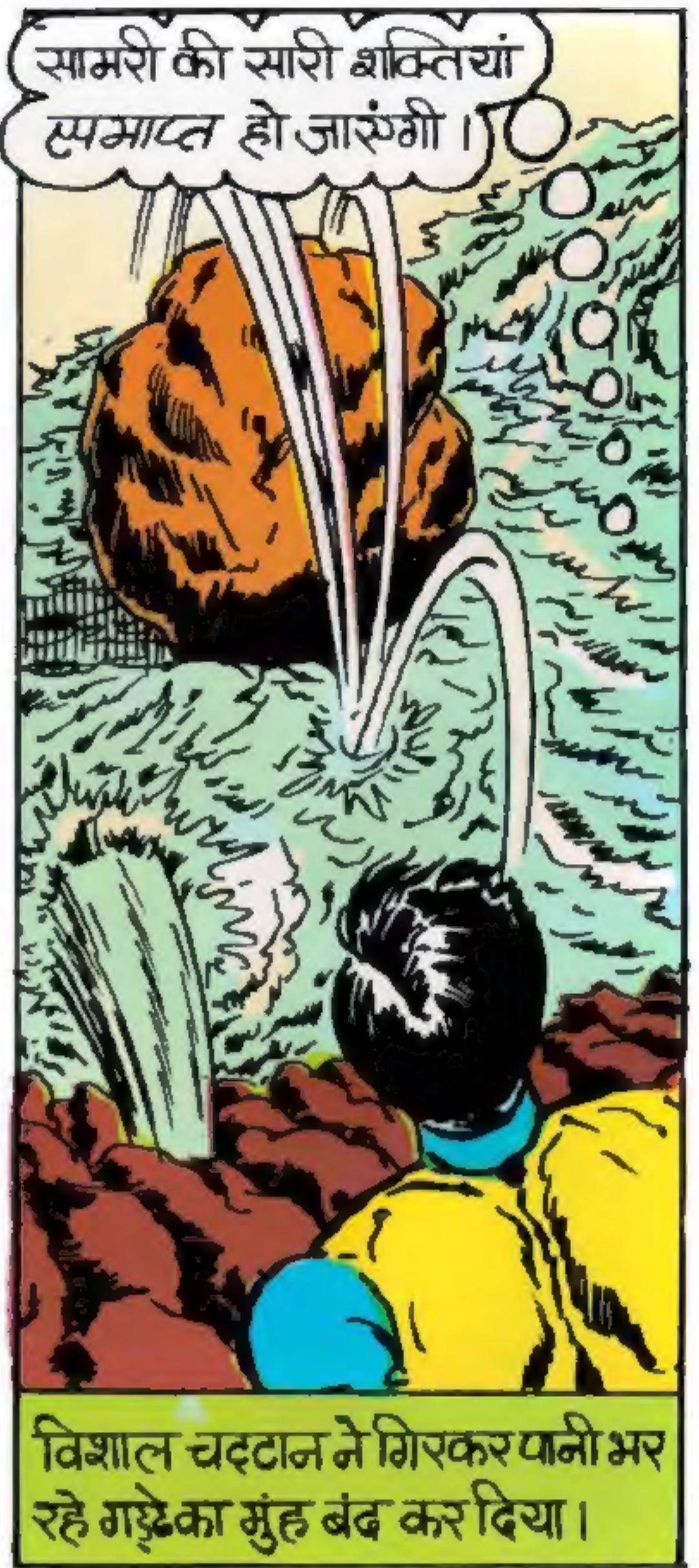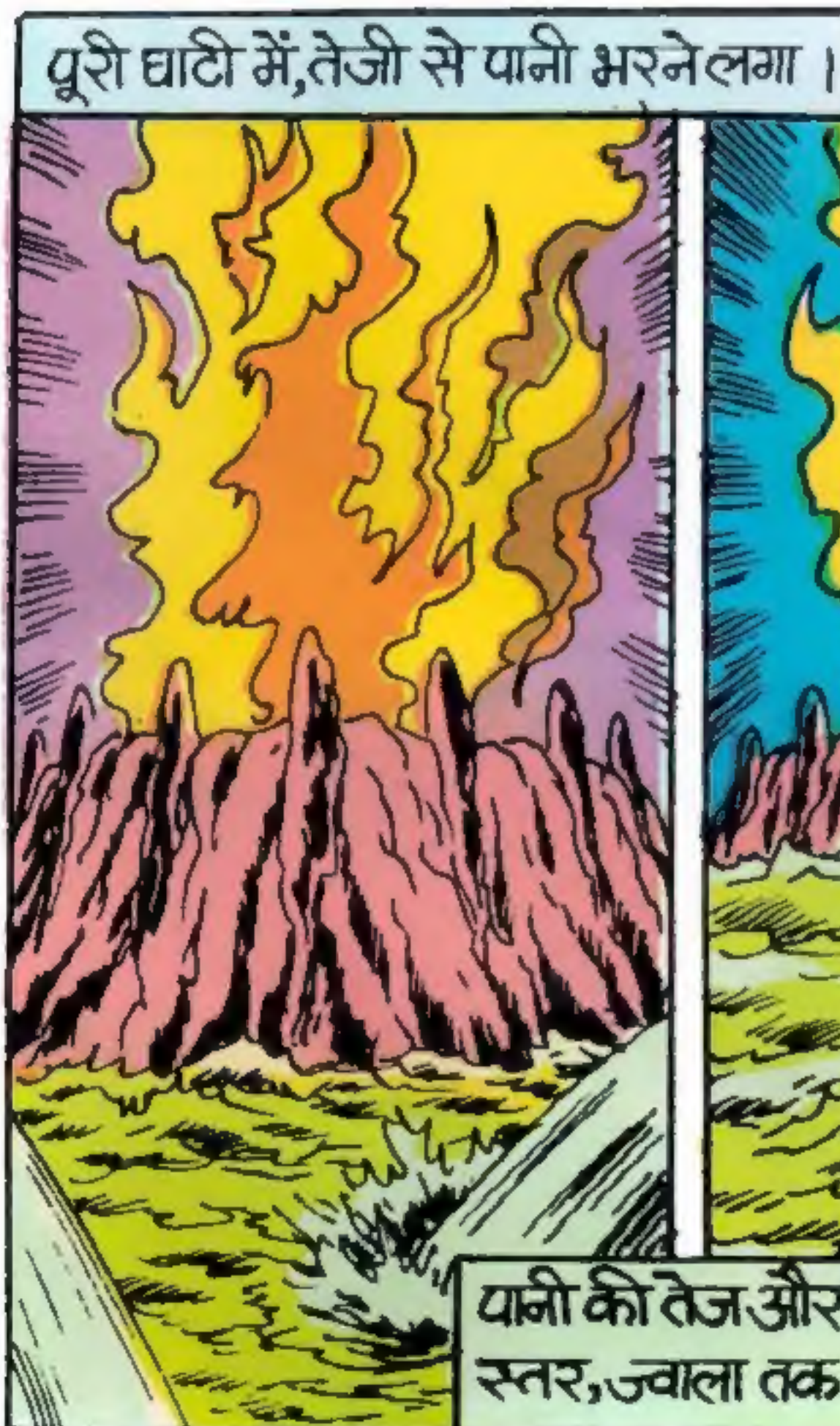
पूरी घाटी में, तेजी से पानी भरने लगा।
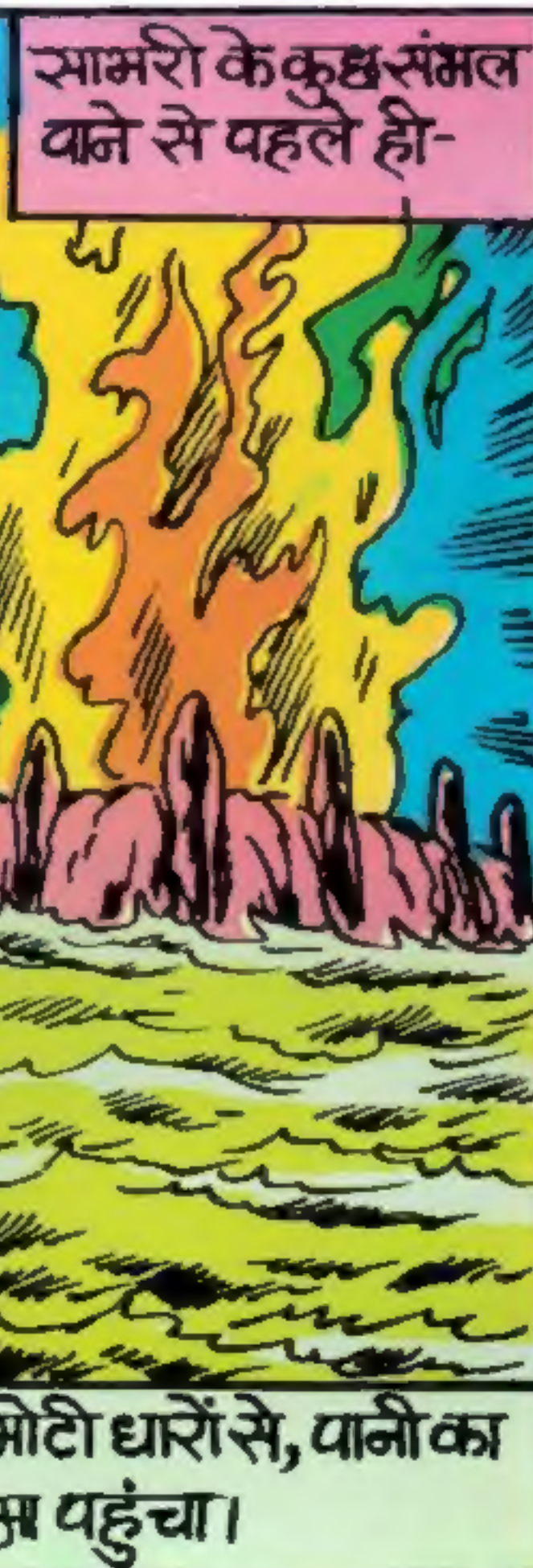
सामरी के कुछ संभल पाने से पहले ही-

पानी की तेज और मोटी धारों से, पानी का स्तर, ज्वाला तक आ पहुंचा।

ज्वाला बुझने से पहले एकबार कसकर चमकी।

हिस्स

और जब यह चमक खत्म हुई।

?

☆ धनंजय के विषय में जानने के लिये पढ़िये 'मैड मास्टर रोबो'

और घाटी में भरा पानी बाहर निकल गया।
गड़ गड़ गड़ गरड़ गड़ड़
फिर धनंजय की ताप किरणें गैस पर ऊष्मा बरसाने लगीं।
और लगभग पांच मिनट तक तेज ऊष्मा किरणें पड़ने के बाद…
…ज्वाला फिर से धधक उठी।
धन्यवाद, श्रीमान।
इन छेदों को हम खुद बंद कर लेंगे। और महामानव का भी इंतजाम कर लेंगे।
पर आपकी सहायता के लिए आपका फिर से धन्यवाद।
यह क्या हो रहा है, ध्रुव?
तुम्हारे न्यूज पेपर के लिए रिपोर्ट तैयार हो रही है, कुमारी तन्वी!
भांग खाकर आए हो क्या?
मेरा नाम तक भूल गए।
ज्वाला के बुझने से, इन पर से हमारा प्रभाव जाता रहा है, ध्रुव।

वैसे भी, हमें इनको यहां रोकने का कोई अधिकार नहीं था।
हम अपनी भूल मानते हैं।
और मैं भी अपनी हार मानता हूं, ध्रुव!
सामरी यह कभी नहीं भूलेगा कि उसको आज तक सिर्फ एक आदमी ने मात दी है।
तुमने!
साथ ही साथ तुमने ज्वालोक की रक्षा भी की है।
कभी सामरी भी तुम्हारी रक्षा करने आएगा।
यह मेरा वादा है।
पर हम वापस कैसे जाएंगे?
हैलीकॉप्टर तो टूट गया है।
उसके लिए तुम चिंता मत करो।
यह द्वार तुमको पल भर में कहीं भी पहुंचा सकता है।
मगर अब मैं तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाऊंगी ध्रुव?
पर क्यों?
जहां जाते हो, मुसीबत साथ लेकर जाते हो।
हां, तुमको तो अक्सर साथ लेकर जाता हूं।
क्या कहा? मैं मुसीबत हूं?
नहीं! मेरा मतलब...
इसके आगे हम कुछ सुन नहीं सके–
–क्योंकि द्वार बंद हो चुका था।
समाप्त